VISHVA-JYOTI R. N. NO. 1/ 57 ISSN 0505-7523
REGD. NO. PB-HSP-01
CURRENCY PERIOD: (1.1.2018 TO 31.12.2020)

६८, ३-४

जून-जुलाई २०१९

विश्वज्योति

श्री गुरु नानक जी का ५५०वाँ प्रकाशपर्व

दूसरा भाग

विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान

साधु आश्रम, होश्यारपुर

एक प्रति का मूल्य : २५ रुपये

संस्थापक–सम्पादक :

स्व. पद्मभूषण आचार्य (डॉ.) विश्वबन्धु

सम्पादकः

प्रो. इन्द्रदत्त उनियाल
(सञ्चालक)

सह–सम्पादक :

डॉ. देवराज शर्मा

परामर्शक–मण्डल :

डॉ. दर्शनसिंह निर्वैर
होश्यारपुर

डॉ. (श्रीमती) कमल आनन्द
चण्डीगढ़

डॉ. जगदीशप्रसाद सेमवाल
होश्यारपुर

डॉ. (सुश्री) रेणू कपिला
पटियाला

शुल्क की दरें

आजीवन (भारत में)	:	१२०० रु.	आजीवन (विदेश में)	:	३०० डालर
वार्षिक (भारत में)	:	१०० रु.	वार्षिक (विदेश में)	:	३० डालर
सामान्य अङ्क (भारत में)	:	१० रु.	सामान्य अङ्क (विदेश में)	:	३ डालर
विशेषाङ्क (एक भाग भारत में)	:	२५ रु.	विशेषाङ्क (एक भाग विदेश में)	:	६ डालर

विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान, साधु आश्रम,
होश्यारपुर–146 021 (पंजाब, भारत)

दूरभाष : कार्यालय : 01882–223581, 223582, 223606
सञ्चालक (निवास) : 01882–244750, प्रैस : 231353

E-mail : vvr_institute@yahoo.co.in
Website : www.vvrinstitute.com

विषय-सूची

लेखक	विषय	विधा	पृष्ठांक
डॉ. नरेश कुमार	युगद्रष्टा श्रीगुरु नानक देव	कविता	४
डॉ. निर्मल कौशिक (प्रिंसिपल)	जन्मसाखी पंजाबी 40 के महानायक श्रीगुरुनानक देव जी	लेख	५
डॉ. विद्यानन्द 'ब्रह्मचारी'	भारतीय संस्कृति के लोक-व्याख्याता ''गुरु नानक देव''	लेख	१०
डॉ. धर्मपाल साहिल	गुरु नानकवाणी में ओंकार बनाम ओम् का महत्त्व	लेख	१३
डा. डी. एस. कंग	श्री गुरु नानकदेव जी की शिक्षाएं	लेख	१६
डॉ. आदित्य आंगिरस	गुरु नानक काव्य की मानवीयता	लेख	१९
श्रीमती प्रवीण शर्मा	श्री गुरु नानक देव जी 'हुकुम रजाई चलणा नानक लिखिआ नाल'	लेख	२४
प्रो. लवलीन कौर	श्री गुरु नानक देव जी की वाणी में लोकोपदेश की भावना	लेख	२७
डॉ. सविता सचदेवा	श्रीगुरु नानक देव जी की वाणी में मोक्ष की अवधारणा	लेख	३०
प्रो. हरप्रीत कौर	श्री गुरु नानक देव जी-एक सर्वश्रेष्ठ गुरु	लेख	३२
डॉ. परबजीत कौर	श्री गुरु नानक वाणी: सदाचार का संकल्प	लेख	३७
डा. आशीष कुमार	गुरुनानकदेवचरितम् महाकाव्य में दार्शनिक विचार	लेख	४२
प्रो. तेजा सिंह 'राही'	श्री गुरु नानकदेव जी और मानव-अधिकार	लेख	४८
श्री देवनारायण भारद्वाज	आर्यसमाज एवं सिखसमाज ने मिलकर यज्ञ रचाया		५२
अनिल कुमार	पुस्तक-समीक्षा		५३
	संस्थान-समाचार		५४
	विविध-समाचार		५६
	पुण्य-पृष्ठ		५८

विश्वज्योति

इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागात् ॥ (ऋ. १,११३,१)

वर्ष ६८ } होश्यारपुर, ज्येष्ठ-आषाढ़ २०७६; जून-जुलाई २०१९ { संख्या ३-४

भद्रं वै वरं वृणते,
भद्रं युञ्जन्ति दक्षिणम्।
भद्रं वैवस्वते चक्षुर्,
बहुत्रा जीवतो मनः।।

(ऋग्वेद, १०, १६४,२)

लोग (भद्रं) भले (व्यक्ति) से (ही) (वरं) कामना (वृणते) पूरी करना चाहते हैं। लोग (हल के लिए) (दक्षिणम्) दाईं और (उसी बैल को) (युञ्जन्ति) जोड़ते हैं (जो दूसरों की अपेक्षा अधिक अच्छा होता है) (भद्रं) भलाई (जीवन में वैसा ही महत्त्व रखती है, जैसा) (वैवस्वते) सूर्य में (उसकी) (चक्षुर्) दीप्ति। (जीवतः) जीते-जागते के मन की (बहुत्रा) अनेक (भली और बुरी) प्रवृत्तियां होती हैं (हमारा कर्त्तव्य भली प्रवृत्तियों का अनुसरण करना ही होना चाहिए)।

(वेदसार-विश्वबन्धुः)

जितात्मनः प्रशान्तस्य परमात्मा समाहितः।
शीतोष्णसुखदुःखेषु तथा मानापमानयोः।।

(गीता, ६,७)

श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि हे अर्जुन! सर्दी, गर्मी और सुख, दुःखादिकों में तथा मान और अपमान में जिसके अन्तःकरण की वृत्तियां अच्छी प्रकार शान्त हैं, अर्थात् विकाररहित हैं, ऐसे स्वाधीन आत्मा वाले पुरुष के ज्ञान में परमात्मा स्थित है अर्थात् उस पुरुष के ज्ञान में परमात्मा के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं होता।

युगद्रष्टा श्रीगुरु नानक देव

–डॉ. नरेश कुमार

सचाई के पथ से बहुत दूर
ले जाता है अहंकार,
करते हम निरहंकारी मसीहा को
श्रद्धा समर्पित नमन नमस्कार,
जिसने दिखाई नई दिशा
अंधविश्वासों पर किया प्रहार,
बनाया जिसने जीवन आध्यात्मिक
दूर किया अज्ञानांधकार,
तोड़ी घृणा की प्राचीरें
बल दिया सच्चे साधु जीवन पर,
न केवल पहचाना कुरीतियों को
किया उनमें व्यापक सुधार,
वे थे समाज–हित चिंतक
जननायक अलबेले फकीर,
वे थे जनकवि, निर्भय उपदेशक,
युगद्रष्टा, सुधारक संत–पीर,
बताया ओ३म ईश्वर एक,
सभी का वही पालनहार,
वही जगत का है स्रष्टा
हम सब उसकी संतान,
बताया जगत चौपड़ की बाजी,
प्राणिवर्ग गोटियों–समान,
सिखाया करना सबसे प्यार,
उनकी दृष्टि में सब समान,
प्रभुनाम–स्मरण, ईश्वर–गुणगान,
तन की धरती, कर्म–बीज किया वपन,
निर्धन से विमुख न हुए,
ज्योतिरूप प्रभु में लीन हुए,
विरागी, योगी, गृहस्थ एकसाथ,
व्यक्तित्व था स्नेही मिलनसार
गुमराह करने वालों पर किया प्रहार,
था जिनका धर्म पर एकाधिकार,
सिखाया मानवता की सेवा ईश्वर–सेवा
किया सबसे सद्व्यवहार,
न हो कथनी–करनी में अंतर
बनें सब मानव बेहतर,
जियो कमलवत्, बने सुंदर संसार,
न उलझो बंधनों में, यह गुरुवाणी–सार,
वे थे हिन्दुओं के गुरु, मुसलमानों के पीर
सिक्खों के धर्म–प्रवर्तक, पैगंबर,
शांतिदूत, युग–निर्माता, धर्मवीर,
होते हम नतमस्तक सौ–सौ बार।

– जे. २३५, पटेलनगर प्रथम, गाजियाबाद २०१००१

जन्मसाखी पंजाबी 40 के महानायक श्रीगुरुनानक देव जी

–डॉ. निर्मल कौशिक (प्रिंसिपल)

जन्मसाखी पंजाबी साहित्य की अत्यंत विलक्षण विधा है, इसमें किसी महापुरुष अथवा महानायक के जीवन के अन्त:साक्ष्यों एवं बहि:साक्ष्यों द्वारा उसके जीवन और व्यक्तित्व का रेखाचित्र प्रस्तुत किया जाता है। जन्मसाखी-परम्परा ऐतिहासिक तथ्यों, तार्किकताँओं और रचनात्मकता का मिश्रण कही जा सकती है। गुरु नानक देव जी के जीवन के आदर्शों को केन्द्रित कर जन्मसाखीकारों ने साहित्यिक और ऐतिहासिक तत्त्वों का एक ऐसा दस्तावेज तैयार किया जो अत्यन्त विश्वसनीय और सार्थक है। इतना ही नहीं तत्कालीन परिस्थितियाँ और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भी इसी परम्परा ने तैयार की है। परम्परागत रूप से विधिवत् संचित इन साखियों के माध्यम से ही भाषा के स्वरूप और विधाओं के विकास के अध्ययन का मार्ग प्रशस्त हुआ है। साखीकार अपने युग और परिवेश को साथ लेकर चलता है। जैसा कि हम सब जानते हैं कि प्राचीन पंजाबी गद्य का आरम्भ इसी जन्मसाखी परम्परा से हुआ है। जन्मसाखी-विधा गद्य-साहित्य की महत्त्वपूर्ण विधा है। अनेक साखीकारों ने थोड़े-बहुत परिवर्तन कर नवीनतम जन्मसाखी की रचना कर श्री गुरु नानक देव जी को उस युग का महानायक माना है।

अत: साखी शब्द का अर्थ गवाही प्रस्तुत करना होता है। 'साखी' रचयिता अपने नायक के जीवन से सम्बन्धित घटनाओं को अन्त:साक्ष्य और बहि:साक्ष्य के आधार पर प्रस्तुत करने हेतु प्रमाणों को साक्षी या साखी के रूप में जुटाते हैं। प्रसिद्ध विद्वान् डा. सुरजीत सिंह हांस के अनुसार साखी केवल लौकिक प्रमाण ही नहीं जुटाती अपितु लौकिक जगत् में दैवीशक्ति के दखल की गवाही भी प्रस्तुत करती है। मध्यकालीन साहित्य के अन्तर्गत प्रकृति के नियमों को भंग कर लोगों में नायक के प्रति श्रद्धाभाव उत्पन्न करना था। तत्कालीन साखी लेखकों ने श्री गुरु नानक देव जी के जीवन को केन्द्रित कर उनके जीवन में घटित करामातों के आधार पर उन्हें देव-पुरुष बना दिया। साखी लेखकों की धारणा के अनुसार जिसकी करामात जितनी बड़ी होती है उसकी आध्यात्मिक शक्ति भी उतनी बड़ी होती है। साखी-साहित्य की लोकप्रियता इस कद्र बढ़ती गई कि गुरु नानक देव के जीवन पर आधारित अनेक साखियां रची गईं। इस विषय में शमशेर सिंह अशोक का कथन द्रष्टव्य है-पहले-पहल पुरातन जन्मसाखी में केवल १५-२० साखियां ही थीं लेकिन बाद में इनकी गिनती २५ और फिर ३० हो गई। फिर क्या था अनेक अन्य लेखकों ने भी जन्म-साखियां लिखनी आरम्भ कर दीं। अपने नायक श्री गुरु नानक देव जी के जीवन के उन

प्रभावशाली तथ्यों, घटनाओं का चित्रण कर उन्हें महानायक बनाने का प्रयास निश्चय ही स्तुत्य है। क्रमानुसार इन जन्मसाखियों को हम इस प्रकार जान सकते हैं- पुरातन जन्मसाखी, आदि साखियाँ, पी. बी. ४० जन्मसाखी तथा भाई मनी सिंह वाली जन्मसाखी। इनके अतिरिक्त और भी अनेक साखियां उपलब्ध हैं। प्रसिद्ध विद्वान् डा. हरमहेन्द्र सिंह बेदी ने अपनी पुस्तक गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध हिन्दी भक्ति-साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन में भाई विधि चन्द वाली जन्मसाखी और भाई मनी सिंह वाली जन्मसाखी को भी सम्मिलित किया है। प्रोफैसर राजबीर कौर ने पुरातन अते नवीन पंजाबी वारतक में इस जन्मसाखी-परम्परा पर सामी और पौराणिक प्रभाव को स्वीकारते हुए कहा है-इन साखियों के विवरण सामी संस्कृति से सम्बन्धित साहित्य से प्रभावित मालूम पड़ते हैं। परन्तु सामी प्रभाव की तुलना में जन्मसाखियों की रचनाओं पर पौराणिक प्रभाव अधिक स्पष्ट दिखाई देता है। जन्मसाखी साहित्य में श्री गुरु नानक देव जी को एक ऐतिहासिक पुरुष के रूप में ही नहीं अपितु उनके जन्म को एक अवतार के रूप में चित्रित किया गया है। उदाहरण स्वरूप पुरातन जन्मसाखी का उदाहरण द्रष्टव्य है।

''संवत् १५२९ बाबा नानक जनमिया, बैसाख माह तृतीया चानणी रात, अमृत वेला, पहर रात रहन्दी कू जनमिया। अन्नहद शब्द परमेश्वर के दरबार वाजे, तेतीस करोड देवताओं ने नमस्कार किया। चौरासी सिद्धां, नवां नाथा नमस्कार किया। जो बड़ा भगत जगत निस्तारण को आया। इसको नमस्कार कीजिए जी। (पुरातन जन्मसाखी से उद्धृत)

इस परम्परा का निर्वाह अनेक साखीकारों ने किया और पंजाबी गद्य साहित्य के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। किसी महापुरुष के जीवन के आध्यात्मिक अनुभवों को संकलित कर उस जीवनवृत्त को तथ्यों सहित प्रस्तुत कर जन्मसाखी-परम्परा को एक नया स्वरूप प्रदान किया गया। पंजाबी साहित्य को एक गद्यात्मक-विधा के रूप में श्री गुरु नानक देव जी की जीवन-गाथा को क्रमबद्धता प्रदान कर प्रामाणिक जीवन-वृतान्त प्रस्तुत करना ही जन्मसाखी रचना का उद्देश्य था। इन साखियों की गद्यात्मकता का स्वरूप खालस पंजाबी नहीं है।

डा. हरमहेन्द्र सिंह बेदी के अनुसार जन्मसाखियां पंजाबी गद्य का प्रारम्भिक रूप प्रस्तुत करती हैं। परन्तु इनकी भाषा शुद्ध पंजाबी नहीं है। इनमें पुरानी लिपि का भी पर्याप्त अंश है और यह अंश उत्तरोत्तर बढ़ता गया है। अतः इनमें भाषा का मिश्रित रूप मिलता है।

जन्मसाखी शृंखला के अन्तर्गत पंज बी-४० जन्मसाखी जिसका सम्पादन प्रो. प्यार सिंह जो गुरु नानक देव वि.वि. अमृतसर के पंजाबी भाषा-साहित्य और सभ्याचार विभाग के निर्देशक थे, द्वारा किया गया है। यह पुस्तक जिस का नाम ''जन्मसाखी श्री गुरु नानक देव जी'' रखा गया है। इन्डिया आफिस लाइब्रेरी (लंडन)

की पाण्डुलिपि ठ.४० की नकल है। यह पाण्डुलिपि कोलबुक वाली जन्मसाखी (पुरातन जन्मसाखी) से भिन्न है। यह पाण्डुलिपि बीसवीं सदी के आरम्भ में लंदन पहुंची। इसमें कुल ५७ साखियां हैं। इस साखी की विशेषता यह है कि इसमें हर साखी के साथ चित्र भी बनाए गए हैं। यह साखी अपनी प्रामाणिकता के लिए भी प्रसिद्ध है। इसमें लेखक का नाम, लेखनकर्त्ता का नाम रचनाकाल, चित्र बनाने वाले का नाम व सबका पता भी दर्ज है।

इस पाण्डुलिपि की खोज की कहानी भी अद्‌भुत है। प्रसिद्ध शोधकर्ता स. जी.बी. सिंह (कर्ता प्राचीन बीड़ां)जो ''साखियां दी हकीकत'' विषय पर शोध कर रहे थे, का ध्यान इस पाण्डुलिपि की ओर गया। बीसवीं सदी के पांचवें दशक में एक बार आप लन्दन गए, वहां प्राचीन हस्तलिखित पाण्डुलिपियों की खोज करते-करते आपकी नजर इस पाण्डुलिपि पर पड़ी। आपकी प्रसन्नता का कोई ठिकाना न था। आपने प्रसिद्ध विद्वान् प्रो. प्रीतम सिंह जी (पटियाला) को इस अद्‌भुत खोज की सूचना दी। पत्र प्राप्त कर प्रो. प्रीतम सिंह की जिज्ञासा जागी और तत्कालीन आर्काईज और पंजाबी विभाग पटियाला के निर्देशक, डा. गंडा सिंह को इस जन्मसाखी की फोटोस्टेट कापी प्राप्त करने के लिए कहा। प्रो. प्रीतम सिंह के निवेदन को स्वीकार करते हुए इस पाण्डुलिपि की फोटोस्टेट कापी बीसवीं सदी के छठे दशक में पंजाबी विभाग पटियाला के लिए मंगवादी। इस जन्मसाखी की प्राचीनता के विषय में आलोचक अभी तक सर्वसम्मति नहीं बना सके। जो भी हो पुनरावृत्ति के बावजूद भी प्रत्येक साखी अपनी मौलिकता की छाप पाठकों के मन पर छोड़ती ही है। पंज बी ४० के नाम से जानी जाने वाली इस जन्मसाखी का जन्मसाखी परम्परा में विशेष स्थान है। अन्य जन्मसाखियों की तरह ही इस साखी के महानायक भी श्री गुरु नानक देव जी ही हैं। इसमें बताए गए चित्र भी चित्रकला के उत्कृष्ट नमूना हैं और श्री गुरु नानक देव जी के महानायकत्व की पुष्टि करते हैं। प्रसिद्ध आलोचक प्रो. ब्रह्म जगदीश सिंह के अनुसार भाषा तथा बनावट की दृष्टि से पुरातन जन्मसाखी, आदि साखियां तथा मिहरबान वाली जन्मसाखी में इतनी समानता है कि इनके पीछे किसी एक ही स्रोत होने का आभास होता है।

हमारी विषयगत वर्णित जन्मसाखी पंज. ४० के लेखक श्री दयाराम अबरोल तथा चित्रकार श्रीआलम चन्द की सूचनाएं जन्मसाखी में ही उपलब्ध हैं। इस साखी से यह भी पता चलता है कि कपूरथला से ११ किलोमीटर दूर एक सुर्खपुर नामक गांव में इसका रचनाकार्य हुआ। ऐसा लगता है कि साखी साहित्य रचना के और भी कई केन्द्र रहे होंगे।

जन्मसाखी पंज बी. ४० में वर्णित महानायक श्री गुरु नानक देव जी के व्यक्तित्व को एक अवतारी महापुरुष के समान चित्रित किया गया है। हिन्दु और मुस्लिम दोनों ही उनकी पूजा अर्चना करने लगे थे। गुरु नानक सबके अपने थे। आपने तत्कालीन आडम्बरों और सामाजिक बुराईयों को दूर करने के लिए प्रचलित कर्मकाण्ड

परम्परा से लोगों को मुक्त किया। कर्मकण्डों से आम आदमी अंधकार के गर्त में गिरता जा रहा था। गुरु नानक देव जी ने संस्कृत-भाषा के स्थान पर जन-भाषा में आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करने की परम्परा का सूत्रपात किया। सांसारिक विषय-विकारों में उलझने की अपेक्षा आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने पर बल दिया। इसका उदाहरण हमें प्रस्तुत साखी में स्थान-स्थान पर उपलब्ध होता है।

पंज बी ४० जन्मसाखी का प्रतिपाद्य मुख्य रूप से श्री गुरु नानक देव जी की गौरवगाथा को प्रस्तुत करना है। अतः गुरु जी के आजीवन घटनाक्रम को बिम्बात्मक शैली में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। बचपन से ही श्री गुरु नानक देव जी ईश्वरोन्मुखी हो गए थे। 'खेत हरिया होता' 'बिरछ दी छां ना फिरी,। पाधे वाली साखी' में गुरु जी के कौतुक वर्णित हैं। आपने भैंसे चराते हुए भी अपनी भक्ति को निर्विघ्न जारी रखा। इस भक्ति के प्रभाव के कारण भैंसों द्वारा लोगों के खाए गए चारे को फिर से हरा-भरा लहलहाता कर दिया था। कुछ साखियां पंज बी. ४० में ऐसी भी हैं जिनमें गुरु जी को संवाद (गोष्ठियां) श्री कबीर दास जी, श्री गोरख नाथ जी, श्री शेख शरफ आदि से करते हुए दिखाया गया है। एक गोष्ठी में तो श्री गुरु नानक देव जी ने इस निरंकार (ईश्वर) से भी संवाद किया। इस गोष्ठी में ही श्री गुरु नानक देव को उनकी भक्ति से प्रसन्न हो कर ईश्वर ने यह वरदान दिया कि ''नानक जाहि तेरा पन्थ चलेगा'' इन का कहना पैरी पवणा सतिगुरु होइया। तू नानक है तेरा पन्थ चलेगा।। नानक पन्थी होहिगे।। त्रै वस्तु द्रिडावणियाँ अपने पन्थ कउ नामु-दानु-इस्नानु।। गृहस्थ विच अलेप रहना।। नानका गल मेरे मारग की हद है दुखावना कोई नाही धरमु महि रहना।। बुरा किस दा चितवना नहीं।। धरम महि रहना।। अपना आप बुझावना लखावना नाही। सभ तो आप कउ नीच सदावना।। संजम करना घालि कमाई खाणा मेरे अर्थ देना सतिवादी होना''।।

जन्मसाखी लेखन शैली की दृष्टि से भी पंज. बी ४० की यह अनन्य विशेषता है कि इसके साखीकार ने अपने नायक श्री गुरु नानक देव जी के व्यक्तित्व को एक आध्यात्मिक महापुरुष के रूप में उभारा है। श्री गुरु नानक देव जी की विचारधारा उनकी गुरुवाणी की पृष्ठभूमि को सुदृढ़ करने वाली है। श्री गुरु नानक देव जी के बाल्यकाल की घटनाओं से ही यह बात प्रमाणित हो जाती है कि वह अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए गुरबाणी के सन्दर्भ में प्रस्तुत करते थे। एक बार जब उनके पिता श्री मेहता कालू जी उन्हें खेती का काम सौंपने की बात कहते हैं तो श्री गुरु जी उत्तर देते हैं कि यह काम तो उन्होंने पहले ही काफी समय से आरम्भ कर रखा है। जब उनके पिता को श्री गुरु नानक देव जी की बात समझ में नहीं आई तो उन्होंने स्पष्ट करने के लिए गुरबाणी की शैली में समझाया। जन्मसाखी पंज. बी. ४० के अनुसार तब नानक आखिया पिता जी आना उह खेती बाड़ी है तू आपे सुनेगा।। ता बाबे इकु सबदु सोरठि विच्च उठाईया।। राग सोरठि।। मनु हाली किरसानी करणी सरमु पाणी तनु खेतु। नामु

...ज सन्तोष सुहाग रख गरीबी वेसु।। (खेती, ...ज, सौदागरी में से)

जन्मसाखी पंज. बी में श्री गुरु नानक देव जी के जीवन को विशिष्ट गुणों से अलंकृत कर प्रस्तुत किया गया है। श्री गुरु नानक देव जी के साथ घटित अनेक घटनाओं में श्री गुरु नानक देव जी को अत्यन्त सहज रूप में प्रस्तुत किया गया है। संवाद करते समय अन्य पात्र उनके समक्ष नत-मस्तक हो जाते हैं। उनके स्वभाव और स्वरूप में ऐसा आकर्षण था कि उनके सामने दुष्ट और अत्याचारी तो टिक ही नहीं सकता था। उनका उदार स्वरूप बुरे लोगों का भी भला ही करता है। दैंत नू तारिया वाली साखी में दैंत स्वतः ही श्री गुरु नानक देव जी के व्यक्तित्व और वार्तालाप से इतना प्रभावित हुआ कि वह स्वयं गुरु जी के चरणों में आ गिरा। जन्मसाखी पंज.बी. के अनुसार ''बाबे डिठा जि देह आइया असमान जेडा होई के आइया। उहु लोक सहमि गइया ता बाबे उस देह वलि डिठा।। बाबे दे देखण नालि इक उडिया जिए वरोले विच खूब उड़ता है। तउ उड़ि के फिरदा फिरदा बाबे दे अगे आह डिगिया पर सुध कुछ रही नाही। ता बाबा मिहरबानु होइआ।'' (दैंत नू तारिया) में से।

भले ही पंज.बी.४० जन्मसाखी से पूर्व अनेक जन्मसाखियां रची जा चुकी थीं तो भी इस जन्मसाखी का अपना विशेष स्थान है। कुल ५७ साखियां श्री गुरु नानक देव जी के आजीवन, आचार-व्यवहार और धर्मप्रचार पर केन्द्रित हैं। साखीकार ने अत्यन्त निष्पक्ष भाव से गुरु जी के जीवन को प्रेरक और मार्गदर्शक रूप में चित्रित किया है। संवाद, क्रमबद्धता, मौलिकता, भाषा और शैली, आलंकारिकता एवं प्रामाणिकता की दृष्टि से यह जन्मसाखी अन्य जन्मसाखियों से अलग प्रतीत होती है। गद्य का स्वरूप भी निखर कर सामने आया है। सामान्य जनभाषा में रचित यह जन्मसाखी अपने युग की सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक उथल-पुथल को चित्रित करने में सक्षम है।

पंज.बी. ४० जन्मसाखी ने श्री गुरु नानक देव जी के महानायकत्व को तो चरितार्थ किया ही है। साथ ही साहित्यिक दृष्टि से भी इसकी देन कम नहीं है। इस जन्मसाखियों के रचयिता ने प्रसंगानुकूल भाषा और शैली का प्रयोग किया है। जो अत्यन्त अनूठा बन पड़ा है। इस साखी के सम्पादक डा. पिआर सिंह के अनुसार इसमें गद्य की तीन मिश्रित शैलियाँ उपलब्ध हैं। पहली निर्मल और उदासी सन्तों की, दूसरी संस्कृत एक ब्रजभाषा की तीसरी हिन्दवी मिश्रित पंजाबी भाषा की।

अन्त में हम लिख सकते हैं कि जन्मसाखी परम्परा में अन्य साखियों के समान ही पंज.बी ४० जन्मसाखी में भी श्री गुरु नानक देव जी के जीवन की विलक्षण घटनाओं द्वारा उनके महानायकत्व को सिद्ध करने में कोई कमी नहीं छोड़ी है। अतः पंज.बी.४० के उस महानायक श्री गुरु नानक देव जी को हम नमन करते हैं।

-१६३, आदर्श नगर, ओल्ड कैंट रोड, फरीदकोट-१५१२०३
सम्पर्क९११५७०२८४३

भारतीय संस्कृति के लोक-व्याख्याता "गुरु नानक देव"

-डॉ. विद्यानन्द 'ब्रह्मचारी'

जन-जन के मानस मन्दिर में जो लोग पावनता।
गंगा के सम ग्रहणशीलता सागर के सम क्षमता।।
प्रादुर्भूत करे जो नर में विविध ज्ञान विज्ञान।
पंचनद के महान नानक सिख धर्म महान।।

भारत आध्यात्मिक संस्कृति पर आधारित एक अद्‌भुत देश है जहाँ के निवासियों में आत्मानुभूति की भावना अनुस्यूत है। यह भावना किसी धार्मिक नेता द्वारा आरोपित नहीं अपितु स्वभावगत है। भारत की संस्कृति की पृष्ठभूमि में योग एवं ध्यान की विशिष्ट एवं समृद्ध परम्परा है। भारत की आत्मा इस देश की संस्कृति में निवास करती है। अध्यात्म, धर्म, कला, दर्शन तथा भाषा के सन्दर्भ में हिन्दूसंस्कृति विश्व की समुन्नत संस्कृति है।

हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल (१३७५-१७०० विक्रम) में एक काव्यधारा विशेष का प्रवर्तण हुआ, जिसे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा, डॉ. रामकुमार वर्मा ने 'संतकाव्य परम्परा' और डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'निर्गुण भक्ति साहित्य' का नाम दिय है।

तो हाँ, इसी कालखण्ड में पंचनद विमल-भूमि के कुदरती लाल गुरु नानक देव सिख गुरुओं में प्रमुख हैं सिखधर्म के जन्मदाता हैं। संत-साहित्य के विद्वानों ने इनका जन्म १५ अप्रैल, १४६९ ई. माना है। इनका जन्मस्थान अब 'ननकाणा साहिब' के नाम से प्रसिद्ध है। बचपन में ही इनकी प्रकृति बहुत शान्त एवं एकान्तप्रिय थी। एक बार माता के बहुत आग्रह पर आप खेलने गये, तो सब बच्चों को 'पद्मासन' लगा कर एक गोल पंक्ति में चुपचाप बैठा लिया और कहा कि 'सत्य कर्तार'- 'सत्य कर्तार' कहते रहो। बड़ी देर तक बच्चे इसी नाम समाधि में रहे। श्री गुरु नानक देव सदैव हरिचिन्तन में लगे रहते थे और घर-गृहस्थी की ओर इनका ध्यान नहीं के बराबर था। श्री नानक जी का विवाह जनपद गुरुदासपुर स्थित बटाला गाँव के निवासी मुला की पुत्री सुलक्षणी के साथ हुआ था। उनके दो पुत्र रत्न थे। आरम्भ में इन्हें हिन्दी, संस्कृत और फारसी पढ़ाने के लिये अध्यापक रखे गये।

उल्लेखनीय है कि श्री कृष्णानन्द जी उदासीन ने श्री गुरु नानक देव जी की जीवनी बड़े विस्तार से लिखी है। इसका नाम 'जनम साखी' अथवा 'नानक सत्यप्रकाश' है। इसी प्रकार 'नानक सूर्योदय जनमसाखी' एक महान् ग्रंथ लगभग छः सौ पृष्टों का है, जिसमें श्री नानक देव जी की जीवनी पद्य में वर्णित है।

सिक्खधर्म के प्रवर्तक श्री गुरु नानक जी का नाम निर्गुण सन्त-कवियों में बहुत ऊँचा है। इनकी रचनाएँ 'गुरु ग्रंथ साहिब' में संकलित है, जिनमें निर्गुण ब्रह्म की उपासना, संसार की क्षणभंगुरता,

माया की शक्ति, नाम जप की महिमा, आत्मज्ञान की आवश्यकता, गुरुकृपा का महत्व सात्विक कर्मों की प्रशंसा आदि विषयों पर विचार प्रकट किए गए हैं। इस मूलमंत्र की व्याख्या जनकवि नानक की समग्र वाणी का सारतत्व है।

पन्द्रवीं शताब्दी में जन्में श्री गुरु नानक देव जी के समय में गत दो शताब्दियों के अन्दर कुछ विदेशी शक्तियों ने भारत में अपनी जड़ें जमा ली थीं, जिसके कारण भारत की सांस्कृतिक एकता छिन्न-भिन्न हो गयी थी। यह सच है कि आचरण, सुन्दर चरित्र और कर्म की शुद्धता भारतीय संस्कृति का मूल आधार है। इसी की व्याख्या के परिप्रेक्ष्य में, धर्मोपदेशक के रूप में नानक चौंतीस वर्ष की आयु में एक प्रखर सार्वजनिक उपदेशक हो गये। मर्दाना उनका प्रथम शिष्य था। उनके उपदेश लोगों के लिए अत्यन्त प्रभावशाली होते थे। नानक ने कुछ दिनों तक एक परिव्राजक का जीवन भी व्यतीत किया। बाबर उनसे बहुत प्रभावित था और उन्हें अत्यधिक सम्मान की दृष्टि से देखता था। वे अपने हृदय को मानव-समाज के विकास के लिए वाणी का स्वरूप देकर विशाल विश्व के तीर्थयात्री को मार्ग तो दिखा ही रहे थे। वे अपने दिव्य व्यक्तित्व से सत्यशील भी रहे और आज वे विश्व के गुरुदेव भी हैं। आज जनमानस के मध्य भारतीय संस्कृति के लोक-व्याख्याता के रूप में जाने जाते हैं।

आध्यात्मिक संत गुरु नानक जी की साधना जीवन और जगत् के उस शाश्वत परम तत्व से जुड़ी हुई है, जो मानवमात्र की थाती है। मानव का आदि ग्रंथ- 'वेद' उसी तत्व को 'ओंकार' शब्द से सम्बोधित करता है। यही सम्बोधन नानक वाणी में भी है। नानक की प्रतिनिधि रचना 'जपुजी' (जिसे आदि ग्रंथ में सर्वप्रथम स्थान दिया गया है) का आरम्भ ही '१ओंकार सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु' इन शब्दों के साथ होता है।

मानव जीवन की सफलता और उच्चता के दो मूल आधार नानक ने निर्धारित किये हैं- 'अहंकार का त्याग तथा कर्म की साधना।' अहंकार त्याज्य है- कर्म वरेण्य है। अहंकार का पर्याय है- 'हउमै' अर्थात् 'मैं' की भावना। इस 'मैं' को शरणागति द्वारा समाप्त किया जा सकता है। इसे नानक ने 'हुकुम' की संज्ञा दी है-

नानक हुकमै जे बुझैत हउमै कहै न कोई।[1]

इस प्रकार के सार्वजनीन सिद्धान्तों को सरल सहज रूप में अपने समय के लोकमानस तक सम्प्रेषित करने हेतु सब काम छोड़कर अन्तः- प्रेरणा से प्रेरित होकर वे अब देशाटन को निकले। धर्मोपदेशक के रूप में इनकी पहली यात्रा दिल्ली, हरिद्वार, काशी, गया तथा जगन्नाथपुरी की हुई। दूसरी यात्रा में सेतूबन्ध रामेश्वर, सिंहल द्वीप आदि स्थानों में परिभ्रमण किया। तीसरी यात्रा में गढ़वाल, हेमकूट, गोरखपुर, सिक्कम, भूटान,

१. आदि ग्रंथ, जपु, पौड़ी-२, अन्तिम चरण।

तिब्बत आदि स्थानों में सत्संगदान करते रहे और चौथी यात्रा में पश्चिम की ओर ब्लूचिस्तान होते हुए मक्काशरीफ पहुँचे और फिर रूम, बगदाद, ईरान आदि की सैर करते हुए कंधार, काबुल आदि में सत्यनाम का प्रचार एवं प्रसार किया। जनश्रुति के अनुसार मक्का शरीफ पहुँच कर वे काबे की ओर पैर करके सो गये। जब काजी क्रुद्ध हुआ तो आपने कहा- काजी जी! जिधर अल्लाह का घर न हो मेरे पैर उधर ही कर दीजिये। कहते हैं कि काजी ने नानक के पैर जिधर फेरे, काबा भी उधर ही फिरता गया। पूरे पच्चीस वर्ष भ्रमण करने के बाद आप कर्तारपुर में रहने लगे और सत्संग के साथ-साथ अन्न का लंगर (सदाव्रत) भी सबके लिए जारी किया। वे एक सुधारक थे। उन्होंने अनेक चमत्कारों का प्रदर्शन किया। आप उदार तथा सहिष्णु थे। आप प्राणिमात्र के प्रति प्रेम तथा शान्ति का सन्देश दिया। आपमें सैद्धान्तिक और जातिगत भेद की भावना नहीं थी।

सत्तर वर्ष की आयु में आपने २२ सितम्बर, १५३९ में परलोक गमन किया।

आपके उपदेशों और वाणियों को सिखधर्म के पंचम गुरु अर्जुनदेव ने संकलित किया। जपुजी, पट्टी, आरती, दक्षिणीय, ओंकार, सिंहगोष्ठी आदि आप की प्रसिद्ध वाणियाँ हैं। 'जपुजी' सिखों की गीता है। उसमें श्री गुरु नानक देव ने बहुत विस्तार के साथ नाम की महिमा गायी है। उनका कथन है कि नाम वह साबुन है, जो लाख-लाख जन्मों के पाप को धो डालता है। नाम वह महौषधि है, जो सब लोगों पर रामवाण-सा असर करती है। सिखधर्म में नाम की बड़ी महिमा है।

सत्यान्वेषी संत गुरु नानक जी की नामसाधना ने उनके चलाये हुए धर्म को सिखमत, गुरुमत अथवा खालसा पंथ कहते हैं। इन गुरुओं ने यह आदेश दिया कि साधक निरन्तर हरिनाम 'श्री वाहेगुरु' का जाप करता रहे साथ ही दूसरों की सेवा में तन-मन-धन से तत्पर रहे।

इतना तो निर्विवाद है कि देश तथा जातियों को उन्नति के शिखर पर चढ़ाने वाले संत महापुरुष हुआ करते हैं। संसार को साधु-सन्त वस्तुतः एक वरदान के रूप में प्रात हुए हैं। उनका समग्र जीवन ही अनुकरणीय होता है। हमारी भारतभूमि का वैभव संत हैं। भारत के सर्वाधिक सन्त-महापुरुषों में सिखधर्म के प्रमुख संत-कवियों में नानक अग्रगण्य हैं जिन्होंने अपनी अपूर्व प्रतिभा और आत्मिक बल से संसार को चकित कर दिया है।

अन्त में पंचनद के ब्रह्मज्ञानी संत श्री गुरु नानक देव जी के ५५०वें प्रकाशपर्व की पावन वेला में मैं ऐसे परम पवित्र एवं विचित्र चरित्र वाले त्रिकालदर्शी संत के युगल कोमल चरणकमलों को श्रद्धा-भक्तिपूर्वक सिर झुका कर कोटिशः नमन करता हूँ।

-ग्राम+पो. राँकोडीह, वाया-कोशी कॉलेज खगड़िया,
जिला खगड़िया-८५१२०५ (बिहार)

गुरु नानकवाणी में ओंकार बनाम ओम् का महत्त्व

-डॉ. धर्मपाल साहिल

गुरु नानक वाणी में ब्रह्म स्वरूप का चित्रण बहुत ही प्रभावशाली ढंग से किया गया है। गुरु नानक के अनुसार ब्रह्म के रूप में एक ऐसी सत्ता विद्यमान है जो यहाँ के दृश्य एवं अदृश्य दोनों ही जगत् को शान्ति प्रदान करती है। गुरु नानक देव ने ब्रह्म के इस स्वरूप का वर्णन अपने इस मूल मंत्र में किया है-

१ओंकार सतनाम कर्ता पुरष निर्भौ निर्वैर अकालमूर्त अजूनि सैभं गुरप्रसादि। (जपुजी सा.)

इस मूल मंत्र में '१' अंक एक ब्रह्म का वाचक है। इसका भाव है कि परमेश्वर एक और केवल एक है। मूल मंत्र के दूसरे शब्द ओंकार का अर्थ होता है रक्षा करने वाला क्योंकि ब्रह्म भी सभी की रक्षा करता है। इसीलिए ओम् शब्द ब्रह्म का वाचक है।

इस मूल मंत्र के अतिरिक्त श्री गुरु नानक वाणी में और भी कई स्थानों पर ब्रह्म के एकत्व का प्रतिपादन हुआ है। इस संसार में जितने भी रूप दिखाई देते हैं। वे उसी का रूप हैं। वह ब्रह्म एक और केवल एक है तथा युगों-युगान्तरों से एक ही वेश वाला है। दिन का सूर्य, रात्रि के चाँद तारे लुप्त हो जाते हैं, लेकिन यह एक ऐसी परम सत्ता है जो सदैव स्थिर रहती है। इस एक ब्रह्म के अतिरिक्त पीर, शेख, राय, बादशाह, देव-दानव, मनुष्य, सिद्ध, साधक, न्याय करने वाला न्यायाधीश, सूर्य, चन्द्रमा, तारागण, सातों द्वीप, जल, अग्नि, पवन, अन्यपक्षी तथा वृक्ष आदि जो कुछ भी इस जगत् में दिखाई देता है। सब नश्वर है। एक ब्रह्म ही सदा रहने वाला है। जो इस एक को पहचान लेता है, वह उसके दरबार में सम्मानित होता है।

वेदों में भी ब्रह्म की एकता को ही प्रतिपादित किया गया है। ऋग्वेद उसे अद्वितीय मानता है, वहीं अथर्ववेद बताता है कि वह दूसरा-तीसरा-चौथा-दसवाँ नहीं है। वह तो बस एक ही है। यजुर्वेद ने उसे सभी प्राणियों का स्वामी माना है। किन्तु एक होने पर भी विद्वान् उसे प्रकरणानुसार भिन्न-भिन्न नामों से पुकारते हैं। वस्तुतः ब्रह्म एक ही है। सभी वेद एवं उपनिषद् एकमत होकर एक स्वर में कहते हैं कि प्राणियों में एक ही देव है। वह अद्वितीय है तथा सभी प्राणियों को वश में रखने वाला है। वह एक ही रूप को कई प्रकार से ढाल लेता है।

वैदिक साहित्य में ओम् के दो रूप मिलते हैं- 'ओम्' तथा 'ॐ'। आरम्भ में इसे एकाक्षर मानकर केवल ब्रह्मा, विष्णु, महेश भाव से लिया जाने लगा। श्री गुरु नानक वाणी में इसे केवल ब्रह्म का स्वरूप माना गया है तथा शंका दूर करने हेतु इसके साथ 'कार' शब्द लगा दिया गया है। १अंक के साथ ओ (ऊड़ा) लगा कर इसे 'एक ओंकार'

माना गया है। गुरु नानक वाणी में ओंकार का अभिप्राय केवल एक ब्रह्म से है, ब्रह्मा, विष्णु, महेश से नहीं। क्योंकि ब्रह्मा, विष्णु, महेश एवं दस अवतार तथा अन्य देव उसी की उपज माने गये हैं।

उपनिषदों में ओम् तथा ओंकार दोनों ही शब्दों का प्रयोग हुआ है तथा इसे ब्रह्म का वाचक एवं अक्षर माना गया है। इस ओम् अर्थात् ओंकार का अवलम्बन लेकर ही विवेकशील साधक मोक्ष को प्राप्त कर सकता है।

भारतीय धर्म एवं दर्शन में भी ओम् शब्द को आदि काल से ब्रह्म का वाचक माना जाता रहा है। इसे ही श्री गुरु नानक ने ओंकार कहा है, ताकि इस में किसी प्रकार की भ्रान्ति न रहे। गुरु नानक वाणी में ओंकार नाम से वाणी लिखी गई है। जिसमें परमात्मा 'ओंकार' की महिमा ही विवेचित है। इस वाणी में गुरु नानक देव ने परम सत्ता की समस्त शक्तियों का आरोपन ओंकार में करके दोनों में एकात्मकता स्थापित की है।

इस वाणी में ओंकार की महिमा का वर्णन करते हुए बताया गया है कि ओंकार से ब्रह्म की उत्पत्ति हुई है। जिसने ओंकार का ही चिन्तन किया है। ओंकार से ही पर्वत एवं युग निर्मित हुए हैं। ओंकार से ही वेदों की उत्पत्ति हुई है। ओंकार शब्द से ही लोग इस भवसागर को पार करते हैं। अतः ओम् नमः अक्षर का भाव ग्रहण करना चाहिए। यही तीनों भुवनों का सारतत्त्व है। इस अक्षर से नाम की प्राप्ति होती है तथा इसी से परमात्मा की स्तुति होती है। अक्षर से ज्ञान प्राप्त करके ही परमात्मा की गुणगाथा के गीत गाए जाते हैं। मनुष्य को पढ़ने-लिखने तथा वाणी उच्चरित करने का ज्ञान अक्षर से ही होता है। इसी अक्षर से मनुष्य के मस्तिष्क पर भाग्य-रेखाएँ अंकित होती हैं। गुरु नानक वाणी की यह मान्यता है कि सम्पूर्ण सृष्टि में एक ओंकार ही है, दूसरा कोई नहीं है। वह ही सर्वत्र व्याप्त है। सम्पूर्ण सृष्टि का शासक होने पर भी वह सांसारिक बन्धनों से निर्लिप्त है।

गुरु नानकवाणी में ओम् का जो चित्रण हुआ है उसका आधार उपनिषद् ग्रंथ हैं। उपनिषदों के अध्ययन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि ओम् का जिस प्रकार का चित्रण गुरु नानक वाणी में हुआ है ठीक उसी प्रकार उपनिषद्-ग्रंथों में भी व्याप्त है। उपनिषद् भी उसे ब्रह्म का वाचक मानते हैं। परमात्मा के वाचक सभी नामों में ओम् ही सर्वश्रेष्ठ है। जिस प्रकार परमात्मा सदा एकरूप रहता है। उस में किसी भी प्रकार का विकार नहीं आता, ठीक उसी प्रकार अव्यय होने से ओम् भी सदा एक रूप रहता है। उसके रूप में भी कोई परिवर्तन नहीं आता।

छान्दोग्योपनिषद् के प्रारम्भ में ही बताया गया है कि ओम् शब्द सभी के लिए गेय है। अतः सभी को इसी की उपासना करनी चाहिए। परमात्मा का नाम होने के कारण ओम् साक्षात् ब्रह्म ही है। यह प्रत्यक्ष दृश्यमान जगत् ओम् अर्थात् ब्रह्म का ही स्थूल रूप है। छान्दोग्योपनिषद् में यह भी बताया

गया है कि जिस प्रकार पर्वनाल से सारे पत्ते बँधे हुए होते हैं। उसी प्रकार ओंकार से सारी वाणी बँधी हुई है यानि जो कुछ भी हमारे इर्द-गिर्द है, वह सब कुछ ओंकार ही है।

इसी प्रकार माण्डूक्योपनिषद् में बताया गया है कि उस अविनाशी ब्रह्म का नाम ओम् है तथा समग्र जगत् उस ओम् महिमा का ही प्रकाश है भूत, वर्तमान एवं भविष्य सभी कुछ ओंकार ही है।

प्रश्नोपनिषद् भी ओंकार को ही पर एवं अपर ब्रह्म मानती है। विद्वान् लोक केवल ओंकार का अवलम्बन लेकर उस शान्त, अजर, अमर, अभय एवं सर्वोत्तम ब्रह्म को पा लेते हैं। श्वेताश्वतरोपनिषद् के अनुसार निरन्तर ओंकार का ध्यान करने से ओंकार का दर्शन किया जा सकता है। मुण्डक उपनिषद् में भी बताया गया है कि ओम् का निरन्तर ध्यान करने से मनुष्य अज्ञानरूपी अंधकार को पार कर लेता है।

कठोपनिषद् में भी ओम् की महिमा का विस्तृत विवेचन हुआ है। इस उपनिषद् में बताया गया है कि सम्पूर्ण वेद कई प्रकार से, नाना छन्दों के द्वारा जिस का प्रतिपादन करते हैं; सम्पूर्ण तप आदि साधनों का जो परम एवं चरम लक्ष्य है तथा जिस को प्राप्त करने की इच्छा से साधक ब्रह्मचर्य का अनुष्ठान करते हैं, वह तत्व ओम् ही है। ओम् ही ब्रह्म एवँ परब्रह्म है ओम् अक्षर को जानकर साधक दोनों में से किसी भी अभीष्ट रूप को प्राप्त कर सकता है। अत: ब्रह्म की प्राप्ति के लिए ओम् ही सर्वश्रेष्ठ अवलम्बन है। इसे साध कर ही साधक ब्रह्मलोक में गौरव को प्राप्त कर सकता है।

उपरोक्त विवेचन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि गुरु नानक वाणी में जो ओंकार की महिमा वर्णित है, उसका आधार उपनिषद् ग्रंथ ही हैं। उपनिषदों की तर्ज पर ही श्री गुरु नानक वाणी में ओंकार यानि ओम् को ब्रह्म का वाचक माना गया है तथा इसी से जगत् की उत्पत्ति मानी गई है। ओम् का निरन्तर ध्यान करने से मनुष्य भगवान् यानि परमसत्ता यानि परमेश्वर के दर्शन कर सकता है।

-पंचवटी, एकता एन्कलेव, लेन-२, बूलाँवाड़ी, होशियारपुर (पंजाब)
मोबा: 98761-56964

श्री गुरु नानकदेव जी की शिक्षाएं

– डा. डी. एस. कंग

सिखों के पहले गुरु श्री नानक देव जी एक महान् धार्मिक शिक्षक, गम्भीर दार्शनिक और दिव्य कवि थे। उन्होंने मध्यकालीन भारत की भक्तिलहर में एक मुख्य भूमिका निभाई। सभी सूफी संतो की तरह उन्होंने पीड़ित और दुःखी समाज को अज्ञानता के गहरे अंधकार से निकालने के लिए तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और धार्मिक परिस्थितिओं के विरुद्ध आबाज उठाई। उन्होंने लोगों को आध्यात्मिक, नैतिक सामाजिक और शारीरिक रूप से सुदृढ करने का प्रयत्न किया। इससे एक नई आध्यात्मिक परम्परा की नींव पड़ी। गुरु जी की यह शिक्षाएं सिखों के धार्मिक ग्रन्थ श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में संग्रहीत हैं। जो इस प्रकार हैं-एक परमात्मा में विश्वास और उसकी पूजा, जाति, धर्म, लिंग और आर्थिक विषमता के भेदभाव का त्याग, मानवता की निष्काम सेवा, सभी को समान सामाजिक न्याय, नैतिक शुद्धि, परिश्रम और ईमानदारी से रोजी-रोटी कमाना-यह शिक्षाएं एक गृहस्थी के लिए आवश्यक हैं।

श्रीगुरु नानक के समय में लगातार बाहरी आक्रमण, भय और खून-खराबे के कारण समाज में बहुत अधिक असंतुष्टि और निराशा थी। बाबर के अत्याचारी राज्य में हिन्दूधर्म को समाप्त करने के बहुत से प्रयत्न किये गये। इसी कारण हिन्दुओं की राजकार्य में कोई पहुंच और भूमिका नहीं थी। अत्याचार, शोषण और पराधीनता ने हिन्दु-समाज के आत्मबल, आत्म-सम्मान और आत्मविश्वास को समाप्त कर दिया था। हिन्दुओं को धार्मिक स्वतन्त्रता नहीं थी, उनके धार्मिक स्थलों पर भारी जजिया लगाये जाते थे। हजारों मन्दिर, स्मारक और धार्मिक पुस्तकों को नष्ट कर दिया गया। शिक्षण-संस्थाएं बन्द कर दी गईं और हिन्दुओं के धार्मिक साहित्य को बढ़ाने के लिए कोई प्रोत्साहन नहीं दिया जाता था। बलात् धर्म-परिवर्तन कराया जाता था। जो व्यक्ति इस्लाम को स्वीकार नहीं करते थे, उन्हें निर्दयता से मौत के घाट उतार दिया जाता था या उन पर भारी टैक्स लगा दिया जाता था एवं कठिन कानून लगाकर अत्याचार किया जाता था। इसी भय से बहुत से हिन्दुओं ने मुस्लिम-धर्म के जीवन-स्तर को अपना लिया था। हिन्दुओं ने सरकारी नौकरी प्राप्त करने और समाज में अपनी सामाजिक स्थिति को ऊपर उठाने के लिए फारसी भाषा सीखी और मुस्लिम पहनावा अपना लिया। वैसे भी हिन्दूधर्म केवल पाखण्ड और मजाक बनकर रह गया था। धार्मिक लोग अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए भोले-भाले और बहमी लोगों का धार्मिक आडम्बरों द्वारा शोषण करते थे। जातिभेद के कारण लोगों से घृणा की जाती थी। उस समय नारी की स्थिति भी बड़ी निम्न थी और नारी को अपनी सम्पत्ति समझा जाता था। उसे पर्दे में रखा जाता था। उन्हें कोई सुविधा प्राप्त नहीं थी। उन्हें घर और चारदीवारी में कैद रखा जाता था। बालविवाह और सतीप्रथा के

साथ-साथ मूल स्वतन्त्रता न होने के कारण स्त्री का जीवन बड़ा कष्टमय था। शिक्षा भी केवल ऊंची जातियों के लोगों को ही सुलभ थी। इससे समाज में विरक्ति की भावना, असंतोष और नैतिक पतन हो चुका था।

श्रीगुरु नानक देव जी का जन्म एक मध्यवर्गीय कट्टर धार्मिक परिवार में हुआ था। श्री गुरु नानक की दुनियावी कार्यों में रुचि नहीं थी और वे पारम्परिक धार्मिक विश्वासों और रस्मों को नहीं मानते थे। इस कारण उनके पिता बहुत दुःखी थे। गुरु जी ने धार्मिक आडम्बरों का डट कर विरोध किया। गुरु नानक जी ने आध्यात्मिक, ईश्वरीय और मानवीय सत्ता को जानने के लिए साधु-संतों, धार्मिक लोगों की संगति में अधिकतम जीवन व्यतीत किया। ईश्वरीय ज्ञानप्राप्ति के बाद गुरु जी ने अपने साथियों बाला और मरदाना के साथ संपूर्ण भारत और एशिया के धार्मिक स्थानों का भ्रमण किया और भिन्न-भिन्न धर्मों के अनुयायियों से वार्तालाप किया। वे जब अपनी वाणी से कुछ उच्चारण करते तब मरदाना जी रबाव बजाते थे, इससे सुनने वाले लोग मग्न हो जाते थे। जहां भी वे गये उन्होंने लोगों को एक नया विचार दिया और उस पर चलने को कहा। अपनी यात्राओं के उपरान्त उन्होंने करतारपुर को अपना निवास बनाया और यहां उन्होंने अपने परिवार के साथ एक किसान जैसा जीवन व्यतीत किया। यहां पर दूर-दूर स्थानों से लोग आकर नानक जी की धार्मिक वाणी को सुना करते थे।

गुरु जी के आगमन से पहले हिन्दु-जनता अपने विश्वास और आस्था के कारण बहुदेववादी थी। वे मनुष्य और परमात्मा को भिन्न-भिन्न मानते थे, अनेक देवताओं, पशु-पंछियों, पौधों, ग्रहों और बुत्तों की पूजा करते थे। इस लिए मुसलमान और ईसाई लोग इन्हें बुतपरस्त (काफिर) कहते थे। गुरु नानक ने इस मौलिक मतभेद को मिटाया और मनुष्य को परमात्मा का ही अंश माना। गुरु जी ने पुरातन भिन्न-भिन्न धार्मिक विचारों को अपनी वाणी में संमिलित कर एक नया रूप देकर समाज को लाभान्वित किया। गुरु जी ने परमात्मा के स्वरूप को दर्शाते हुए एक मूलमंत्र कहा -

१ओंकार सतनाम कर्ता पुरष निर्भौ निर्वैर अकालमूर्त अजूनि सैभं गुरप्रसादि। (जपुजी सा.)

अर्थात्- परमात्मा एक है, वह सत्य है, दुनियाँ को बनाने, पालने और विनाश करने वाला, भयरहित, वैररहित, सदा वर्तमान, मानवयोनिरहित स्वयं उत्पन्न गुरुकृपा से प्राप्त, भक्तिरूप। परमात्मा को गुरु की कृपा और जप-तपस्या से ही प्राप्त किया जा सकता है। उनके अनुसार परमात्मा सभी अच्छे -बुरे जीव पर दयावान् है। परमात्मा को तर्क और बुद्धि से ही नहीं पाया जा सकता। गुरु जी ने अपने शिष्यों को परमात्मा के संमुख आत्मसमर्पण का उपदेश दिया। गुरु जी के नाम जपो,किरत करो, और बंड छको- तीन मार्गदर्शक सिद्धान्त सर्वव्यापक हैं। इसका भाव यह है कि मनुष्य को परमात्मा का सदा नाम जपना चाहिए, ईमानदारी से अपनी रोजी-रोटी कमानी चाहिए और अपनी कमाई को गरीबों जरूरतमन्दों में बांटकर प्रयोग करना चाहिए।

श्रीगुरु नानकदेव जी का दृष्टिकोण व्यावहारिक था। वे जो उपदेश करते थे, उसी के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करते थे। उन्होंने

हिन्दुशास्त्रों में वर्णित जाति-व्यवस्था का पुरजोर खण्डन किया। उनके अनुसार आध्यात्मिक विकास के पांच स्तर हैं-
धर्मखण्ड, ज्ञानखण्ड, सरमखण्ड, कर्मखण्ड, सच्चखण्ड।
अर्थात्-अपने कर्तव्यों को ईमानदारी से निभाना, परमात्मा की सत्ता को जानना, बुद्धि की निर्मलता, अपने अच्छे कर्मों की फलप्राप्ति और सत्यमार्ग की प्राप्ति। अर्थात् परमात्मा और मनुष्य में भेद का न होना। अर्थात् परमात्मा प्रत्येक मनुष्य में विराजमान है।

धार्मिक कट्टरता मूर्तिपूजा, अत्याचार, शोषण, छुआछूत को नकारते हुए गुरु जी ने प्रत्येक धर्मों की समानता और एकता तथा सभी मानवों में भ्रातृभाव का प्रचार किया तथा कहा कि धार्मिक शिष्य को पूर्ण दैवीय विशेषताएं ग्रहण करनी चाहिएं। जैसे कि सच्चाई, ईमानदारी, निर्मलता, निडरता, प्रेमभाव, न्याय, दयालुता, क्षमा, सहनशीलता, सरलता, मीठी वाणी, नम्रता, आत्मसंयम, अच्छा आचरण करना चाहिए। सभी बुराईयों-जैसे काम, क्रोध, मोह अहंकार, पाखण्ड, झूठ, स्वार्थ, हिंसा और नफरत को समाप्त कर देना चाहिए। अपने अन्दर दैवीय शक्ति का अनुभव करते हुए व्यक्ति का जीवन प्रेम, संतोष, सहनशीलता और शान्ति से परिपूर्ण हो जाता है। संक्षेप रूप में परमात्मा की भक्ति, ज्ञान की प्राप्ति, नैतिक परिपूर्णता, साधारण और सरल जीवन और जनता की भलाई के लिए रचनात्मक प्रयत्न ही मनुष्य को मोक्ष का सही मार्ग दिखाता है।

उन्होंने नारी के मौलिक अधिकारों और स्वतन्त्रता पर बल दिया। वे चाहते थे कि सभी पुरुष, नारी और बच्चे शिक्षा प्राप्त करें। इसलिए उन्होंने अपने स्वार्थों के लिए लोगों द्वारा फारसी भाषा को सीखने का विरोध किया और देवनागरी भाषा को सरल करने और साधारणी जनता द्वारा सीखने के लिए जोर दिया। इस प्रकार उन्होंने गुरुमुखी भाषा का प्रचलन आरम्भ किया। श्रीगुरु नानक देव जी एक वैश्विक धर्म के समर्थक, सच्चे राष्ट्रवादी, पक्के मानवतावादी और प्रेम, शान्ति, एकता और खुशहाली के पुजारी थे।

आज विश्व विध्वंस के किनारे स्थित है क्योंकि आज विश्व धार्मिक कट्टरता, आतंकवाद, युद्ध, आर्थिक विषमता, भ्रष्टाचार, गरीबी, दूषित पर्यावरण जैसी विभिन्न गम्भीर समस्याओं से त्रस्त है और विनाश के मुंहाने पर खड़ा है। इस वर्ष जब हम दुनियाँ के महान् सन्त और समाज के संरक्षक, शुभचिन्तक श्री गुरु नानक देव जी का ५५०वां जन्म दिवस मना रहे हैं तो आओ हम अपने जीवन में उनकी शिक्षाओं पर चलने का प्रण लें। हमारा प्रयत्न होना चाहिए कि हम धार्मिक विद्वेष को भूल कर सभी धर्मों का आदर करें और सह-अस्तित्व तथा विश्वास की भावना से मिलजुलकर रहना सीखें और आने वाली पीढ़ियों के लिए न्यायसंगत और गरिमापूर्ण समाज की रचना करने का प्रयत्न करें।

-बहादुरपुर, होशियारपुर।

गुरु नानक काव्य की मानवीयता

-डॉ. आदित्य आंगिरस

भारतीय साहित्य के इतिहास में संवत् १३७५ से लेकर संवत्१७०० तक के समय में जिस आन्दोलन के कारण समस्त भारतीय उप-महाद्वीप सम्यक्रूपेण प्रभावित हुआ है वह काल हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल के नाम से जाना जाता है। इसका मूल कारण यह हो सकता है कि इस काल में भारतीय समाज के भक्त कवियों में जहां उस परम तत्त्व को सृष्टिकर्ता के रूप में जानने की इच्छा उत्पन्न हुई, वहीं दूसरी ओर उन्होंने सगुण एवं निर्गुण भक्ति के माध्यम से उस परम तत्त्व को जानने एवं साक्षात्कार करने का भी प्रयास किया। हिन्दी साहित्य के इतिहासवेत्ता इस बात को तो स्वीकार करने में कोई भी हिचक न महसूस करेंगें कि हिन्दी साहित्य में यह काल अकारण नहीं आया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जहां इसे पराजित अथवा हतदर्प जाति का भाग्य मान कर अपना अभिमत प्रकट करते हैं वही आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इसे प्राचीन भारतीय परम्परा से स्वभावत: उद्भूत होना माना है। यहां यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि प्राचीनभारतीय परम्परा पर यदि हम दृष्टिपात करें तो वैदिक, उपनिषद्, महाभारत एवं रामायण कालीन विचारधारा का जो स्वरूप हमारे सामने आता है वह निश्चित रूप से आचार्य शुक्ल के मत को पोषित नहीं करता हैं। सन्तमत में कुण्डलिनी शक्ति के बारे में विचार करने से पहले यह आवश्यक बन जाता है कि हिन्दी साहित्य का यदि हम गंभीर अवगाहन करें तो हमारे सामने यह तथ्य उभर कर आता है कि भारतीय संस्कृति में कहीं न कही उस परम तत्त्व को जानने की इच्छा रही है जो मनुष्य को जीवन के श्रेष्ठतम रूप की ओर अग्रसर करने में हमेशा ही उद्यत रही है। समस्त पौराणिक साहित्य इसी तथ्य का प्रतिपादन करते हैं कि मनुष्य उस पराशक्ति के दर्शन करने के लिये हमेशा ही लालायित रहा है जिसे आचार्य द्विवेदी ने हिन्दी साहित्य की भूमिका एवं कबीर के माध्यम से स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

पंजाब के तलवंडी नामक स्थान में १५ अप्रैल, १४६९ को एक किसान के घर गुरु नानक का अवतरण हुआ। यह स्थान वर्तमान में लाहौर से लगभग ३०मील पश्चिम में स्थित है और अब यह 'ननकाना साहब' कहलाता है। इनके पिता का नाम कालू एवं माता का नाम तृप्ता था। उनके पिता खत्री जाति एवं बेदी वंश के थे। वे कृषि और साधारण व्यापार करते थे एवं उसी गाँव के पटवारी भी थे। अत: गुरु नानक देव का बाल्यकाल गाँव के शांत वातावरण में ही व्यतीत हुआ। यह बात तो सर्वमान्य है कि बाल्यावस्था से

ही उनके व्यक्तित्व में एक असाधारणता और विचित्रता थी जो उन्हें सामान्य से विशेषता की ओर अग्रसर करती थी। उनके साथी जब खेल-कूद में अपना समय व्यतीत करते थे। तो वे नेत्र बन्द कर ध्यानावस्था में निमग्र हो जाते थे। गुरु नानक की अन्तर्मुखी प्रवृत्ति तथा विरक्त-भावना से उनके पिता कालू चिन्तित रहा करते थे। नानक को भोला भाला समझकर उनके पिताजी ने उन्हें भैंसे चराने का काम दिया। भैंसे चराते-चराते नानक जी सो गये। भैंसे एक किसान के खेत में चली गयीं और उन्होंने उसकी फ़सल चर डाली। किसान ने इसका उलाहना दिया किन्तु जब उसका खेत देखा गया, तो सभी आश्चर्य में पड़ गये। फ़सल का एक पौधा भी नहीं चरा गया था। गुरु जी का नौ वर्ष की अवस्था में यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। यज्ञोपवीत के अवसर पर उन्होंने पण्डित से कहा-दया कपास हो, सन्तोष सूत हो, संयम गाँठ हो, (और) सत्य उस जनेउ की पूरन हो। यही जीव के लिए (आध्यात्मिक) जनेऊ है। ऐ पाण्डे! यदि इस प्रकार का जनेऊ तुम्हारे पास हो, तो मेरे गले में पहना दो, यह जनेऊ न तो टूटता है, न इसमें मैल लगता है, न यह जलता है और न यह खोता ही है।

संत इस संसार में कभी भी किसी भी प्रकार के सम्प्रदाय का अनुवर्तन नहीं करते हैं बल्कि वे धर्म की मूल आत्मा अनुभूति के वाहक होते हैं और वे धर्म के नाम पर प्रचलित सभी बाह्याडम्बरों को नकार देते हैं। उनकी आस्था का केन्द्र आत्म-तत्व दर्शन है न कि किसी भी प्रकार का पाखण्ड खडा करना। वे संसार के उस बीज को जानते एवं समझते हैं जहां से इस संसार का उद्भव और विकास हुआ है एवं वे संसार की अनित्यता को इन्हीं संदर्भों में व्याख्यायित कर के प्रत्येक व्यक्ति के लिये आत्म-कल्याण का मार्ग प्रशस्त करते हैं। अत: वे अपने पदों में जहां उस ईश्वर के प्रति श्रद्धावान् होकर उसका स्मरण करते हैं वहीं दूसरी ओर वे अपने पदों में इस संसार की अनित्यता के संदर्भ में बात करते हैं एवं संपूर्ण संसार के कार्य व्यापार को "कूड" अर्थात् अनित्य एवं झूठा बताते हुए प्रत्येक व्यक्ति को उस ईश्वर के प्रति श्रद्धावान् होने की भी प्रेरणा देते हैं।

परा-प्राकृतिक संवाद व्यक्ति का स्वयं, या किसी माध्यम द्वारा, चेतना की विशेष अवस्था में पराप्राकृतिक तत्त्वों, जैसे देवी-देवता से मानसिक संपर्क से होने वाला अनुभव है, और इसका परिणाम ज्ञानप्राप्ति, समस्यासमाधान, या कोई विशेष अनुभूति देखा गया है। यह इलहाम या श्रुति का आधार है, और दुनिया के अनेक धर्मों में देखे गए हैं। इस अतार्किक (प्रतिभा या प्रज्ञामूलक) आयाम (देखें भारतीय दर्शन) को हिन्दुओं में ज्ञान, ईसाईयों में नौसिस, बौद्धों में प्रज्ञा, तथा इस्लाम में मारिफ नाम से जानते हैं कुछ लोगों का मानना है कि पराप्राकृतिक तत्त्वों से

संवाद की परम्परा लम्बे समय से रही है। मान्यता है कि संवाद, चेतना की विशेष अवस्थाओं में संभव हैं, और चेतना की इन ऊँचाइयों में जाने की लालसा का प्रमाण तपस्या की अनेकों पद्धतियाँ हैं। पराप्राकृतिक संवाद का लोकहित में प्रसार करना देवकार्य माना गया।

श्री गुरुनानक जी आरंभ से ही भक्त थे अतः उनका ऐसे मत की ओर आकर्षित होना स्वाभाविक था, जिसकी उपासना का स्वरूप हिंदुओं और मुसलमानों दोनों को समान रूप से ग्राह्य हो। उन्होंने घर-बार छोड़ बहुत दूर-दूर के देशों में भ्रमण किया जिससे उपासना का सामान्य स्वरूप स्थिर करने में उन्हें बड़ी सहायता मिली। अंत में कबीरदास की 'निर्गुण उपासना' की ही तरह प्रचार संयुक्त पंजाब में आरंभ किया और वे सिखसंप्रदाय के आदि गुरु हुए। भक्तिभाव से पूर्ण होकर वे जो भजन गाया करते थे उनका संग्रह (संवत् १६६१) ग्रंथसाहब में किया गया है। ये भजन कुछ तो पंजाबी भाषा में हैं और कुछ देश की सामान्य काव्यभाषा हिन्दी में हैं। यह हिन्दी कहीं तो देश की काव्यभाषा या ब्रजभाषा है, कहीं खड़ी बोली जिसमें इधर उधर पंजाबी के शब्द भी आ गए हैं, जैसे चल्या, रह्या। भक्त या विनय के सीधे-सादे भाव सीधी-सादी भाषा में कहे गए हैं, कबीर के समान अशिक्षितों पर प्रभाव डालने के लिए टेढ़े-मेढ़े रूपकों में नहीं। इससे इनकी प्रकृति की सरलता और अहंभावशून्यता का परिचय मिलता है। संसार की अनित्यता, भगवद्भक्ति और संतस्वभाव के सम्बन्ध में उन्होंने कहा है-

इस दम दा मैनूँ कीबे भरोसा, आया आया, न आया न आया।
यह संसार रैन दा सुपना, कहीं देखा, कहीं नाहि दिखाया।
सोच विचार करे मत मन मैं, जिसने ढूँढा उसने पाया।
नानक भक्तन दे पद पर से निसदिन राम चरन चित लाया
जो नर दुःख में दुःख नहिं मानै।
सुख सनेह अरु भय नहिं जाके, कंचन माटी जानै
नहिं निंदा नहिं अस्तुति जाके, लोभ मोह अभिमाना।
हरष सोक तें रहै नियारो, नाहि मान अपमाना
आसा मनसा सकल त्यागि कै जग तें रहे निरास।
काम, क्रोध जेहि परसे नाहि न तेहिं घट ब्रह्म निवासा
गुरु किरपा जेहि नर पै कीन्हीं तिन्ह यह जुगुति पिछानी।
नानक लीन भयो गोबिंद सो ज्यों पानी सँग पानी।

इन्हीं संदर्भों में उन्होंने कई मध्यपूर्वीय देशों की भी यात्रा की एवं वहां के जनसमूह को मनुष्यमात्र की समानता का भी संदेश दिया। यह तो एक ऐतिहासिक तथ्य है कि तत्कालीन समाज में गुलामी की प्रथा, वर्ण/वर्ग और जातिभेदभाव प्रचलित था। उन्होंने पूर्वाग्रहों, जाति-व्यवस्था, के विरुद्ध प्रचार किया। उन्होंने कहा कि सभी चराचर वस्तुओं में प्रभु का प्रकाश है और वे सभी एक ही परम सत्ता के ही प्रतीक हैं- उस ईश्वर के दर्शन केवल श्रद्धा, आस्था एवं संपूर्ण रूप से किये गये आत्मसमर्पण के माध्यम से हो सकते हैं। अतः प्रत्येक मनुष्य का यह कर्तव्य है कि वह उस ईश्वर का सदा ही श्रद्धापूर्वक स्मरण करे। इसके

लिये यह आवश्यक है प्रत्येक व्यक्ति धर्मनिष्ठ रहकर उस दिव्यमार्ग का अनुपालन करे जो उसे आत्म-कल्याण के मार्ग पर अग्रसर करता हो। इन्हीं संदर्भों में उन्होंने सिद्धान्त ''नाम जपो, किरत करो, वण्ड छको,'' का भी सिद्धान्त मनुष्य मात्र को दिया। अत: कहने की आवश्यक्ता नहीं कि उन्होंने संगत एवं पंगत का सिद्धान्त मनुष्यमात्र को दिया। जो कि निम्न प्रकार से है-

१ नाम जपो- गुरु नानक ने समस्त मनुष्यों को सिमरन (स्मरण) और नाम जपने का आग्रह किया क्योंकि वे यह मानते हैं कि मनुष्य की मुक्ति का द्वार उसके द्वारा किय गये कर्म हैं। अत: वे स्मरणरूपी श्रेष्ठतम कर्म को अपने सिद्धान्तों में प्रथम स्थान देते हैं।

२ किरत करो- वे यह मानते हैं कि मनुष्य की मुक्ति का द्वार उसके द्वारा किये गये कर्म हैं। अत: वे उन श्रेष्ठतम कर्म करने की मनुष्यमात्र को प्रेरणा देते हैं जो मनुष्य को स्थायी शान्ति एवं सुख प्रदान करने में सक्षम हों। अत: वे सत्कर्मों पर बल देकर मनुष्य को श्रेष्ठतम कर्म करने का संदेश देते हैं जो जीवन के उच्चतम मूल्यों से प्रेरित हों।

३ वण्ड छकना का अर्थ है ''सांझा करना और एक साथ सेवन करना।'' यह इस समुदाय या साधजीवन संगत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसके अनुसार अपनी धर्मपूर्वक की गई कमाई के अंश को उन व्यक्तियों को देने का प्रावधान किया जो साधनहीन जीवन जी रहे हैं।

गुरु नानक ने इन्हीं संदर्भों में लंगर-व्यवस्था को प्रचलित किया जो एक सामूहिक रसोईघर के रूप में रहा एवं जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को अन्न पाने का अधिकार था। यह व्यवस्था आज के संदर्भों में भी प्रचलित है जहां जातिभेद को भुला कर प्रत्येक व्यक्ति एक पंक्ति में बैठ कर भोजन कर सकता है।

इनके जीवन से जुड़े प्रमुख गुरुद्वारा साहिब-

१ गुरुद्वारा कंध साहिब-बटाला (गुरुदासपुर) गुरु नानक का यहाँ बीबी सुलक्षणा से १८ वर्ष की आयु में संवत् १५४४ की २४वीं जेठ को विवाह हुआ था। यहाँ गुरु नानक की विवाह वर्षगाँठ पर प्रतिवर्ष उत्सव का आयोजन होता है।

२ गुरुद्वारा हाट साहिब-सुल्तानपुर लोधी (कपूरथला) गुरुनानक ने बहनोई जैराम के माध्यम से सुल्तानपुर के नवाब के यहाँ शाही-भंडार की देखरेख की नौकरी प्रारंभ की। वे यहाँ पर मोदी बना दिए गए। नवाब युवा नानक से काफी प्रभावित थे। यहीं से नानक को 'तेरा' शब्द के माध्यम से अपनी मंजिल का आभास हुआ था।

३ गुरुद्वारा गुरु का बाग-सुल्तानपुर लोधी (कपूरथला) यह गुरु नानकदेवजी का घर था, जहाँ उनके दो बेटों बाबा श्रीचंद और बाबा लक्ष्मीदास का जन्म हुआ था।

४ गुरुद्वारा कोठी साहिब-सुल्तानपुर लोधी (कपूरथला) नवाब दौलतारखान लोधी ने हिसाब-किताब में गड़बड़ी की आशंका में

श्री नानकदेव जी को जेल भिजवा दिया। लेकिन जब नवाब को अपनी गलती का पता चला तो उन्होंने नानकदेवजी को छोड़ कर माफी ही नहीं माँगी, बल्कि प्रधानमंत्री बनाने का प्रस्ताव भी रखा, लेकिन श्री गुरु नानक जी ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया।

५ गुरुद्वारा बेर साहिब-सुल्तानपुर लोधी (कपूरथला) में जब एक बार गुरु नानक अपने सखा मर्दाना के साथ वैईं नदी के किनारे बैठे थे तो अचानक उन्होंने नदी में डुबकी लगा दी और तीन दिनों तक लापता हो गए, जहाँ पर उन्होंने ईश्वर से साक्षात्कार किया। सभी लोग उन्हें डूबा हुआ समझ रहे थे, लेकिन वे वापस लौटे तो उन्होंने कहा-एक ओंकार सतिनाम। गुरु नानक ने वहाँ एक बेर का बीज बोया, जो आज बहुत बड़ा वृक्ष बन चुका है।

६ गुरुद्वारा अचल साहिब-गुरुदासपुर अपनी यात्राओं के दौरान नानकदेव यहाँ रुके और नाथपंथी योगियों के प्रमुख योगी भांगरनाथ के साथ उनका धार्मिक वाद-विवाद यहाँ पर हुआ। योगी सभी प्रकार से परास्त होने पर जादुई प्रदर्शन करने लगे। नानकदेव जी ने उन्हें ईश्वर तक प्रेम के माध्यम से ही पहुँचा जा सकता है, ऐसा बताया।

७ गुरुद्वारा डेरा बाबा नानक-गुरुदासपुर, जीवनभर धार्मिक यात्राओं के माध्यम से बहुत से लोगों को सिखधर्म का अनुयायी बनाने के बाद नानकदेव जी ने रावी नदी के तट पर स्थित अपने फार्म पर अपना डेरा जमाया और ७० वर्ष की साधना के पश्चात् सन् १५३९ई. में परम ज्योति में विलीन हुए।

-वी. वी. बी. आई. एस. (पीयू.) साधु आश्रम, होशियारपुर।

१ओंकार सतनाम कर्ता पुरख निर्भौ
निर्वैर अकालमूर्त अजूनि सैभं गुरप्रसादि।

जपुजी सा.

परमात्मा का स्वरूप वर्णन करते हुए गुरु नानक जी कहते हैं कि परमात्मा एक ओंकार स्वरूप है, वह सत्यस्वरूप है, वह आदि पुरुष है, परमात्मा भयरहित है, वह वैर-भाव से रहित है, वह अकाल है अर्थात् उसका अन्त नहीं, वह अयोनि और स्वयं उत्पन्न है- इन विशेषताओं से युक्त परमात्मा को मनुष्य गुरु की कृपा से ही प्राप्त कर सकता है।

श्री गुरु नानक देव जी 'हुकुम रजाई चलणा नानक लिखिआ नाल'

-श्रीमती प्रवीण शर्मा

श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी वाणी 'जपुजी साहब' में सत्य (प्रभु नाम) मार्ग सुझाया है। उनके अनुसार प्रभु आदि और युगों-युगों से सत्य है, एवं वर्तमान और भविष्य में भी सत्य रहेगा-

सोचै सोच न होवई जो सोची लख वार,
चुपै चुप न होवई जो लाइ रहा लवतार,
भुखिया भुख न उतरी जो बन्ना पुरीयामार,
सहस सिआणपां लख होई ता इक न चलै नाल,
किव सचिआरा होइऔ किव कूड़े तुटै पाल,
हुकुम रजाई चलणा, नानक लिखिया नाल।

श्री गुरु नानक देव जी
उस सत्य प्रभु की प्राप्ति जिन साधनों से नहीं हो सकती, सबसे पहले उनका उल्लेख करते हैं-

सोचने मात्र से नहीं- सोचै सोच हो वई....
मौन धारण करने से नहीं-चुपै चुप न होवई....
भूखे रह कर भी नहीं- मुखिया मुख न उतरी....
सारी दुनियाँ के पदार्थ अर्जित करके भी नहीं..जो बन्ना पुरिया.....
हजारों चलाकियों से भी नहीं- सहण सिआणपां....

फिर क्या किया जाए?
कौन-सा मार्ग हमें सत्य तक पहुँचा सकता है?
कैसे झूठ की दीवार ढह जाए?

उपरोक्त इन तीनों प्रश्नों के उत्तर गुरु जी ने इस प्रकार शीर्षक रूप में दिये हैं-

हुकुम रजाई चलणा, नानक लिखिआ नाल

अर्थात् प्रभु की प्राप्ति के लिए हमें प्रभु के हुकुम (आज्ञा, कानून) का पालन करना होगा।

वाहेगुरु (भगवान्) जो राजाओं का राजा है, जिसकी सरकार सारी सृष्टि, कुल ब्रह्माण्ड तक फैली हुई है, उस वाहेगुरु का हुकुम या मर्जी जीव-जन्तुओं के लिए एक-सा इन्साफ, एक-सी भलाई वाले कानून या नियमों की शक्ल में प्रकट हो रही है। इसी बात की पुष्टि श्री गुरु ग्रन्थ साहब में अनेक स्थानों पर हुई है-

(क) हरि का एक अचम्भा देखिआ
मेरे लाल जीओ।
जो करे सो धर्म, न्याय राम।।

(ख) जाई पूछहू सोहागणी का है,
कित थाती सोह पाइऔ?

उत्तर में सोहागणी ने कहा-

जो कुछ करै सो भला करी मानीऔ
हिकमत हुकुम चुकाइयै।
इनी थाती सोह पाइऔ।
आप गवाइए ता सो पाइए।
औरहू कैसी चतुराई।।

वास्तव में हुकुम, रजा तथा भाणा- इन तीनों का पारस्परिक सम्बन्ध है। परमात्मा का हुकुम जो कुदरत में निहित है, यह परमात्मा का भाणा है। जब अहं (हउमै) का बन्धन कट जाए, तब

मनुष्य परमात्मा के भाणे से मुक्त अनुभव करता है। वह अकाल पुरुष वाहेगुरु प्रभु की रजा और भाणे में रहता है। नीचे लिखे प्रासंगिक उद्धरण देखिये-

क) प्रभु मिलने की यह निशानी,
मन इको सचा हुकुम पछाणी।

ख) हरि के भाणै जन सेवा करै,
बूझै सच सोई।

ग) भाणै मनियै मनिआं सुख होई
हरि के भाणै जन्म पदार्थ पाइअे
उत्तम मत होई।

घ) जो कुछ करते सब तेरा भाणा।
हुकुम बूझे से सच पछाणा।।

ङ) सब कुछ तेरा वरतदा, सब तेरी बडआई।

च) भाणा मन्ने सदा सुख होई,
नानक सच समावे सोई।

छ) जब लग हुकुम न बूझता, तब चलेऊ दुखिया।
गुरु मिलि हुकुम पछानिआ, तब ही ते सुखिया।।

ज) भाणा मन्ने सदा सदा सुख होई।

झ) तेरा कीता जिस लागै मीठा।
घटि-घटि पार ब्रह्म तिन जन डीठा।।

ञ) कह नानक जिन हुकुम पंछाता।
प्रभु साहब का तिन भेद जाता।।

आखिर सारा खेल तो मन का है। प्रभु से दूर होकर मन पाँच चोरों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) की संगति में अपने अहम् (झूठ की दीवार) को मजबूत करता है। ज़ब मन दुनियां में सब कुछ पाकर भी शांति, सुख नहीं पाता तो सोचने पर मजबूर हो जाता है कि कमी कहाँ रह गई। दुःखी हृदय गुरु (गुरु उपदेश) की शरण में आता है। गुरु उपदेश, उसके सोए मन को जगाता है और झूठ पर आधारित जीवन की व्यर्थता का अहसास करता है। पुनः मन काम, क्रोध, लोभ और मोह से प्रेरित होकर झूठ की तरफ जाना चाहता है, पर चैतन्य आत्मा गुरु का उपदेश सुनकर सत्य (परमात्मा) की ओर जाना चाहती है। इस (मन) को जिन पाँच अवस्थाओं या पड़ावों से गुजरना पड़ता है, श्री गुरु नानक देव जी ने उन्हें धरम खण्ड, ज्ञान खण्ड, सरम (श्रम) खण्ड, करम खण्ड, सच खण्ड की संज्ञा दी है।

१. धरम (धर्म) खण्ड- धर्म खण्ड की अवस्था में जागृत मन प्रकृति को देखकर उससे प्रेरित होता है कि किस प्रकार रात-दिन, मौसम, हवा, अग्नि, पाताल- एक नियमबद्ध तरीके से अपना-अपना धर्म निभा रहे हैं। उसी प्रकार हम अपने कर्मों के अनुसार सत्य या झूठ के मार्ग पर अग्रसर हो जाते हैं। प्रभु-सत्य है, उसका दरबार सच्चा है। वहाँ, वही श्रेष्ठ गिना जाएगा, जो सत्य का धारणी बनेगा, उसमें प्रभु की कृपादृष्टि के चिह्न (सत्य, सन्तोष, विनम्रता, दया, प्रेम आदि) प्रकट हो जाएँगे। कौन सच्चा है, कौन झूठा है- इसका निर्णय प्रभुदरबार में होगा अर्थात् अगले जीवन में पता चलेगा कि कौन प्रभु को पा गया, भा गया है।

२. ज्ञान खण्ड- सत्य मार्ग की यात्रा में जिज्ञासु के ज्ञान की विशालता का दायरा देशकाल की सीमाओं को लांघ जाता है, उसे यह समझ आ जाती है कि धर्म कमाने की कोशिश केवल मैं ही

नहीं कर रहा बल्कि कई ऋषि-मुनि, देवता भी इस शुभ कार्य में लगे हुए हैं। धर्म कमाने के लिए कितनी ही कर्मभूमि है, इसका कोई अन्त नहीं। इस अवस्था में चित्त में आनन्द की अनुभूति होती है।

३. सरम खण्ड- (श्रम खण्ड) इस अवस्था में मन उद्यमी हो जाता है। श्रम करने लगता है। गुरु उपदेश से झूठ (अवगुणों) का त्याग कर, दया-धर्म, क्षमा, प्रेम आदि गुणों से अलंकृत होकर सुन्दर रूप धारण कर लेता है, जो प्रभु को भा जाता है। सत्यमार्ग के यात्री से नेकी दरियादिली सब के भले की भावना स्वत: फूटने लगती है। उसकी मति, उसका मन, उसकी सोच सब प्रखर होने लगते हैं अच्छाई के मार्ग पर।

४. करम खण्ड- इस पड़ाव पर पहुँचते-पहुँचते मनुष्य के अन्दर आत्मबल भर जाता है। उसका मन झूठ के साथ लोहा लेने वाला योद्धा बन जाता है। वह शुभ कार्य के लिए सदा लालायित रहता है। वह सत्य की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान देने के लिए भी नहीं झिझकता। वह जान जाता है कि शरीर नश्वर है। उसे शरीर से मोह नहीं रहता। कबीर जी के शब्दों में-

जिस मरने ते जग डरे मेरे मन में आनन्द।
मरने ही ते पाइए पूरन परमानन्द॥

५. सच खण्ड- गुरु जी ने कहा-

मन मेरे घात मरि जाय।
बिन मन गुण कैसे हरि पाय।

अर्थात् जब हम अपने मन को पूरी तरह गुरु चरणों में समर्पित कर देते हैं तो चंचलता (भटकन) समाप्त हो जाती है। तब मैं (न मैं कुछ हूँ, न मेरी कुछ इच्छा है, न मेरा कुछ है) समाप्त हो जाती है। अत: बिना मन मरे प्रभु को कैसे पा सकते हैं। यह मानसिक अवस्था सचखण्ड की है, जहाँ प्रभु, सत्य विराजते हैं। यहाँ मनुष्य आज्ञाकारी बन गया है, वह जैसी-जैसी प्रभु की आज्ञा होती है, वैसे ही कार्य करता है- **जिब जिब हुकुम, तिवै तिवै कार।** मनुष्य को इस बात का बोध होना चाहिए कि प्रभुकृपा से उसे मनुष्ययोनि का वरदान मिला है। मनुष्य होने के नाते प्रभु से प्राप्त विवेक का उपयोग प्रभु को जानने-पहचाने-पाने के लिए करना है। यही मनुष्यजीवन का लक्ष्य है। रामायण में भी कहा गया है- **जाहि विधि राखे राम, ताहि विधि रहना।** निष्कर्ष में, सत्य (प्रभु) प्राप्ति का सही मार्ग यही है-

हुकुम रजाई चलणा, नानक लिखिआ नाल।

-२४०५, सैक्टर ६५, फेज-११, मोहाली (पंजाब)
मोबा: 85568-60204

श्री गुरु नानक देव जी की वाणी में लोकोपदेश की भावना

–प्रो. लवलीन कौर

भारत की पावन भूमि पर कई संत-महात्मा अवतरित हुए हैं, जिन्होंने धर्म से विमुख सामान्य मनुष्य में अध्यात्म की चेतना जागृत कर उसका संबंध ईश्वरीय मार्ग से जोड़ा है। ऐसे ही एक अलौकिक अवतार गुरु नानक देव जी हैं। कहा जाता है कि गुरु नानक देव जी का आगमन ऐसे युग में हुआ जो देश के इतिहास के सबसे अंधेरे युगों में था। उनका जन्म १५ अप्रैल, १४६९ में लाहौर से ३० मील दूर दक्षिण-पश्चिम में तलवंडी रायभोय नामक स्थान पर हुआ जो अब पाकिस्तान में है। बाद में गुरु जी का जन्म स्थान होने के कारण इस स्थान का नाम ननकाना साहिब रखा गया। गुरु जी बचपन से ही गंभीर प्रवृत्ति के थे। बाल्यकाल में जब उनके अन्य साथी खेल-कूद में व्यस्त होते थे तो वह अपने नेत्र बंद कर चिंतन-मनन में खो जाते थे। गुरु नानक जी ने घर बार छोड़ दिया और दूर-दूर के देशों में भ्रमण किया। अंत में कबीरदास की निर्गुण उपासना का प्रचार पंजाब में आरंभ किया और वे सिख संप्रदाय के आदिगुरु हुए।

सिक्ख ग्रंथों में उल्लेख मिलता है कि श्री गुरु नानक देव जी नित्य बेईं नदी में स्नान करने जाया करते थे। एक दिन वे अन्तर्ध्यान हो गये और उन्हें परमात्मा का साक्षात्कार हुआ।''[१] उन्होंने देश के विभिन्न हिस्सों के साथ ही विदेशों की भी यात्राएं कीं और जनसेवा का उपदेश दिया। बाद में वे करतारपुर में बस गये और १५२१ई. से १५३९ई तक वहीं रहे।

''गुरु जी ने अपने अनुयायियों को उपदेश दिया कि परमात्मा एक, अनन्त, सर्वशक्तिमान् और सत्य है। वह सर्वत्र व्याप्त है।''[२] गुरु जी की वाणी भक्ति, ज्ञान और वैराग्य से ओत-प्रोत है। गुरु जी संत, कवि और समाजसुधारक थे। धर्म केवल थोथी रस्मों और रीति-रिवाजों का संकेत बनकर रह गया था। सामाजिक जीवन में भारी भ्रष्टाचार था और धार्मिक क्षेत्र में द्वेष और कशमकश का दौर था। न केवल हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच में ही, बल्कि दोनों बड़े धर्मों के भिन्न-भिन्न संप्रदायों के बीच भी वैमनस्य था। भिन्न-भिन्न संप्रदायों में भी कट्टरता और वैर-विरोध की भावना पैदा हो चुकी थी। उस समय समाज की हालत बहुत खराब थी। ब्राह्मणवाद ने अपना एकाधिकार बना रखा था। उसका परिणाम यह था कि गैर-ब्राह्मण

१ सुखदेव मुनिः 'जपुजी साहिब', पृ.१२

२ जसबीर सिंहः 'जीवन वृत्तान्तः श्री गुरु नानक देव जी', पृ. १५१

को वेद, शास्त्राध्ययन से हतोत्साहित किया जाता था। निम्न-जाति के लोगों को पढ़ना बिल्कुल वर्जित था। इस ऊंच-नीच का गुरु जी पर बहुत प्रभाव पड़ा।''[३] इस ऊँच-नीच का विरोध करते हुए गुरु जी अपनी वाणी 'जपुजी साहिब' में कहते हैं कि ''नानक उत्तम-नीच न कोई' अर्थात् ईश्वर की दृष्टि में छोटा-बड़ा कोई भी नहीं है। जब व्यक्ति ईश्वर के नामस्मरण द्वारा अपना अहंकार दूर कर लेता है तब व्यक्ति ईश्वर की नज़र में सबसे बड़ा है-

नीचा अंदर नीच जात, नीची हूं अति नीच।
नानक तिन के संगी साथ, वडियां सिऊ कियां रीस।।[४]

समाज में समानता के लिए गुरु जी ने कहा कि ईश्वर हमारा पिता है और हम सब उस के बच्चे हैं और पिता की निगाह में छोटा-बड़ा कोई नहीं होता-

नानक जंत उपाइके, संभालै सभनाह।
जिन करते करना कीआ, चिंताभिकरणी ताहर।।[५]

जब हम 'एक पिता एकस के हम वारिक' बन जाते हैं तो पिता की निगाह में जात-पात का सवाल ही नहीं पैदा होता। गुरु नानक देव जी जात-पात का विरोध करते हैं। उन्होंने समाज को बताया कि मानवजाति तो एक ही है फिर यह जाति के कारण ऊँच-नीच क्यों? गुरु जी ने कहा कि जब व्यक्ति ईश्वर दरगाह में जाता है तब उसकी जाति नहीं पूछी जाती, केवल आपके कर्म ही देखे जाएंगे। गुरु जी ने समाज में समानता का नारा दिया। गुरु जी ने कहा कि केवल ईश्वर का नाम ही अंत तक हमारा एक मात्र सहारा है-

अपने ही सुखसों सब लागे, क्या दारा क्या मीत।
मेरो मेरो सभी कहत हैं, हित सों बाध्यौ चीत।।
अंतकाल संगी नहिं कोऊ, यह अचरज की रीत।।[६]

ईश्वर का नामस्मरण ही इस संसाररूपी सागर को पार कराने में हमारी सहायता करता है-

नानक भव-जल-पार परै ज़ो गावै प्रभु के गीत।[७]

गुरु नानक देवजी ने पित्तर पूजा, तंत्र-मंत्र और छुआ-छूत की भी आलोचना की। इस प्रकार हम देखते हैं कि गुरु साहिब हिन्दुओं और मुसलमानों में एक सेतु के समान हैं। हिन्दु उन्हें गुरु एवं मुसलमान पीर के रूप में मानते हैं। हमेशा जाति-पाति का विरोध करने वाले गुरु जी ने सबको समान समझकर 'गुरु का लंगर' शुरु किया जिससे एक ही पंक्ति में बैठकर भोजन करने की प्रथा शुरु हुई जहां किसी प्रकार का कोई भेद-भाव नहीं किया जाता। गुरु जी ने अपनी सरल वाणी से जनमानस के हृदय को जीत लिया। लोगों को बेहद सरल भाषा में समझाया कि सभी

---

३ रुपिन्दर सिंह: गुरु नानक: जीवन और शिक्षाएँ, पृ. २०६
४ सोढी तेजा सिंह: 'श्री गुरु नानक देव जी', पृ. ३०९
५ चन्द्रिका प्रसाद शर्मा: 'गुरु नानक देव', पृ. ३७६
६ हरीश दत्त शर्मा: 'सत्गुरु नानक देव', पृ. १२१
७ गिरिराज शरण अग्रवाल: 'गुरु नानक देव' पृ. ११२

इंसान एक-दूसरे के भाई हैं, ईश्वर सबके पिता हैं। चारों दिशाओं में उन्होंने उदासियों के माध्यम से धर्म का प्रचार किया और सामाजिक सद्भावना की मिसाल कायम की। उनके अनुसार, ''भगवान् एक है, लेकिन उसके कई रूप हैं। वह सभी का निर्माणकर्त्ता है और वह खुद मनुष्य का रूप लेता है।''[८]

गुरु जी ने ईश्वरीय गुणगान करते हुए मानवजाति को संदेश दिया है कि प्रभु के गुणों का गुणगान करने से एवं मन में प्रेम-भावना रखने से समस्त दुःखों का नाश एवं सुखों का भण्डार प्राप्त होता है:-

गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ।
दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ''[९]

गुरु जी ने प्रभु की वाणी को ही सर्वोत्तम माना है। गुरु की वाणी ही शब्द एवं वेद है। प्रभु इन्हीं शब्दों एवं विचारों में निवास करते हैं। गुरु ही शिव, ब्रह्मा एवं पार्वती माता है:-

गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं
गुरमुखि रहिआ समाई।
गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा
गुरु पारबती माई।''[१०]

स्पष्ट है कि गुरु जी ने अपनी वाणी एवं उपदेशों के माध्यम से समष्टि का कल्याण किया। जाति-पाति का विरोध कर मानवता की भावना को उजागर किया, पाखण्डों एवं अंध-विश्वासों का भी अपने उपदेशों के माध्यम से खण्डन किया।

-असिस्टैंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, आर्य कॉलेज गर्ल्ज़ सैक्शन, लुधियाना (पंजाब)
मोबा: 87258-00025

८ कुलबीर सिंह थिन्द: 'गुरु नानक देव जी', पृ. १३६
९ भाई चत्तर सिंह: 'कथा पूर्णमाशी', पृ. १९९
१० वही, पृ. १२५

पड़ि पुसतकि संधिआ वादं।
सिल पूजसि बगुल समाधं।
मुखि झूट विभूखण सारं।। श्री नानकवाणी

गुरु नानक जो धार्मिक आडम्बरों की ओर संकेत करते हुए कहते हैं कि लोग पुस्तकें पढ़ते हैं, संध्या करते हैं परन्तु संध्या का रहस्य नहीं जानते, पंडिताई दिखाने के लिए वाद-विवाद करते हैं, पत्थर को पूजते हैं और बगुले के समान झूठी समाधि लगाते हैं। मुख से झूठ बोलकर बुरी वस्तु को अच्छी वस्तु बनाकर दिखाना चाहते हैं।

श्रीगुरु नानक देव जी की वाणी में मोक्ष की अवधारणा

–डॉ. सविता सचदेवा

भारतीय संस्कृति में जीवन का उच्चतम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति है। यही जीवन का परम उद्देश्य है। मोक्ष का अर्थ है–छूट जाना अर्थात् बन्धे हुये प्राणी का बन्धनों से छूट जाना। इस प्रकार मोक्ष का सामान्य अर्थ है दुःखों से छूट जाना।[1] मोक्ष की परिभाषा को स्पष्ट करते हुये गुरु नानक देव जी कहते हैं कि सांसारिक बन्धनों का त्याग ही मोक्ष हैं।[2] इन सांसारिक बन्धनों को उन्होंने मिथ्या का परदा कहा है।[3] सांसारिक प्रपञ्चों को वे भ्रम मानते है।[4] गुरुनानकदेव जी के अनुसार मुक्ति के दो अर्थ हैं– यदि कोई मनुष्य ज्ञान द्वारा ब्रह्म को अपनी सम्पूर्ण इच्छाओं का त्याग करके जान लेता है तो वह मोक्ष प्राप्त कर लेता है। उन्होंने कहा मोक्ष का अधिकारी वही हो सकता है जिसमें ईश्वर का सानिध्य हो। संसार में जीवित रह कर इच्छाओं तथा दुःखों से छूट जाना ही मनुष्य–जीवन मुक्त कहलाता है। गुरु जी ने अपनी समस्त मोक्षविषयक शिक्षाओं में यही उपदेश दिया है कि सांसारिक आवरणों, बन्धनों और कष्टों से मुक्त हो जाना ही मुक्ति है। संसार में मनुष्य को उन्होंने सहज मुक्ति का मार्ग बतलाया है।

गुरु नानकदेव जी ने मुक्ति प्राप्त करने के लिये प्रभु के 'नाम' सिमरन को उपयुक्त बतलाया है। नामरूपी मार्ग का अनुकरण ही मोक्ष के द्वार के परम सहायक के रूप में मनुष्य का पथ–प्रदर्शक बनता है। गुरु जी तो नाम की 'विस्माद' अवस्था को अन्तिम लक्ष्य स्वीकार करते है। 'नाम–जापु' को जब ध्यानपूर्वक गायन किया जाता है तब 'जपु' की अवस्था होती है 'जपु अवस्था' में साधक का मन परमात्मा के ध्यान में केन्द्रित हो जाता है इसके द्वारा परमात्मारूपी अमृत को प्राप्त किया जा सकता है।[5]

गुरु नानक देव जी के अनुसार भक्तिमार्ग मुक्ति का साधन है। भक्ति के बगैर मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती।[6] गुरु जी के अनुसार एक साधक का एकमात्र लक्ष्य तो प्रभु होना चाहिये क्योंकि वह है तो मोक्ष भी उसी में है ईश्वर की निरन्तर उपासना में निरत रहना ही मोक्ष है। गुरु जी कहते हैं कि शरीर के अन्दर काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं मद य पांच चोर निवास करते हैं। ये चोर मनुष्यों को बलपूर्वक विषयों की ओर आकृष्ट करते हैं।[7] इन विषयों की तरफ से अपना ध्यान हटाने वाला व्यक्ति ही मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

गुरु नानकदेव जी के अनुसार गुरु परमात्मा को प्राप्त करने का और मोक्ष तक पहुँचाने वाला सबसे उत्तम साधन है। गुरुकृपा होने से ही साधक

---

१ मुच्यते दुःख–बन्धनैर्यत्र स मोक्षः। पुरुषार्थ चतुष्ट्य

२ मुकति भई बन्धन गुरि खोल हे सबदि सुरति पति पाई (मलारपदे ४/५)

३ किव कूडै तुटै पालि। (जपुजी पउड़ी १)

४ परपंच करि भरमाई हैं। (मारु सोलेह ४/१०)

५ जपहु त एको नामा।। अवरि निराफल कामा।। रसना नामु जपहु तब मथिए इन बिधि अमृत पावहु।। राग सूही चऊपदे

६ बिन भगती धर वासु न होए सुनिये लोक सथाऐ।। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब पृ.६८९.

७ एकनगरी पंच चोरवसीआले बरजत चोरी धावै। दिहदस माल रखे जो नानक मोख मुकति से पावै।। (नानक वाणी ३५८।१/।१)

को परमात्मा की प्राप्ति होती है।[८] गुरु धारण किये बिना मन की मैल खत्म नहीं होती।[९] सतगुरु के वगैर परमेश्वर की भक्ति नहीं हो सकती- **"होरु कितै भगति न होवे विन सतिगुरु के उपदेश।"**

गुरु नानक देव जी गुरु की महता को स्पष्ट करते हुये कहते हैं कि गुरु अपने उपदेश द्वारा मनुष्य को परमात्मा का साक्षात्कार करवाता है।[१०] सच्चा गुरु उस जहाज की तरह हैं जिस पर चढ़ कर मनुष्य पार उतर जाता है[११] और वह मोक्ष को प्राप्त कर लेता है।-**'सतगुरु पूरा जो मिले पाईए रतन विचार। मुक्ति पदारथा पाईये अवगुण मेटनहार।।** (अष्टपदी १०।१)

गुरु जी ने गुरु की महता के साथ-साथ मोक्ष के लिये सत्संग एवं कीर्तन का भी महत्त्व बतलाया है। कीर्तन के द्वारा साधक परमात्मा से मिलता है। वह नाम के गायन, श्रवण, एवम् मनन से मरमात्मा को अपने हृदय में लाता है।[१२] गुरु नानक देव जी कहते हैं जो मनुष्य परमात्मा के नाम का संकीर्तन करते हैं वो मुक्ति की अवस्था को प्राप्त होते है।[१३] प्रभु के मनन से ही मनुष्य को मुक्ति प्राप्त होती है एवं उसे परमात्मा का रसास्वादन होता है-

मने पावहि मोख दुआरु। मनै पर वारै साधारु।।
मने तरै तारे गुरु सिख। मनै नानक भवहि न भिख।
ऐसा नाम निरंजन होई। जो को मनि जाणै मनि कोई।।
पऊड़ी१५

गुरुनानक देवजी कहते हैं कि मुक्ति को प्राप्त करने वाला साधक मुक्त कहलाता है। जो शरीर को धारण करते हुये हरिभक्ति अथवा आत्मज्ञान द्वारा बन्धनों से मुक्ति प्राप्त कर लेता है वह जीवन-मुक्त कहलाता है। जो व्यक्ति देह के नष्ट होने के पश्चात् मुक्ति प्राप्त करता है वह विदेहमुक्त है। जीवनमुक्त को ही गुरुनानक देवजी ने मुक्ति माना है। उनके अनुसार जब मनुष्य का हृदय निर्मल हो जाता है, वह मन पर जीत प्राप्त कर लेता है और निष्कामभाव तथा आसक्तिरहित होकर प्रभु का सिमरन करते हुये जीवन व्यतीत करता है तो वही मनुष्य मोक्ष का अधिकारी होता है। वह मनुष्य सदैव परमात्मा के हुकुम एवं रजा में रह कर पुरुषार्थ करता है तथा परमात्मा के नाम को आधार बनाकर जीवन से मुक्ति प्राप्त करता है, और अन्यों को भी मुक्ति प्रदान कराने में सहायता करता है।

जिनि नाम धिआइआ गए मुसकति घालि।
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि।।

-संस्कृत-विभाग, स्वरूप रानी सरकारी कालेज (स्त्रियाँ) अमृतसर
मोबा: ९५०१५००४८८

---

८ गुरु परसादी दुरमति खोई। जहँ देखा तँह एको सोई।

९ बिन गुरु मैलन उतरे बिन हरि कओं घर वासु।। गुरु ग्रन्थ साहिब पृ.१८

१० सतुगुरु विरहु वारिआ जितु मिलिऔ खसम सामालिया। गुरुग्रन्थ साहिब ४७०

११ सो गुरु करऊ जि साचु दड़ावै। अकथु कथावै सबदि मिलावै।। रागु धनासरि अष्टपदीया

१२ सत्संगत नाम निधानु है जिथों हरि पाऊआ।। गुरु प्रसादि घटि चानना अन्धरे गवाईया।। गुरुग्रन्थ साहिब पृ. १२४५

१३ जो जन करि कीरतन गोपाल।। तिस कयों पोहि न सवै यमकाला पृ. ८६७

श्री गुरु नानक देव जी-एक सर्वश्रेष्ठ गुरु

–प्रो. हरप्रीत कौर

भारत ऋषियों, मुनियों, पीर-पैगम्बरों, संतों की धरती मानी जाती है। कई महान् गुरुओं ने इस धरती पर जन्म लेकर इसे पवित्र किया। ऐसे ही एक महान् विश्व-शिक्षक एवं गुरु थे-सिक्खों के प्रथम गुरु-श्री गुरुनानक देव जी। गुरु नानक देव जी सिक्ख-धर्म के संस्थापक एवं जन्मदाता थे। गुरु जी ने ही सिक्ख धर्म की नींव रखी। वास्तव में गुरु जी ने सम्पूर्ण मानवता को जीवन जीने का सिद्धान्त दिया, जिसे आज हम सिक्ख-धर्म कहते हैं। इस धर्म का मुख्य उद्देश्य मानवता की सेवा करना तथा एक अकालपुरख (परमेश्वर) का सिमरन करना ही है। यह धर्म मनुष्य को निरर्थक कर्म-काण्ड तथा अंधविश्वास त्याग कर सदाचार के लिए प्रेरित करता है। गुरु नानक देव जी ने इन उद्देश्यों के प्रचार के लिए उस समय के धर्म के ठेकेदारों, ब्राह्मणों, काज़ीओं, योगिओं, इत्यादि के विरोध का भी सामना किया। उन्होंने समस्त संसार को एक विचारधारा दी, उनके अनुसार भगवान् एक है, उसके रूप अनेक हैं। नाम एक है। वह सबको उत्पन्न और पालन करने वाला वाहेगुरु एक है। श्री गुरु नानक देव जी के समय वर्णाश्रम प्रणाली (जातिवाद) प्रचलित थी, जिसके अन्तर्गत ब्राह्मणजाति ही सर्वोच्च्व जाति थी; अन्य जातियां नीची थीं, उन्हें धर्म का कोई कार्य करने का अधिकार नहीं था।[1] मुस्लिम धर्म के अधिकारी हिन्दुओं पर जुल्म करते थे। उन पर ज़बरन अपना धर्म थोपना इनका काम था।

उस समय में स्त्री की दशा अत्यन्त दयनीय थी। वह कोई भी धार्मिक कार्य नहीं कर सकती थी। उसकी अपनी सोच का कोई अस्तित्व नहीं था। उस समय समाज आडम्बरों और अन्धविश्वासों में जकड़ा हुआ था। सर्वत्र झूठ तथा पाप का बोल-बाला था। उस स्थिति का वर्णन गुरु नानक देवजी ने ऐसे किया है-

कलि काती, राजे कासाई,
धरमु पंख करि उडरिया।
कूड़ु अमावस, सचु चन्द्रमा,
दीसै नाही कह चड़िया।।

(श्रीगुरुग्रंथ साहिब जी, माझ की वार, पृ. १४५)

श्री गुरु नानक जी का जन्म तलवंडी (जो वर्तमान समय में पाकिस्तान के शेखपुरा ज़िले में हैं) में सम्वत् १५२६ में (१५ अप्रैल १४६९) हुआ। यह स्थान गुरुद्वारा जन्मस्थान, ननकाणा साहिब में स्थित है। गुरु नानक देवजी के पिता श्री महता कल्याण दास (महता कालू राय) थे। गुरुजी की माता का नाम तृप्ता था। उनकी एक बड़ी बहन थी, बेबे नानकी। उन्हीं के नाम पर गुरु जी का नाम नानक रखा गया।

श्री गुरु नानक देवजी का जब जन्म हुआ, उस समय जिस दाई ने सबसे पहले उनके दर्शन किए, वह धन्य हो गई। उसने पिता महता कालू

१. जीवनगाथा के सिद्धान्त- श्री गुरुनानकदेव जी- स. किरपालसिंह चंदन, पृ. १०

को बताया कि यह कोई साधारण बालक नहीं है, यह कोई दिव्य आत्मा है। एक ऐसा बालक जो कभी भी नहीं रोता था, केवल मुस्कुराता रहता था। समस्त परिवार में बेबे नानकी ने ही सर्वप्रथम अपने दिव्य भाई के मुख पर चमकता दिव्य प्रकाश अनुभव कर लिया था। परिवार के पंडित पं. हरिदयाल को बुलाया गया, उसने भी कहा कि यह आम बालक नहीं है, ये सब लोगों का प्रिय होगा, संपूर्ण विश्व इसे पूजेगा, सब कुछ होगा इसके पास। गुरु जी बचपन से ही दयालु थे। जब भी दरवाजे पर कोई भिखारी , गरीब इत्यादि आता, तो भागकर घर से पैसा, खाना या गहना, जो भी मिलता, उसे लाकर दे देते। पांच वर्ष की आयु में वे दिव्य बाते करने लगे थे।

गुरु जी को सात वर्ष की आयु में पंडित गोपाल के पास शिक्षाहेतु भेजा गया। वहाँ उनकी सीखने की तीव्र गति से पं. गोपाल भी आश्चर्यचकित रह गए। उन्हें अहसास हुआ कि यह कोई दिव्य आत्मा ही है। इसी प्रकार फिर संस्कृत सीखने क लिए उन्हें पं. ब्रिजनाथ के पास भेजा गया। वहाँ भी पं. ब्रिज नाथ आप की असाधारण प्रतिभा से प्रभावित हुए। फिर १३ वर्ष की आयु में उन्हें फारसी सीखने के लिए मौलवी कुतुबद्दीन के पास भेजा गया। मौलवी को भी गुरु जी ने अपने दिव्य प्रकाश से धन्य कर दिया। एक दिन गुरुजी ने वहाँ बैठे बैठे 'सी-हरफी' लिख डाली, जिसमें केवल आध्यात्मिक बातें तथा परमेश्वर की प्रशंसा के शब्द लिखे थे। इस पर मौलवी ने सिर झुका कर कहा कि यह अल्लाह ही है, जो नानक के मुख से बोल रहा है।

पिता महता कालू ने सोचा कि गुरु नानक देव जी को किसी कार्य की ओर लगाया जाए। उन्होंने पुत्र को पशु चराने का कार्य सौंप दिया। एक दिन पशु चराते-चराते पेड़ के नीचे बैठ कर समाधि में लीन हो गए। पशुओं ने एक किसान के खेतों को चरते-चरते बर्बाद कर दिया। इस पर उस किसान ने पिता के पास गुरु जी की शिकायत की तथा हरजाना माँगा। परन्तु जब सबने वहाँ जाकर खेतों को देखा, तो खेत पहले से भी सुन्दर दिख रहे थे।

दस वर्ष की आयु में माता-पिता ने गुरु जी का यज्ञोपवीत संस्कार करवा दिया परन्तु गुरु जी ने जनेऊ डलवाने से मना कर दिया और पूछा कि 'क्या ये धागा मेरी मृत्यु के बाद भी मेरे साथ रहेगा। अगर ऐसा नहीं है, तो यह जनेऊ मैं नही पहनूँगा। यदि इस प्रकार का कोई जनेऊ है तो डाल दीजिए, जो अन्त के बाद भी मेरे साथ रह कर मेरी रक्षा करे।' उन्होंने कहा कि दया, संतोष,संयम इत्यादि गुणों को धारण करना ही वास्तविक जनेऊ पहनने के समान है, क्योंकि यही कर्म आपकी मृत्यु के बाद भी आप के साथ रहते हैं। इस पर उन्होंने बाणी में लिखा है-

दया कपाह संतोखु सूतु जतु गंढी सतु वटु ।।
एहो जनेऊ जीय का, हईत पाडे घतु ।।
नानक तगु न तुटई , जे तगि होवै जोरु ।।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिबजी, आसा की वार, सलोक महला १, पृ. ४७१)

सोलह वर्ष की आयु में आपकी शादी बटाला के मूलचंद (मूला क्षत्रीय) की बेटी सुलक्खणी के साथ हुई। शादी के उत्सव के समय की एक घटना के अनुसार एक दीवार बहुत ज्यादा हिल रही थी, लोगों ने कहा कि यह गिर जाएगी। परंतु गुरु जी ने कहा कि यह दीवार कभी नहीं

गिरेगी। उस स्थान पर अब गुरुद्वारा कंध साहिब (कंध अर्थात् दीवार) बना हुआ है और वह दीवार अभी भी वहाँ पर है। गुरु जी के दो पुत्र श्रीचन्द तथा लखमी दास हुए।

गुरुनानक देव जी अपने साथी मरदाना के साथ तलवंडी से लगभग २४ कि.मी. दूर एक गाँव चूहड़काणा में वस्तुएं खरीदने जाते थे। एक दिन उन्हें वहाँ साधुओं का टोला मिला, जो भूखे थे। गुरु जी ने मिली राशि से उन भूखे साधुओं को खाना खिला दिया। अब उस स्थान पर गुरुद्वारा सच्चासौदा है।

गुरुजी का कीर्तन से अतिप्रेम था। उनके अनुसार परमेश्वर तक पहुँचाने का सर्वश्रेष्ठ साधन कीर्तन ही है। आप रागों में कीर्तन करते थे। आपके साथ भाई मरदाना रबाब बजाते थे। लगभग ५० वर्ष तक भाई मरदाना गुरु जी के साथ रहे और उनकी मृत्यु भी करतारपुर में गुरु जी की संगति में ही हुई।

गुरु नानक देव जी के जीजा जै राम जी सुल्तानुपर के नवाब दौलत खान लोधी के पास नौकरी करते थे। वह गुरुजी को अपने साथ ले गए तथा उन्हें मोदीखाने में हिसाब-किताब रखने के काम पर लगवा दिया। गुरु जी का काम अनाज तथा पैसे का हिसाब रखना था। गुरु जी अपनी कमाई में से ही एक बड़ा हिस्सा ज़रूरतमंदों को दे देते थे। इससे आम लोग उनसे प्रेम करने लगे थे पर कुछ रिश्वतखोर लोगों ने उनकी शिकायत कर दी। इस पर जब जाँच की गई तो अन्त में अनाज अतिरिक्त ही निकला। इस के बाद नवाब दौलत खान भी गुरु जी का प्रशंसक बन गया।

सुल्तानपुर के पास काली वेईं नदी बहती थी। जिसमें गुरु जी रोज़ स्नान करने के लिए जाते थे तथा उसके बाद प्रभु-भक्ति में लीन हो जाते थे। साथ में मरदाना रबाब बजाते थे। गुरु जी का कीर्तन सुनने के लिए लोग इकट्ठा हो जाते। गुरु जी सबको अंधविश्वास छोड़ कर एक अकालपुरख का सिमरन करने को कहते। एक दिन गुरु जी नदी में स्नान करने गए और दो दिन तक अलोप रहे। तीसरे दिन नदी से दूर एक कबरिस्तान में बैठे दिखे। गुरु जी ने उपदेश दिया।

ना को हिन्दु, ना मुसलमान।

नबाव दौलत खान और सुल्तानपुर के काजी ने गुरु जी को अपने साथ नमाज़ पढने को कहा सब लोग नमाज़ पढने लगे। परन्तु गुरु जी मुस्कुराते रहे। पूछने पर गुरु जी ने बताया कि वह किसके साथ नमाज़ पढ़ते। नवाब तथा काज़ी, दोनों का ही ध्यान नमाज़ में नहीं था। काज़ी सोच रहा था कि उसके घर में घोड़ी का नवजात बच्चा कुएँ में न गिर जाए और नवाब, कंधार में घोड़े खरीदने के ख्यालों में गुम था। इस घटना के द्वारा गुरु जी ने एकाग्रचित होकर भक्ति करने का उपदेश दिया। बाद में गुरु जी ने सुल्तानपुर छोड़ कर मानवता तथा धर्म के प्रचार के लिए चारों दिशाओं में भ्रमण करने का फैसला लिया।

गुरु जी अपने परिवार, बड़ी बहन एवं माता-पिता से आज्ञा लेकर जीवन-उद्देश्य की पूर्ति के लिए भाई मरदाना के साथ निकल पड़े। लगभग ३५वर्ष उन्होंने यात्रा में बिताए। पंजाब में कुछ स्थानों पर भ्रमण कर वे लम्बी यात्रा पर निकल गए। कुछ विद्वानों के अनुसार उन्होंने चार उदासियाँ (लम्बी यात्राएं) कीं तथा अधिकतर के अनुसार तीन उदासियाँ कीं जो इस प्रकार हैं-

(क) प्रथम उदासी–हिन्दु तीर्थ स्थानों की ओर (सितम्बर १५०७ से नवम्बर १५१५ तक)

(ख) द्वितीय उदासी–सुमेर पर्वत की ओर (सितम्बर १५१७ से १५१८ के मध्य तक)

(ग) तृतीय उदासी–इस्लाम धर्म–स्थानों की ओर (१५१८ से नवम्बर १५२१ तक)

इन उदासियों का मुख्य उद्देश्य मानवता का भला करना, लोगों को अंधविश्वास से निकालकर सच्ची प्रभु–भक्ति में लगाना था। उन्होंने ने ये सभी यात्राएं पैदल कीं। माना जाता है कि १५०० से १५२४ के बीच लगभग २८००० कि. मी. का रास्ता तय किया। गुरु जी दुनिया के दूसरे ऐसे व्यक्ति हुए,जिन्होंने सर्वाधिक यात्रा की।

प्रथम उदासी का लगभग सात वर्ष का समय था। इसके अन्तर्गत सुल्तानपुर, तुलांबा (वर्तमान समय का मखदमपुर, ज़िला मुल्तान), पानीपत, दिल्ली, बनारस, नानकमत्ता(ज़िला नैनीताल, उत्तराखण्ड)टाण्डा वणजारा (ज़िला रामपुर), कामरूप, असा देश (असम), सैदपुर (एमनाबाद, पाकिस्तान) पस्रूर, सियालकोट (पाकिस्तान) यात्राएं कीं।

इन यात्राओं में सबको मानवता का संदेश दिया, जीवन जीने की रीति बताई। एक बार गुरु जी सैदपुर में भाई लालो के घर ठहरे। वहाँ के एक धनी मलिक भागो ने गुरु जी को प्रीति–भोज पर आमंत्रित किया, पर गुरु जी ने आमंत्रण अस्वीकार किया। क्योंकि मलिक भागो की कमाई पाप तथा रिश्वत की कमाई है। इसके विपरीत भाई लालो की कमाई मेहनत की है। मलिक भागो को गुरु जी ने सच्ची मेहनत की कमाई करने का उपदेश दिया। इसी प्रकार हरिद्वार में गुरु जी ने लोगों के सूर्य को पानी देकर अपने पितरों तक पहुँचने के भ्रम को देखा। गुरु जी ने उन्हें इस भ्रम से निकालने के लिए स्वयं दूसरी ओर पानी देना आरम्भ कर दिया और कहा कि वे भी अपने खेतों को पानी दे रहे हैं। पूछने पर उन्होंने कहा कि जब इस धरती पर ही पानी इतनी दूर नहीं पहुंच सकता, तो पितरलोक तक कैसे जायेगा। फिर आगे गुरु जी गोरखमता पहुँचे तथा योगियों को ज्ञान दिया। बनारस में गुरु जी ने भक्त कबीर तथा भक्त रविदास जी के अनुयायिओं से भेंट की।

द्वितीय उदासी में गुरु जी ने सुमेर पर्वत पर सिद्ध योगियों से चर्चा की तथा उनका मन शांत किया, उन्हें सच्ची भक्ति की प्रेरणा दी।

तृतीय उदासी में मुस्लिम धर्मस्थानों की ओर चल दिए। तीन वर्ष के इस समय में उन्होंने पीरों, फकीरों, मौलवियों को उत्तम मार्ग दिखाया तथा शेख़ फ़रीद जी की बाणी एकत्र की, जो गुरु ग्रन्थसाहिब में सम्मिलित है। गुरु जी मक्का, मदीना,बगदाद भी गए तथा विश्व को ज्ञान का उपदेश दिया। गुरु जी ने स्त्री को समाज में ऊँचा स्थान दिलाने के प्रयत्न किए। गुरु जी ने कहा कि जो प्राणी परमेश्वर की दृष्टि में प्रभु–प्रेम में लीन है, वही व्यक्ति महान् है, चाहे वह स्त्री है या पुरुष।

सो क्यो मदा आखीऐ, जितु जंमेहि राजान।।

(श्री गुरु ग्रंथसाहिब जी, आसा की वार महला १, पृष्ठ ४७३)

वापसी में गुरु जी पंजाब की तरफ चल पडे। रास्ते में सैदपुर फिर से भाई लाला के घर रुके। तब भारत पर बाबर ने हमला कर दिया। गुरु जी और मरदाना जी समेत सबको कैदी बना लिया।

परन्तु गुरु जी ने निडर होकर बाबर को भी समझाया तथा ज्ञान देकर उसका हृदय-परिवर्तन किया। बाबर सबको रिहा कर वापस चला गया।

१५२१ नवम्बर में गुरु जी करतारपुर आ गए तथा शेष समय यहीं रहे। यहाँ आकर भी गुरु जी प्रतिदिन विभिन्न स्थानों पर धर्म-प्रचार के लिए जाते थे। १५२२ में गुरु जी के माता-पिता का देहान्त हो गया तथा १५३४ में भाई मरदाना भी परलोक सिधार गए। २२ सितम्बर, १५३९ को गुरु जी परमात्मा में विलीन हो गए।

श्री गुरु नानक देवजी एक महान् प्रचारक, समाज-सुधारक तथा विश्व-गुरु थे। उन्होंने संपूण संसार को उपदेश दिया। उनके अनुसार जीवन जीने के तीन नियम हैं-

किरत करो, नाम जपो, वण्ड छको।

अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति को मेहनत की ही कमाई करनी चाहिए, साथ ही एक ही परमेश्वर (अकाल पुरख) का नाम जपना चाहिए, तथा आपस में मिल-जुल कर इस प्रकार रहना चाहिए, जिस के पास धन अधिक है, उसे गरीबों की सहायता करनी चाहिए। गुरु जी एक ऐसे ही समाज की रचना करना चाहते थे,जिसमें न तो कोई अत्यधिक धनी हो, न ही कोई बहुत ज्यादा गरीब। गुरु जी के अनुसार मानवशरीर हमें विशेष मनोरथ को पूर्ण करने के लिए मिला है। प्रभु के गुणगान द्वारा ही अपने जीवन को सार्थक करना है। परमेश्वर काल-रहित है अर्थात् वह न जन्म लेता है न मरता है।

गुरु नानक देव जी ने सभी धर्मों, जातियों को एक समान समझा, केवल मनुष्य के कर्म ही उसे ऊँचा या नीचा बनाते हैं, धर्म, जाति या लिंग नहीं। इसीलिए गुरु नानक देव जी को पूरी दुनिया में, हर धर्म के लोग स्मरण करते हैं उन्होंने १५वीं शताब्दी में जिस उत्तम विचारधारा की मशाल जलाई, वो आज भी हमारे मन को रौशन कर रही है। गुरु नानक देव जी शायद एकमात्र ऐसे संत थे, जिन्होंने कविता तथा संगीत की शक्ति से भारत में एक बहादुर कौम को जन्म दिया। डा. राधाकृष्णन ने अपने एक भाषण में कहा था-

''गुरु नानक ने एक ऐसी कौम बनाने का प्रयत्न किया, जिस में पुरुषों, स्त्रियों में स्वाभिमान हो, परमात्मा तथा उसके भक्तों के लिए श्रद्धा हो तथा उनमें सांझीवालता की भावना हो।''[२]

गुरु नानक देव जी ने हमें एक अद्वितीय विचारधारा दी, जो वैज्ञानिक तथा तर्कशील है और विश्व-स्तर पर स्वीकार्य है। उन्होंने मानव-जाति को धर्म की सर्वश्रेष्ठ परिभाषा दी। उन्होंने जीवन से भागना नहीं, जीवन जिया कैसे जाता है, यह बताया। श्री गुरु नानक देव जी एक सर्वश्रेष्ठ गुरु थे, हैं और सदैव रहेंगे।

-असिस्टैंट प्रोफैसर, संगीत गायन विभाग, आर्य कॉलेज, लुधियाना।
फोन. नं. ८७२५८४७०९८

२ जीवनगाथा के सिद्धान्त-श्री गुरु नानकदेव जी-स. किरपालसिंह चंदन, पृ.१११

श्री गुरु नानक वाणी: सदाचार का संकल्प

-डॉ. परबजीत कौर

गुरु नानक साहिब का मूल उद्देश्य परम सत्य की प्राप्ति है। गुरु साहिबान ने सदाचार के माध्यम से भविष्य की दुनिया के लिए एक व्यावहारिक संदेश दिया है। सदाचार का अर्थ मानवीय व्यवहार, अच्छे आचरण और अच्छी आदतों से लिया जाता है। 'हमारे चिन्तन में नैतिकता और सदाचार एक दूसरे के पूरक और पर्यायवाची शब्द है।'[१] पश्चिम चिंतक इसको समभावी (Ethics Morale) मानते हैं।[२] अंतर केवल यह है कि यहाँ हम अपने रोजाना कर्म को धर्म समझकर करते हैं वहां पश्चिम के चिन्तक इसको फर्ज समझकर निभाते हैं। इस मार्ग पर चलने वाला गुरुसिक्ख कहलाता है। यह गुरुसिक्ख ही गुरुमुख है और गुरुमुख के मार्ग पर न चलने वाले को मनमुख कहा जाता है।

गुरु नानक देव जी की विश्वव्यापी मानवता की भलाई और आधुनिक मनुष्यों के लिए आत्मिक, सामाजिक समस्याओं का समाधान देने योग्य वाणी का आधार शान्ति है, जो केवल सिद्धान्त ही नहीं बल्कि योजनाबद्ध ढंग से जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरित भी करती है। मनुष्य की आंतरिक शांति ही उसके आत्मविश्वास को दृढ़ कर अच्छे जीवन के लिए उत्साहित भी करती हैं। गुरुवाणी सदाचार को आदर्श से सम्बन्धित करती है। गुरुवाणी का संकल्प कर्त्तव्य की पहचान है। गुरु साहिब का सामाजिक सदाचार और धर्म का संकल्प दो अलग-अलग वस्तु नहीं है। धर्म और सदाचार एक-दूसरे के पूरक हैं। वास्तव में धर्म मानवीय कर्त्तव्यों को विवेक तथा ज्ञान देता है, वही ज्ञान सामाजिक सदाचार द्वारा प्राप्त होता है। इसलिए गुरु साहिब ने पहले उन कर्मकाण्डियों को सम्बोधित किया जो सदाचार के गुणों से रहित थे और कर्मकाण्डों में फँसे हुये धर्म की चर्चा कर रहे थे-

सासतु बंदु बकै खड़ो भाई कर्म करो संसारी।।
पाखंडि मैल न चुकई भाई अंतरि मैलु विकारी।।
इस विधि डूबी माकुरी भाई उड़ी सिर के भारी।।[३]

गुरु नानक की वाणी वैदिक संस्कृति और नैतिकता से जुड़ी हुई हिंदुधर्म की प्रेरणा है। गुरु नानक की वाणी में समानता का सिद्धांत शामिल है क्योंकि उनकी वाणी वैदिक संस्कृति और उपनिषदों से प्रभावित है। संपूर्ण विश्व का विकास एक ही तत्त्व ब्रह्मतत्त्व से हुआ है। जगत् के विकास का आधार परम तत्त्व हैं। गुरु नानक ने भी ब्रह्म की

१. भाई काहन सिंह नाभा, गुरुशब्द रत्नाकर महान् कोष, पृष्ठ १५१.
२. Website's Third New International Dictionary, पृष्ठ १४६९.
३. गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ ६३५

एकता पर अपनी वाणी में विचार दिए है। परम तत्त्व केवल एक है और इसका वाचक 'ॐ' है। वह सत्यस्वरूप और चिरकाल तक रहने वाला है। सृष्टि का सर्जनहार है, निर्भय है, निर्वैरी है, अकाल है अर्थात् काल से मुक्त है और अजन्मा है। स्वयं प्रकाशित है और गुरुकृपा से उसे जाना जा सकता है-

१ओंकार सतनाम कर्ता पुरष निर्भौ निर्वैर अकालमूर्त अजूनि सैभं गुरप्रसादि।[४] (जपुजी सा.)

गुरु नानक की वाणी में सदाचार और शील संतोष एक ऐसा जीवनमूल्य है जो व्यक्ति को उन्नत जीवन की ओर अग्रसर करता है। इसलिए तो आत्मा में ही परमात्मा का स्थान है-

१) सत संतोखि सबदि अति सीतलु सहनभाइ लिबि लाइआ।।

२) आत्म महि रामु, रामु महि आत्मु चीनसि गुरु बीचारा।।

सदाचारी मनुष्य हर श्वास से अपने प्रभु का जाप करता है। जैसे-जैसे मनुष्य प्रभु की कृपा से सत्य की और बढ़ता है। वैसे-वैसे सच्चाई और धर्म के मार्ग पर चलता जाता है।

सदाचार/नैतिकता एक ऐसी शक्ति है जो मनुष्य को परमात्मा से जोड़ने का कार्य करती है। मनुष्य परोपकारी और आदर्श सामाजिक भी तभी बन सकता है जब वह सद्गुणों को अपनाने और अवगुणों को त्याग देता है। सदाचारी व्यक्ति परमात्मा का सिमरन करते हुए परमात्मा को प्राप्त कर लेता है। वह निर्लेप होकर अच्छे बुरे की पहचान करने लगता है। वह भ्रमों का खण्डन कर झूठ छोड़ सत्य की ओर अग्रसर होता हुआ अपने में अहंकार नहीं आने देता। वह 'मिठुत नीवी नानका गुण चंगियाईयाँ ततु' के गुणों का धारक बनता है। वह किसी से कड़वा नहीं बोलता वह मीठे शब्दों से लोगों का मन मोह लेता है-

नानक फिकै बोलिअै तनु मनु फिका होए।।
फिको फिका सदीअै फिके फिकी सोए।।[५]

सदाचारी मनुष्य 'जत सत्य' स्वरूप धारण कर, सच्चे नाम का जनेऊ धारण कर प्रभु का सेवक बनकर जीता है। उसे खोखले रीति रिवाज और पाखंड प्रभु के रास्ते से भटकाते हैं-

दया कपाह संतोखु सूतु जतु गंढ़ी सतु बटु।
इहु जनेऊ जीअ का हई त पांडे घतु।।

आसा दी वार, पाउड़ी ३४

गुरु नानक देव जी ने अलग-अलग धर्मों के रीति-रिवाजों का खण्डन किया। वे तीर्थ स्नान, व्रत, जनैऊ धारण, आरती जैसी रीतियों का त्याग करने का आदेश देते हैं। गुरु साहिब की वाणी मनुष्य को स्वतन्त्र जीवन जीने के लिए प्रेरित करती है। 'अहं' की तुलना दीर्घ रोग से की गई है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकाररूपी विकारों के घोड़े मनुष्य को सही रास्ते से भटका देते हैं। गुरुमुख के रंग में रंगा सदाचारी मनुष्य प्रभु से डरता है। नैतिकता के रास्ते पर चलने वाले व्यक्ति रोजी-रोटी के लिए पाखंड नहीं करते बल्कि

४. जपुजी साहिब, मूलमंत्र

५. गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ ४७३

सच्ची किरत करते हैं और अपनी किरत में से जरूरतमंद लोगों की मदद करते हैं। वे किरत करना और वंड छकना को अपने जीवन का लक्ष्य मानते हैं।

गुरु नानक वाणी में आचरण की उच्चता को सत्य से भी ऊँचा दर्जा दिया गया है। 'सचहु डरै सबको ऊपरि सच्च आचार।' जपुजी साहिब की दूसरी पाउड़ी की अन्तिम तुक में गुरु साहिब की 'किव सचिआरा होईये किव कूडे तुरै पालि' में सचिआरा होने के लिए जिज्ञासु को क्या करना चाहिए+किव कूडे तुरे पालि उक्ति को समझना है। गुरु साहिब के अनुसार सदाचारी होने के लिए कूड की दीवार को तोड़ना जरुरी है। कूड की कतार में खड़े होकर परमात्मा को पाया नहीं जा सकता अगली तीसरी पाउड़ी में कहा है कि प्रभु के हुक्म में रहकर झूठ की दीवार को तोड़कर सच्चा मनुष्य बना जा सकता है।

श्री गुरु नानक साहिब के क्रांतिकारी विचार जीवन की प्रगतिवादी कदरों-कीमतों को अपनाने पर बल देते हैं। डॉ. बिक्रम सिंह घुम्मन लिखते हैं-' गुरु नानक साहिब ने 'आसा दी वार' में समकालीन युग-चिन्तन करने के साथ-साथ एक सर्व-सांझे समाज का निर्माण और सदाचारी जीवन अपनाने की प्रेरणा दी। गुरु जी ने मनुष्य को सांसारिक जीवन में आडम्बरों को छोड़ अच्छे गुणों को ग्रहण करने की प्रेरणा दी। झूठे मान-सम्मान, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार का त्याग कर निम्रता, सेवा, सन्तोष, प्यार और दया को अपनाने की शिक्षा दी। गुरु जी के अनुसार अच्छे कर्म करने वाले को मान-सम्मान और बुरे कर्म करने वालों को दण्ड अवश्य मिलता है-

आपीनै भोग भोग कै हीइ भसमड़ि भऊर सिधाईय।
वड़ा होआ दुनीदार गलि संगलु घति चलाया।।[६]

(आसा दी वार, पाउड़ी ३)

गुरु नानक साहिब की वाणी के अनुसार भक्ति और सामाजिक कर्मों को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। उन्होंने गृहस्थ-जीवन अपनाने के लिए प्रेरित किया है। किरत करने और वंड छकने के सिद्धान्तों को दृढ़ करते हुए पराये धन पर अधिकार करने की निंदा की है। उनके अनुसार किसी दूसरे के अधिकारों पर अपना अधिकार जताना सदाचार के अन्तर्गत नहीं आता-

जे रतु लगै कपड़े जामा होए पलीतु।
जो रतु पीवहि माणसा तिन क्यों निर्मल चीतु।।[७]

गुरु नानक देव जी ने समाज में जाति-पाति और वर्ण-व्यवस्था के अन्तर्गत आपसी घृणा की निन्दा की है। प्रभु को भुला कर मायाजाल में फंसना ठीक नहीं-

कूडु राजा कूड परजा कूडु सभु संसार।
कूडु मंडप कूडु माड़ी कूडु बैसणहार।।[८]

गुरुजी के अनुसार यह संसार मुसाफिरखाना

---

६. बिक्रम सिंह घुम्मन, आसा दी वार: चिन्तन और कला, पृष्ठ ५४-५५

७. गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ १४०

८. वही, १४०

है। मनुष्य का शरीर नाशवान् है। अनेक लोग इस दुनियाँ को छोड़कर चले जाते हैं परन्तु मनुष्य दो घड़ी विलाप कर फिर माया के जाल में फंस जाता है। गुरु नानक जी के विचार में मनुष्य को कोई ऐसा कर्म नहीं करना चाहिए जिसके कारण उसको पश्चात्ताप करना पड़े और ईश्वर के घर पर शर्मिन्दा होना पड़े। जो मानव गुरु की शिक्षा को सबसे उत्तम मानते हैं; नाम सिमरन करते हैं, छल कपट से दूर रहते हैं, वह गुरुस्वरूप बन जाते हैं। जो माया जंजाल में फंसे भटकते रहते हैं, वे मनमुख होते हैं। ज्ञान के प्रकाश से मनुष्य का आंतरिक एवं बाहरी चरित्र प्रकाशित हो जाता है। गुरु नानक वाणी में विद्या और सदाचार का समीप का सम्बन्ध बताया है। वह व्यक्ति पढ़ा लिखा भी मूर्ख है जो अपने आंतरिक पाँच विकारों को वश में नहीं कर सकता। गुरु नानक की दृष्टि में सभी मनुष्य समान हैं। इस जगत् में जन्म लेने वाला कोई ऊँचा नहीं और कोई नीचा नहीं क्योंकि परमात्मा ने सिर्फ एक ही जाति बनाई है और वह है मनुष्यजाति–

सभु को ऊँचा आखिए, नीचु न दीसै कोई।
इकने भांडे साजियै, इकु चानणु तिहु लोई।
करमि मिलै सचु पाइए, धुरि बखस न मेटै कोई।।[९]

अर्थात् यदि सब को ऊँचा देखोगे तो कोई भी नीचा दिखाई नहीं देगा। ईश्वर ने सभी मानव एक से बनाए हैं। तीनों लोक में एक ही प्रकाश फैला है। गुरु नानक की वाणी में ऊँच-नीच का व्यवहार दृष्टिगत नहीं होता। मानवतावादी भावना को शिष्यों के सामने स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं–

मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली धिआन की करही विभूति।
खिंथा कालु कुआरी काइया, जुगति डंडा परतीति।
आइ पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जितु।
आदेसु तिसु आदेसु आदि अनीलु अनादि अनाहित जुगु जुगु एको वेसु।।[९]

मानव-मानव के बीच खड़ी ऊँच-नीच की दीवार को धराशायी कर देने के लिए जरूरी है– सदाचार। अर्थात् जिसका व्यवहार सत्य पर आधारित है। सदाचारी मानव दुनियाँ को प्रेम के बंधन में बाँधकर उन्नत जीवन व्यतीत कर सकता है। गुरु नानक की दृष्टि में ऐसा व्यक्ति गुरु ही हो सकता है। उन्होंने सदाचार के लिए 'नानक गुर समानि तीरथु नहीं कोइ साचे गुरु गोपाल।' जैसे विचार व्यक्त किए हैं। इस तुक में गुरु के प्रति गुरु नानक देव की असीम श्रद्धा और विश्वास व्यक्त हुए हैं।

गुरु नानक वाणी के अनुसार सामाजिक दुःखों का अनुभव और इनको दूर करने के लिए अपनी सामर्थ्य और सदाचार ही एक मार्ग है। गुरु नानक साहिब ने सामाजिक दुःखों की पीड़ा को इस सीमा तक अनुभव किया है कि वह प्रभु को उलाहना तक दे गये–

एती मार पई कुरलाणे तैं की दरदु न आइआ।।[१०]

मानव जीवन में सत्य और सदाचार का अटूट रिश्ता है। सत्य से ही सदाचार के गुण आते हैं। सत्य सदाचारी कर्मों में ऐसे रहता है जैसे मोतियों

---

९. जपुजी साहिब पाउड़ी २८

१०. गुरु नानक साहिब, बाबर वाणी

में धागा। गुरु नानक वाणी में ज़गह-जगह सत्य और सदाचार का मिला-जुला रूप प्रस्तुत किया गया है-

नानक वरवाणै बेनती जिन सच्चु पलै होइ ।।[११]

गुरु नानक वाणी में जैसे धर्म और सामाजिक सदाचार को अच्छा कहा है वैसे ही राजनीति और उस समय की शासन प्रणाली की दुराचारता की निंदा भी की है। सदाचार के अन्तर्गत जब हम किसी के स्वाभिमान को चोट पहुँचाते हैं या अधिकारों को छीन लेते हैं तो इसे सदाचार के संदर्भ में पाप माना जाता है। गुरुवाणी हमें बार-बार ऐसा पाप करने से रोकती है। गुरुवाणी 'अमलों के निबेड़े', 'जैसा बीजै सो लूणे', 'चंगे अमल करेंदिया', 'दरगह आए कंमु', 'आपे बीज आपे ही स्वाह' जैसे वाक्य मनुष्य को बुरे कर्म छोड़कर अच्छे कर्म करने के लिए प्रेरित करती है।

मन को अहंकार की सीमा छूने से रोकना एक विशेष प्रयत्न है। सेवा, विनम्रता और क्षमा ये तीनों गुण हमारे अहंकार को अनुशासित करते हैं।

गुरु नानक काल के में स्त्री की दशा निम्न थी। समाज का महत्वपूर्ण हिस्सा होने पर भी उसे सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक अधिकारों से वंचित कर दबाया जाता था। गुरु नानक साहिब ने इस अत्याचार का विरोध किया और स्त्री को समाज में पुरुष के समान अधिकार देने की बात कही-

सो क्यों मंदा आखीए, जितु जमहि राजान।[१२]

आधुनिक युग भी मध्यकालीन युग से कोई बहुत अच्छा नहीं है। ऐसे वातावरण में गुरु नानक साहिब की वाणी ही सहायक हो सकती है। गुरु नानक की वाणी में समन्वित जीवन, समन्वित दर्शन और समन्वित ज्ञान का प्रतिपादन किया गया है। इन मूल्यों को स्वीकार करके ही मनुष्य मन की शान्ति का अनुभव कर सकता है। ऐसे चुनौतियों भरे माहौल से बाहर निकलने के लिए गुरु नानक वाणी ही प्रासंगिक लगती है और उत्तम मानवीय जीवन व्यतीत करने के लिए उत्साहित करती है।

-पंजाबी विभाग, शान्ति देवी आर्य महिला कॉलेज, दीनानगर, जिला गुरदासपुर।

---

११. गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ ४६८

१२. वही, पृष्ठ ४७३

गुरुनानकदेवचरितम् महाकाव्य में दार्शनिक विचार

-डा. आशीष कुमार

कविवर जगदीश प्रसाद सेमवाल ने गुरुनानकदेवचरितम् महाकाव्य में भारतीय दर्शन और सिक्खमत के संदर्भ में अक्षर-ब्रह्म, ब्रह्म की व्यापकता, आत्मा, जगत्, सृष्टिउत्पति, अधिकारी, प्रकृति-विकृति, पुनर्जन्म, मुक्ति आदि का विशदता से विवेचन किया है। कवि पर भारतीय वेदान्त-परम्परा, सांख्य और श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का अत्यधिक प्रभाव है और उनके आध्यात्मिक विचार विशेषत: उन्हीं के अनुरूप हैं। कवि ने स्थान-स्थान पर विभिन्न प्रसंगों में श्री गुरु नानक देव जी के माध्यम से गुरु ग्रन्थ साहिब में निहित विविध दार्शनिक विषयों का सरल एवं सरस कथात्मक शैली से स्पष्टीकरण किया है।

ब्रह्म की सर्वव्यापकता-

ब्रह्म शब्द का अर्थ है बढ़ना। जो तत्त्व महान्, व्यापक, निरवधि और निरतिशय महत्व से सम्पन्न है वह ब्रह्म है।[1] ब्रह्मसूत्र के शांकरभाष्य के अनुसार ब्रह्म नित्य-शुद्धबुद्धमुक्तस्वभाव, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् है।[2] तैत्तिरीयोपनिषद् में ओंकार को ब्रह्म कहा गया है।[3] श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में ब्रह्म की सर्वव्यापकता के विषय में कहा गया है-

'घट घट अंतरि ब्रहम समाहू'[4]।

'घटि घटि बिआपि रहिआ भगवंत'[5]।

'अन्तर एको बाहर एको सब में एको समायीए'[6]।

'अन्तर बाहर एको जाणे'[7]।

अंतरि बाहरि पुरखु निरंजनु आदि पुरखु आदेसो[8]।

'घट घट अंतरि सरब निरंतरि केवल एक मुरारी'[9]।

श्री गुरुनानकदेवचरितम् महाकाव्य में ब्रह्म की सर्वव्यापकता को इसी रूप में प्रस्तुत किया गया है-

उच्चैः स एवास्ति स एव नीचैर्,
अग्रे स एवास्ति स एव पृष्ठे।
वामेतरे चास्ति स एव वामे,
स एव सर्वत्र विराजतेऽत्र ।।[10] इत्यादि

अर्थात् ऊपर वह ही स्थित है, वह ही नीचे स्थित है, वह ही आगे और पीछे स्थित है, दाएं और बाएं वह ही स्थित हैं, वह ही सब ओर

१ शब्दकल्पद्रुम, तृतीय भाग, पृष्ठ-४४२-४४
२ ब्रह्मसूत्र शंकरभाष्य-१.१.१
३ ओमिति ब्रह्म तैत्तिरीयोपनिषद् अनुवाक-७
४ गउडी. ब. अ. (म: ५) पृ-२५८
५ गउडी सुखमनी (म: ५) पृ. २८३
६ देवगन्धारी (म: ५) पृ. ५२८
७ रामकली गोष्टि (म:५) पृ. ८४३
८ भैरओ (म: १) पृ-११२६
९ आसा (भ. नामदेव) पृ. ४८५
१० गुरुनानकदेवचरितम्-३.२८; २९; ३०

विराजमान है। वह ही स्थल और जल में स्थित है। वह नीचे से लेकर आकाश में स्थित है। प्रत्येक पक्षी और पशु में स्थित है। वही प्रत्येक वृक्ष-वनस्पती में विराजमान है। प्रत्येक तृण में और कण में वह ही स्थित है। प्रत्येक वन और घर में वह ही स्थित है। वह ही प्रत्येक स्थान और जन में स्थित है। उसके विना यहां कोई भी वस्तु नहीं है। इस प्रकार गुरुनानकदेवचरितम् में ब्रह्म को निराकार, निर्गुण, अनन्त, सर्वत्र व्यापक, असीम बल से युक्त वर्णित किया गया है।

आत्मा-

व्यापकता आत्मा का स्वरूपगत धर्म है, आशय यह है कि जो आप्त या सभी में व्याप्त हो वह आत्मा है। गीता में आत्मा को अलिप्त एवं सर्वप्रकाशक कहा गया है। यथा आकाश चारों ओर भरा हुआ है परन्तु सूक्ष्म होने के कारण उसमें किसी का लेप नहीं लगता, वैसे ही देह में सर्वत्र रहने पर भी आत्मा को किसी का लेप नहीं लगता। जैसे एक सूर्य सारे जगत् को प्रकाशित करता है, वैसे ही आत्मा सब शरीर को प्रकाशित करता है।[११] गुरुनानकदेवचरितम् महाकाव्य में कहा गया है कि सब स्थानों पर एक ही व्यापक महान् आत्मा है।[१२]

जगत्-

ऋग्वेदीय पुरुषसूक्त में वर्णित पुरुष के शरीर को ही संसार का उपादान कारण माना गया है। संसार की प्रत्येक वस्तु उसी की सत्ता पर निर्भर है। भूत, भविष्य तथा वर्तमान भी वही पुरुष है।[१३] तैत्तिरीयोपनिषद् में ब्रह्म को जगत् का कारण मानते हुए कहा गया है कि जिससे यह सब भूत उत्पन्न होते हैं।[१४] श्रीगुरुग्रन्थसाहिब में कहा गया है कि वह ब्रह्म ही आप ही कर्ता है और आप ही भोक्ता है। यथा-''जो किछु करे सु आपे आपि''[१५] तथा 'आपे भुगता''[१६]

गुरुनानकदेवचरितम् में भी ब्रह्म को जगत् का कर्ता और जीवरूप से भोक्ता कहा गया है। यथा- कर्तुं स शक्नोति, भोक्तुं स शक्नोति[१७] तथा 'बीजं च संसारमहीरुहस्य'[१८] अर्थात् ब्रह्म ही संसाररूपी वृक्ष का बीज है। जिससे यह दृश्य-अदृश्य, स्थावर-जंगम वर्ग अर्थात् जगत् उत्पन्न होता है। युग के अन्त में प्रलय आने पर उसी में क्रमपूर्वक विलीन हो जाता है। उस के विना इन्हें कोई स्थापित नहीं कर सकता।[१९] गुरुनानकदेवचरितम् में संसार की नश्वरता के विषय में भी संकेत करते हुये लिखा गया है-'सर्वं विनश्वरं लोके'[२०] अर्थात् लोक (जगत्) में सब कुछ

---

११ गीता-१२.३२-३३
१२ गु. ना. दे. च-६.१९
१३ ऋग्वेद, १०.१०, २.१४
१४ तैत्तिरीयोपनिषद्-३.१
१५ आसा (म. ३) पृ-३६४
१६ तत्रैव (म: ४) पृ-३४८
१७ गुरुनानकदेवचरितम्-३.३१
१८ वही, २३.३०
१९ वही, ३.२३
२० वही, २१.२६

नष्ट होने वाला है।

सृष्ट्युत्पत्ति-

सृष्ट्युत्पत्ति के विषय में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में लिखा गया है कि समस्त ब्रह्माण्ड की रचना ओंकार से हुई है। जैसे-

प्रथम काल जब करा पसारा।

ओंकार ते सृष्टि उपारा।।[२१]

एकोंकार एक पसारा ऐकै अपर अपारा।

एक विसथीरन एक सम्पूर्ण ऐकै प्रान अधारा।।[२२]

ब्रह्मसूत्र में प्रतिपादित किया गया है- 'जन्माद्यस्य यतः'' अर्थात् उस आदिब्रह्म से ही सृष्टि उत्पन्न होती है। गुरुनानकदेवचरितम् में ओंकारस्वरूप ब्रह्म को 'निसर्गस्यायमेवाद्यः' अर्थात् सृष्टि का आदि कहा गया है।[२३] सभी लोक, समुद्र, नक्षत्र, प्राणी और समस्त भुवन ओंकार से ही उत्पन्न होते हैं।[२४] ओंकार से ही नभ, नभ से वायु, वायु से तेज, तेज से जल, जल से पृथ्वी और उस पृथ्वी पर चार प्रकार के जीव (अंडज, जरायुज, उदभिज और स्वेदज) उत्पन्न होते हैं।[२५] स्थूल व सूक्ष्म भेद से सृष्टि दो प्रकार की बताई गई है।[२६] उन दोनों में से वृद्धि और क्षय जिसमें होता है वह स्थूलरूपा सृष्टि है। जिसमें वृद्धि और क्षय नहीं होता, सदा शाश्वती हे, वह सूक्ष्मरूपा सृष्टि है।[२७] गुरुनानकदेवचरितम् में सृष्टि की प्रागवस्था का वर्णन करते हुए कहा गया है-तब न असत् था, न सत् था, तर्क-प्रमा के लक्षणों से बोधशून्य था, तब उसका (ब्रह्म) रूप गहन और गम्भीर था।[२८] इस प्रकार महाकाव्य में सृष्ट्योत्पत्ति विषयक विचार प्राप्त होते हैं।

अधिकारी-

अधिकारी अनुबन्ध का भेद है। अद्वैत वेदान्त के अनुसार जिसने इस जन्म में तथा दूसरे जन्म में वेदों और वेदांगों के विधिपूर्वक अध्ययन द्वारा समस्त वेदान्त के अर्थ को सामान्यरूप से समझ लिया है तथा काम्य और निषिद्ध कर्मों का परित्याग करके नित्य, नैमित्तिक, प्रायश्चित्त और उपासनाकर्मों का अनुष्ठान करने से जिसका अन्तःकरण अत्यन्त निर्मल हो गया है और जो साधनचतुष्टय से सम्पन्न है, ऐसा प्रमाता पुरुष ब्रह्मविद्या का अधिकारी है।[२९] मानवजीवन में परम सत्य ओंकारस्वरूप ब्रह्म को प्राप्त करना सब से अधिक महत्वपूर्ण कार्य माना जाता है। जो ब्रह्म को जान लेता है उसे ब्रह्मवेत्ता कहते हैं। ब्रह्म को जानने वाले अधिकारी की विशेषताओं का वर्णन गुरुनानकदेवचरितम् में अधोलिखित

---

२१ रामकली ओंकार, (मः १)पृ -९३०

२२ विलावल, (मः५) पृ-९२१

२३ गु. ना.देव.च.-१.१६

२४ वही, १.२०

२५ वही, २३.३३

२६ वही, १४.१३

२७ वही, १४.१४

२८ वही, २३.३५

२९ वे.सा. पृ. ४३

प्रकार से प्रस्तुत किया गया है- जन्मों से अर्जित पुण्यों से युक्त, साधु स्वभाव से युक्त, सदा प्रसन्न, उस के लिये कार्य करते हुये, समय से उस (ओंकार स्वरूप ब्रह्म) सत्य देव को साधक देखता है।[३०] जो अमूढ़ दु:खों में दु:खी और सुखों में कभी भी सुख का अनुभव नहीं करता, सभी प्राणियों में उस एक सर्वेश्वर को जो देखता है वही (ओंकारस्वरूप ब्रह्म) उसे देखता है।[३१] जो न द्वेष करता है, न शोक करता है, न हर्ष करता है और न कभी प्रसन्न होता है, सदा सब स्थानों पर समबुद्धि से युक्त होता है, वह अपनी आत्मा में स्थित उस (ओंकारस्वरूप ब्रह्म) को देखता है।[३२]

प्रकृति-विकृति-

सांख्य के अनुसार एक ही नित्य प्रकृति से समस्त संसार की अभिव्यक्ति होती है। मूल प्रकृति को अविकृति कहा जाता है[३३] क्योंकि मूल-प्रकृति किसी तत्त्व का विकार नहीं है। गुरुनानकदेवचरितम् में सांख्यसम्मत प्रकृति-विकृति शब्दों का भी विवेचन प्राप्त होता है यथा- मरणं प्रकृतिं चैव जीवनं विकृतिं तथा।[३४] अर्थात् मरण प्रकृति है और जीवन विकृति है। मरण को प्रकृति इसीलिये कहा गया है क्योंकि मृत्यु के बाद यह सब कुछ उस मूल प्रकृति में ही विलीन हो जाता है। जीवन विकृति है। सांख्य में कहा गया है-सोलह तत्त्वों का समूह विकार (विकृति) है[३५] जिसमें पांच ज्ञानेन्द्रिय (श्रोत्र, त्वक्, घ्राण, रसना, चक्षु) पांच कर्मेन्द्रिय (वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ), पांच महाभूत (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश) और मन। इस प्रकार जीवन में यह विकार होते हैं इस कारण जीवन को विकृति कहा जाता है।

पुनर्जन्म-

कर्मों के समूल नाश पर्यन्त जीव को जन्म लेना पड़ता है। भगवद्गीता में भी जन्मे हुए जीव की मृत्यु एवम् मरे हुए का जन्म निश्चित माना है।[३६] वेदान्तदर्शन के अनुसार मृत्यु के पश्चात् जब प्राण आत्मा के साथ चले जाते हैं, तब भी सूक्ष्म शरीर का दूसरे जन्म में जाना निश्चित है।[३७] ऋग्वेद में एक परिच्छेद आता है[३८], जिसमें कहा गया है- जब वह अपने कर्त्तव्य-कर्मों को समाप्त कर लेता है और वृद्ध हो जाता है तो इस संसार से विदा हो जाता है, यहाँ से विदा होते हुए फिर एक बार जन्म लेता है। गुरुनानकदेवचरितम् महाकाव्य में भी पुनर्जन्म विषयक सिद्धान्त दृष्टिगोचर होता है यथा- जन्मन:कारणं

---

३० गु. ना. दे. च-३.४२

३१ गु. ना. दे. च-३.४३

३२ गु. ना. दे. च-३.४४

३३ मूलप्रकृतिरविकृति--सां. का-३

३४ गु. ना. दे. च- १३;२८

३५ सां.का-३

३६ गीता, २.२७

३७ वेदान्तदर्शन, ३.१.३

३८ ऋ.वे. ४.२७.१; राधाकृष्णन, भारतीयदर्शन, खण्ड-१, पृ. ९४

नष्ट होने वाला है।

सृष्ट्युत्पत्ति-

सृष्ट्युत्पत्ति के विषय में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में लिखा गया है कि समस्त ब्रह्माण्ड की रचना ओंकार से हुई है। जैसे-

प्रथम काल जब करा पसारा।

ओंकार ते सृष्टि उपारा।।[२१]

एकोंकार एक पसारा ऐकै अपर अपारा।

एक विसथीरन एक सम्पूर्ण ऐकै प्रान अधारा।।[२२]

ब्रह्मसूत्र में प्रतिपादित किया गया है- 'जन्माद्यस्य यतः'' अर्थात् उस आदिब्रह्म से ही सृष्टि उत्पन्न होती है। गुरुनानकदेवचरितम् में ओंकारस्वरूप ब्रह्म को 'निसर्गस्यायमेवाद्यः' अर्थात् सृष्टि का आदि कहा गया है।[२३] सभी लोक, समुद्र, नक्षत्र, प्राणी और समस्त भुवन ओंकार से ही उत्पन्न होते हैं।[२४] ओंकार से ही नभ, नभ से वायु, वायु से तेज, तेज से जल, जल से पृथ्वी और उस पृथ्वी पर चार प्रकार के जीव (अंडज, जरायुज, उदभिज और स्वेदज) उत्पन्न होते हैं।[२५] स्थूल व सूक्ष्म भेद से सृष्टि दो प्रकार की बताई गई है।[२६] उन दोनों में से वृद्धि और क्षय जिसमें होता है वह स्थूलरूपा सृष्टि है। जिसमें वृद्धि और क्षय नहीं होता, सदा शाश्वती हे, वह सूक्ष्मरूपा सृष्टि है।[२७] गुरुनानकदेवचरितम् में सृष्टि की प्रागवस्था का वर्णन करते हुए कहा गया है-तब न असत् था, न सत् था, तर्क-प्रमा के लक्षणों से बोधशून्य था, तब उसका (ब्रह्म) रूप गहन और गम्भीर था।[२८] इस प्रकार महाकाव्य में सृष्ट्योत्पत्ति विषयक विचार प्राप्त होते हैं।

अधिकारी-

अधिकारी अनुबन्ध का भेद है। अद्वैत वेदान्त के अनुसार जिसने इस जन्म में तथा दूसरे जन्म में वेदों और वेदांगों के विधिपूर्वक अध्ययन द्वारा समस्त वेदान्त के अर्थ को सामान्यरूप से समझ लिया है तथा काम्य और निषिद्ध कर्मों का परित्याग करके नित्य, नैमित्तिक, प्रायश्चित्त और उपासनाकर्मों का अनुष्ठान करने से जिसका अन्तःकरण अत्यन्त निर्मल हो गया है और जो साधनचतुष्टय से सम्पन्न है, ऐसा प्रमाता पुरुष ब्रह्मविद्या का अधिकारी है।[२९] मानवजीवन में परम सत्य ओंकारस्वरूप ब्रह्म को प्राप्त करना सब से अधिक महत्वपूर्ण कार्य माना जाता है। जो ब्रह्म को जान लेता है उसे ब्रह्मवेत्ता कहते हैं। ब्रह्म को जानने वाले अधिकारी की विशेषताओं का वर्णन गुरुनानकदेवचरितम् में अधोलिखित

---

२१ रामकली ओंकार, (म: १) पृ -९३०

२२ विलावल, (म:५) पृ-९२१

२३ गु. ना.देव.च.-१.१६

२४ वही, १.२०

२५ वही, २३.३३

२६ वही, १४.१३

२७ वही, १४.१४

२८ वही, २३.३५

२९ वे.सा. पृ. ४३

प्रकार से प्रस्तुत किया गया है- जन्मों से अर्जित पुण्यों से युक्त, साधु स्वभाव से युक्त, सदा प्रसन्न, उस के लिये कार्य करते हुये, समय से उस (ओंकार स्वरूप ब्रह्म) सत्य देव को साधक देखता है।[30] जो अमूढ़ दुःखों में दुःखी और सुखों में कभी भी सुख का अनुभव नहीं करता, सभी प्राणियों में उस एक सर्वेश्वर को जो देखता है वही (ओंकारस्वरूप ब्रह्म) उसे देखता है।[31] जो न द्वेष करता है, न शोक करता है, न हर्ष करता है और न कभी प्रसन्न होता है, सदा सब स्थानों पर समबुद्धि से युक्त होता है, वह अपनी आत्मा में स्थित उस (ओंकारस्वरूप ब्रह्म) को देखता है।[32]

प्रकृति-विकृति-

सांख्य के अनुसार एक ही नित्य प्रकृति से समस्त संसार की अभिव्यक्ति होती है। मूल प्रकृति को अविकृति कहा जाता है[33] क्योंकि मूल-प्रकृति किसी तत्त्व का विकार नहीं है। गुरुनानकदेवचरितम् में सांख्यसम्मत प्रकृति-विकृति शब्दों का भी विवेचन प्राप्त होता है यथा- मरणं प्रकृतिं चैव जीवनं विकृतिं तथा।[34] अर्थात् मरण प्रकृति है और जीवन विकृति है। मरण को प्रकृति इसीलिये कहा गया है क्योंकि मृत्यु के बाद यह सब कुछ उस मूल प्रकृति में ही विलीन हो जाता है। जीवन विकृति है। सांख्य में कहा गया है-सोलह तत्त्वों का समूह विकार (विकृति) है[35] जिसमें पांच ज्ञानेन्द्रिय (श्रोत्र, त्वक्, घ्राण, रसना, चक्षु) पांच कर्मेन्द्रिय (वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ), पांच महाभूत (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश) और मन। इस प्रकार जीवन में यह विकार होते हैं इस कारण जीवन को विकृति कहा जाता है।

पुनर्जन्म-

कर्मों के समूल नाश पर्यन्त जीव को जन्म लेना पड़ता है। भगवद्गीता में भी जन्मे हुए जीव की मृत्यु एवम् मरे हुए का जन्म निश्चित माना है।[36] वेदान्तदर्शन के अनुसार मृत्यु के पश्चात् जब प्राण आत्मा के साथ चले जाते हैं, तब भी सूक्ष्म शरीर का दूसरे जन्म में जाना निश्चित है।[37] ऋग्वेद में एक परिच्छेद आता है[38], जिसमें कहा गया है- जब वह अपने कर्त्तव्य-कर्मों को समाप्त कर लेता है और वृद्ध हो जाता है तो इस संसार से विदा हो जाता है, यहाँ से विदा होते हुए फिर एक बार जन्म लेता है। गुरुनानकदेवचरितम् महाकाव्य में भी पुनर्जन्म विषयक सिद्धान्त दृष्टिगोचर होता है यथा- जन्मनःकारणं

---

३० गु. ना. दे. च-३.४२
३१ गु. ना. दे. च-३.४३
३२ गु. ना. दे. च-३.४४
३३ मूलप्रकृतिरविकृति--सां. का-३
३४ गु. ना. दे. च- १३;२८
३५ सां.का-३
३६ गीता, २.२७
३७ वेदान्तदर्शन, ३.१.३
३८ ऋ. वे. ४.२७.१; राधाकृष्णन, भारतीयदर्शन, खण्ड-१, पृ. ९४

मृत्युर्मृत्योर्जन्म च कथ्यते।[३९] अर्थात् जन्म के कारण को मृत्यु और मृत्यु के कारण को जन्म कहते हैं। इस प्रकार पुनर्जन्म विषयक सिद्धान्त गुरुनानकदेवचरितम् महाकाव्य में दृष्टिगोचर होता है।

मुक्ति का साधन-

मुक्ति को प्राप्त करना ही मानव-जीवन का अन्तिम लक्ष्य माना जाता है। संसार से विरक्ति या निवृत्ति ही मुक्ति है। गुरुनानकदेवचरितम् में श्री गुरु नानक देव जी अपनी बहन नानकी से कहते हैं-भवसागर से मुक्त होने के लिये तुम उस नित्य ईश्वररूप ओंकार को सदा जपो।[४०] इस प्रकार सच्चिदानन्द एकोंकार परम ब्रह्म का नाम स्मरण ही मुक्ति प्राप्त करने का सर्वश्रेष्ठ उपाय है।

अद्वैतवाद-

अद्वैतवाद का सर्वप्रथम विवेचन ऋग्वेद में अवलोक्ति होता है-'एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति'[४१] अर्थात् वह एक ही तत्त्व है जिसे विप्रजन अनेक कहते हैं। अन्यत्र भी कहा है कि विद्वान् लोग उस एक ईश्वर को नानारूपों में प्रस्तुत करते है।[४२] बृहदारण्यकोपनिषद् के अनुसार उस (ब्रह्म का) कोई द्वितीय नहीं है।[४३] ऋग्वेद के अनुसार देवताओं का महान् सुरत्व एक ही है।[४४] श्वेताश्वतारोपनिषद् के अनुसार एक देव ही सभी भूतों में, उनकी अन्तरात्माओं में स्थित होकर सर्वव्याप्क है।[४५] श्रीगुरुग्रन्थसाहिब में कहा गया है कि ब्रह्म एक है और उसके अनेक रूप हैं। यथा-

"तेरी मूर्ति एका बहुत रूप"[४६]

गुरुनानकदेवचरितम् में भी बताया गया है कि ईश्वर एक है और वह विश्व को उत्पन्न करके अनेक रूपों में होता है।[४७]

सत्यलोक का वर्णन-

सत्य का अर्थ है ब्रह्म। सत्यलोक का अर्थ है परमात्मा का लोक। सत्यलोक में सर्वत्र सत्य (ब्रह्म) ही व्याप्त है। गुरुनानकदेवचरितम् में कविवर ने सत्यलोक का अद्भुत वर्णन प्रस्तुत किया है। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में ब्रह्म का वास सचखण्ड अर्थात् सत्यलोक में बताया गया है। जैसे-

सच खंडि वसै निरंकारु॥[४८]

सचु तेरा दरबार॥[४९]

सचे उपरि अवर न दीसै॥[५०]

---

३९ गु. ना. दे. च-१३; २७

४० गु.ना. दे.च-३.४५

४१ ऋ. वे. १.१६४.४६

४२ ऋ. वे. १०.११४.५

४३ बृ. उ. ४.३.२३

४४ ऋक्. सं. ३.५५

४५ श्वेताश्वतरोपनिषद्-६.११

४६ वसन्त (म:१)

४७ गुरुनानकदेवचरितम्-३.२४

४८ जपु (म:१) ३७:११ [८] पृ-५

४९ माझ-वार (म:१) [१३]:३[१४४]-८

५० तुखारी (म:१) छद [५] ३:४ [१११२]-११

रूपु सति जाका सति अस्थान।।'[५१]

श्री गुरु नानक देव जी अपनी बहन को बताते हैं– 'जो मैंने देखा वह सब कुछ सुनो। ऊपर के लोक जो सब से परे हैं उनमें सबसे पहला सत्य नाम का लोक है। नदी के जलसमूह में समाधिस्थ होकर मैं वहां जाकर वापिस आया। कोई भी लोक उससे महान् नहीं है। लोकों में वह ही 'सबसे' ऊपर स्थित है। न वहां सूर्य है, न चन्द्र है, न तारे हैं, न बिजली चमकती है और न अग्नि है। वहां स्वयं ही प्रकाश होता है। सत्यलोक विलक्षण और मन से भी अतीत है। वहां पर सुख नहीं है और न वहां पर दुःख है। शीत, उष्णता, व्याधि, भय आदि वहां नहीं हैं। वहां पर बुढ़ापा नहीं है और न वहां पर मृत्यु है। वहां पर जो कुछ भी है, वह सब कुछ सत्य ही है। वहां पर आगे भी, पीछे भी, दायें भी और वायें भी केवल एक सत्य ही है। सत्य के विना वहां पर कुछ नहीं है, इस लिये उस का नाम सत्य है। वह सत्य नाम का एक ही ओंकार विश्व का कर्ता और पुरुष है। वह निर्भय और वैर-शून्य है। वह अकालमूर्ति भगवान् अयोनि है। वह स्वयंभू गुरुरूपी प्रसाद 'कृपा' से ही जाना जा सकता है, अन्यथा नहीं। उसको लौकिक शब्दजाल द्वारा जाना, सुना और कहा नहीं जा सकता। उस परात्पर देव के द्वारा ही स्वयं सब कुछ अधिष्ठित है। उस के विना कुछ नहीं है। यहां और सब जगह वह ही है।'[५२]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि गुरुनानकदेवचरितम् महाकाव्य में जो दार्शनिक सिद्धान्त प्रतिपादित किये गये हैं, वे भारतीय दर्शन और श्रीगुरुग्रन्थसाहिब के अनुसार हैं। महाकाव्य में गुरुवाणी की मूल भावना के अनुरूप ही संस्कृत में समीचीन शब्दों का प्रयोग किया गया है। कवि ने श्रीगुरुग्रन्थसाहिब के अनुरूप ही ब्रह्म, जगत्, जगत् की उत्पत्ति आदि अनेक दार्शनिक तत्त्वों को अपने काव्य में स्थान दिया है। जिससे इस काव्य की श्रेष्ठता और भी बढ गई है।

–संस्कृत विभाग, आर्य कालेज, लुधियाना।

---

५१ गोयडी सुखमनी, पृ.–२८४

५२ तत्रैव.३.४६–५३

हुक्मी होवन आकार हुक्म न कहिया–जाई।
हुक्मी होवन जीअ हुक्म मिले बडिआई।
हुक्मी उत्तम नीच हुक्मी लिख दुःख सुख पाईये।
इकना हुक्मी बखसीस इक हुक्मी सदा न भवाईये।। नानकवाणी

अर्थात् इस सृष्टि की रचना परमात्मा की आज्ञा से ही होती है। परमात्मा की आज्ञा कब क्या हो यह समझ से परे है। परमात्मा की कृपा से ही किसी को सुख मिलता है और कोई जीवनभर दुःख भोगता है। प्रभु की कृपा से ही जीव पैदा होता है और उसकी कृपा से ही धन प्राप्त करता है।

श्री गुरु नानकदेव जी और मानव-अधिकार

- प्रो. तेजा सिंह 'राही'

साधारण शब्दों में वे अधिकार जो मानव को जीवन के योग्य बनाते हैं उनको मानव-अधिकार कहते हैं। दूसरे शब्दों में वे अधिकार जो व्यक्ति के सर्वपक्षी विकास के लिए जरूरी हैं वे मानव-अधिकार हैं।

सिखधर्म का इतिहास मानव-अधिकारों के लिए संघर्ष की कहानी है। मानवीय अधिकारों की लहर गुरु नानक देव जी के जन्म के साथ ही आरम्भ हो गई थी। सिख-गुरुओं के दौर में मानवीय-अधिकारों को निरंकुश मुसलमान हुक्मरानों ने खतरनाक ढंग से कुचल दिया था। विदेशी मुस्लिम हमलों ने समाज के सारे आदर्शों को उलट-पुलट कर दिया था। लोगों के मनोबल को इतना गिरा दिया के वे मुस्लिम-धर्म अपनाने के लिए मजबूर हो गए। गुरु नानक देव जी पहले सिख-गुरु थे जो मानवीय-अधिकारों की रक्षा के लिए लड़े। उन्होंने सामाजिक बेइंसाफी, असमानता, धार्मिक दमन और औरतों के शोषण विरुद्ध आवाज उठाई क्योंकि लोग अपना सम्मान, इज्जत और गौरव भूल चुके थे।

जबर के विरोध का अधिकार- गुरु नानक देव जी ने प्रजा को अपनी वाणी में अधिकारों के बारे सूचित किया है कि वे शासक के जबर के विरुद्ध आवाज उठाएं। गुरु जी ने शासकों की प्रजा पर जुलम करने की आलोचना की। राजा और दरबारियों को बाघ कहा जो लोगों से रिश्वत लेते हैं और गरीबों का खून पीते हैं। गुरुजी वाणी में लिखते हैं-

राजे शींह, मुकदम कुत्ते,

जाइ जगाइन, बैठे सुत्ते ।।

गुरुजी मानवीय अधिकारों का सत्कार करते थे। उन्होंने गणतंत्री विचारों पर जोर दिया। उन्होंने प्रजा को भी माफी नहीं दी जो जालम शासक की आज्ञा का पालन करते रहे।

काम का अधिकार- पुरातन भारत में जीवन की चार कीमतें थीं- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। नौकरी अथवा व्यापार करके वस्तुओं की प्राप्ति करना व्यक्ति की आरंभिक जरूरत है। गुरुजी ने कार्य करने पर जोर डाला है। संसार के करता ने कुछ न कुछ कार्य प्रत्येक प्राणी के लिए निर्धारित किया है। अगर कोई प्राणी कार्य करने योग्य नहीं है तो कार्य करने वाला प्राणी अपनी की हुई कमाई से दसवंद निकाल कर उस प्राणी की मदद करे। गुरुजी ने तीन सुनहरी सिद्धांतों पर जोर दिया, 'किरत करना, नाम जपना, वंड

छकना।' अपनी रोजी ईमानदारी से कमाना, प्रभु के नाम को मन में सदा याद रखना और जो कमाया उसे बाँटकर खाना। ऐसे कर्मों से ही इंसान प्रभु को पा सकता है-

धाल खाए, कुछ हत्थों दे,

नानक राह, पछाणे से।।

गुरु नानक जी के सदियों बाद भी लास्की ने कहा था, 'प्रत्येक नागरिक को काम करने का अधिकार है'। सबसे पहले गुरु नानक जी थे जिन्होंने कार्य के अधिकार का समर्थन किया और इस अधिकार का श्रीगणेश किया। यह कार्य करने का अधिकार अब 'यूनिवर्सल डिकालारेशन ऑफ ह्यूमनराइट्स' में धारा २३ और २५ के नीचे दर्ज हैं। भारतीय संविधान में भी कार्य का अधिकार दर्ज है।

आजादी का अधिकार- गुरु नानक जी ने मानवता के मार्ग में जो भी रुकावटें आईं उनको दूर करने का प्रयत्न किया। उन्होंने वे जरूरी अधिकार जो आजादी से सम्बन्धित थे, उनका समर्थन किया।

धर्म की आजादी- गुरु जी धर्म की आजादी के समर्थक थे। सिद्धकी सिखों ने सत्यवाद की आजादी की रक्षा की खातिर जानें कुर्बान कर दीं। सिखों ने मानव अधिकार, इंसाफ, आजादी, समानता और सब लोगों की आजादी की खातिर लड़ाई लड़ी।

गुरुजी ने धर्म की स्वतंत्रता के अधिकार का पहले ही समर्थन कर दिया था। अब यह अधिकार *U.N.O.* ने भी लागू किया हुआ है। उस के अनुसार प्रत्येक प्राणी को अधिकार है, कि वह कोई भी धर्म अपनी स्वतंत्रता से चुन सकता है। भारतीय संविधान ने भी यह मंजूरी दे रखी है।

सभ्यता की स्वतंत्रता- गुरुजी ने सभ्यता की आजादी का समर्थन किया। समाज की जो अपनी भाषा व सभ्यता है, किसी हुक्मरान को अधिकार नहीं है कि वह उन लोगों पर अपनी भाषा और सभ्यता थोपे। गुरुजी ने उन हिन्दुओं की आलोचना की जो अपना धर्म और भाषा छोड़कर मुस्लिम धर्म और भाषा अपना रहे थे।

सभा की स्वतंत्रता- सभा की आजादी के लिए गुरुजी ने कहा कि लोगों के इकट्ठे होने की, सभाएं बुलाने की, समस्याओं पर बहस करने की और उनके हल निकालने की आजादी चाहिए। शासक का इसमें दखल नहीं होना चाहिए। संगत के संकल्प का गुरु नानक देव जी ने समर्थन किया।

भाषण देने की स्वतंत्रता- आधुनिक समय में प्रेस और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को भी इसकी आजादी है। अपने जीवन के दौरान सुनने और कहने के लिए गुरु नानक जी ने मनुष्य का हौसला बढ़ाया। इससे यह साफ प्रकट होता है कि गुरु जी अपने विचार प्रकट करने की आजादी के हक में थे।

पेशे के चुनने की स्वतंत्रता- गुरुजी के अनुसार

मानव को किरत (कार्य) करने से नहीं रोका जा सकता चाहे उसकी कोई भी जाति क्यों न हो।

समानता का अधिकार- गुरुजी ने समानता के अधिकार का समर्थन किया। धर्म, जाति, रंग, कौम और लिंग के कारण कोई भी भेद नहीं होना चाहिए। गुरुजी वर्ण और जातीय-प्रथा के विरुद्ध थे। गुरुजी पुरातन रीति-रिवाजों के भी विरुद्ध थे। गुरुजी के अनुसार सभी धर्म समान हैं। गुरुजी ने मानव को जाति, रंग, कौम और देश के आधार पर नहीं बाँटा। कार्लमार्क्स १८१८ में जन्में, उनका जन्म गुरुजी से ३५० साल बाद हुआ। वह श्रेणी रहित समाज देने के कारण प्रसिद्ध हुए। गुरुजी ने इस विचार का कार्ल मार्क्स से पहले १५वीं सदी में समर्थन कर दिया था।

परिवार का अधिकार- गुरुजी ने गृहस्थ को सबसे ऊँचा स्थान दिया है। उनके अनुसार गृहस्थी आदमी और औरत घरेलू फर्ज निभाते हुए भी मुक्ति पा सकते हैं। गृहस्थी का जीवन कीचड़ में खिलने वाले कमल के फूल के समान होता है। गुरुजी ने कहा कि हम गृहस्थ जीवन की खुशियाँ मनाते हुए भी मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं। गुरुजी अपनी वाणी में लिखते हैं-

हसंदिआं, खिलंदिआं, विचे हौवे मुकत।।

गुरुजी ने संसार-त्याग करने के लिए नहीं कहा। मानवता की सेवा करने के लिए कहा। सच्चे ढंग से जीवन जीने से प्रभु की कृपादृष्टि प्राप्त की जा सकती है।

विद्या का अधिकार- विद्या मानवी जीवन में चेतना लाने के लिए बहुत जरूरी है। प्रत्येक मानव का अधिकार है कि वह विद्या प्राप्त करे। उस समय विद्याप्राप्ति का अधिकार सिर्फ ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य को ही था। गुरुजी के अनुसार सभी लोगों को विद्या प्राप्ति का अधिकार होना चाहिए। गुरुजी ने मानवतावादी कीमतों के लिए विद्याप्राप्ति पर जोर दिया। गुरुजी बड़े सुंदर ढंग से समाज में विद्या की महत्तता को अपनी वाणी में प्रकट करते हैं-

विद्या विचारी, तां परोपकारी।।

इसीलिए विद्या स्वयं मानवीय विकास का साधन है। लासकी की यह राय है, 'आधुनिक संसार का मानव जो अनपढ़ है, वह औरों का गुलाम हो सकता है।'

न्याय का अधिकार- गुरुजी के अनुसार न्याय प्रभु के गुणों में से एक गुण है। अन्याय परमात्मा के हुकम के क्षेत्र में नहीं आता क्योंकि उसका न्याय पूर्ण है। गुरुजी अपनी वाणी में कहते हैं-

कूड़ निखुटे नानका, ओड़क सच्च रही।।

गुरुजी के समकालीन समाज पंडितों और मुल्लों के हाथों में था। कोई गलत काम करने पर सरकारी प्रबंध में उनको सजा देने का कोई प्रावाधान नहीं था। गुरुजी ने कहा अगर तुम शान्ति चाहते हो तो लोगों के मानवीय अधिकार का

सम्मान करो। गुरुजी किसी भी प्रकार के शोषण के खिलाफ थे। गुरुजी ने अपनी वाणी में कहा है कि किसी की हक की कमाई अगर कोई मुसलमान खाता है वह उसके लिए सूर खाने के समान है और हिन्दू के लिए गाय खाने के समान है। वाणी में लिखा है-

हक पराया नानका, उस सूअर उस गाय,
गुर पीर हामातां भरे, या मुरदार न खाये।।

इसलिए हम कह सकते हैं, न्याय लोगों का आरंभिक हक है और राज्य को इसकी रक्षा करनी चाहिए।

औरतों का अधिकार- गुरुजी ने औरतों के साथ जो बेइंसाफी हो रही थी, उसके विरुद्ध जोर से आवाज उठाई। उन्होंने कहा कि औरतों को पूरे अधिकार मिलने चाहिएं। औरतों की दशा बहुत हीं दुखदाई थी। गुरुजी ने कहा औरतों को भी वही अधिकार मिलने चाहिए जो एक इंसान को मिलते हैं। उनसे लिंगभेद नहीं होना चाहिए। आरंभिक वैदिक काल में औरतों का पूर्ण सत्कार किया जाता था। औरतों को विद्या दी जाती थी। औरतें धार्मिक कार्यों में भाग लेती थीं। वैदिक काल के बाद औरतों के साथ बुरा बर्ताव किया जाने लगा। १५वीं सदी में गुरुजी ने नारा लगाया कि औरतों को अशुद्ध क्यों कहा जाता है जो संतों, भक्तों, शूरवीरों और राजाओं को जन्म देती हैं। गुरुजी ने अपनी वाणी में कहा है-

सो क्यों मंदा आखिये, जित जमें राजान।।

मानव अधिकार देश और लोगों के लिए प्रकाश स्तंभ होते हैं। जो देश अपनी जनता को सब प्रकार के अधिकार देता है वह देश उन्नति को पा लेता है। इसलिए किसी देश और जनता के लिए अधिकार एक आधारशिला का काम करते हैं।

-मकान नं. ५९२, गली नं. ५, कमालपुर, फगवाड़ा रोड़, होशियारपुर (पंजाब)।
फोन: 01882-255244, मोबा: 98784-00678

राजे सींह मुकदम कुत्ते। जाइ जगाइन बैठे सुत्ते।
चाकर नहदा पाइन्हिधाउ। रतु पितु कुतिहो चटि जाहु।।
जिबै जीआं होसी सार। नकीं वढीं लाइतबार।। नानकवाणी

गुरु नानक तत्कालीन समाज की दशा वर्णन करते हुए कहते हैं कि उस समय राजा लोग सिंह के समान हिंसक थे, राजकर्मचारी कुत्ते के समान लालची थे। वे सोई प्रजा का शोषण करते थे। राजाओं के चाकर लोगों पर अत्याचार करते थे और कुत्तों की तरह उनका खून चाटते थे। ऐसे लोगों के कर्मों की जब परलोक में छानबीन होगी तो वहाँ उनको इन कर्मों का फल मिलेगा।

आर्यसमाज एवं सिखसमाज ने मिलकर यज्ञ रचाया

श्री विद्यार्णव शर्मा वर्षों पूर्व पुलिस उपकप्तान के पदस से सेवानिवृत्त होकर सार्थक जनजागरण तथा भारतीय क्रान्तिकारियों के स्मृति समारोह आयोजित करते चले आ रहे हैं। उन्होंने सिकन्दरा राऊ (हाथरस) में एक स्थायी स्मारक 'राष्ट्रवन्दना भवन' के नाम से स्थापित किया है। वर्षों पूर्व जब वे अलीगढ़ में कार्यरत रहे थे, तब उन्होंने समादरणीय गुरु गोबिन्द सिंह की जयन्ती पर 'प्रकाश लाज' नामक अतिथिभवन में सामूहिक रूप से वेदवाणी एवं गुरुवाणी के पाठ के उपरान्त बृहद् यज्ञ का आयोजन किया था, जिसके यजमान सिख धर्मोपदेशक सरदार प्यारा सिंह सपत्नीक रहे थे। अनेकशः वरिष्ठ आर्यजनों के साथ इस महान् यज्ञ का संचालन श्री देवनारायण भारद्वाज ने किया था और उन्होंने आचमन मन्त्रों के साथ अमृत छकने की संगति जोड़ कर, आर्य एवं सिख समन्वय की भूमिका से सभी को हर्षित कर दिया था। दोनों ही पक्षों के प्रबुद्ध स्त्री-पुरुषों की प्रभूत सहभागिता राष्ट्रीयएकता का जीवंत उदाहरण बनकर प्रस्तुत हुई।

श्री देवनारायण भारद्वाज
द्वारा प्रेषित

जालि मोहु घसि मसु करि,
मति कागदु करि सारू।
भाउ कलम करि चितु लेखारी,
गुर पूछि लिखु वीचारू।
लिखु नामु सालाह लिखु,
अन्तु न पारावारू। नानकवाणी

अर्थात् अपने मोह को जलाकर और उसे घिसाकर स्याही बनाओ। अपनी बुद्धि को श्रेष्ठ कागज बनाओ और अपने चित्त को लेखक बनाओ। फिर गुरु से पूछकर विचाकरपूर्वक कुछ लिखो। फिर प्रभु का नाम लिखो उसकी स्तुति लिखो। उस कागज पर यह भी लिखो कि परमात्मा का न तो कोई अन्त है न उसकी कोई सीमा है।

पुस्तक-समीक्षा

पुस्तक-प्रेक्षण--ससकम्
लेखक- राधावल्लभ त्रिपाठी
प्रकाशन- प्रतिभा प्रकाशन 29/5, शक्ति नगर दिल्ली।
पृष्ठ- 131
ISBN- 81-85268-65-7
मूल्य- 38

'प्रेक्षणससकम्' आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी द्वारा रचित सात एकांकियों का संग्रह है, जो अपनी सप्त दिशाओं से विचित्र एकांकी वीथी की सृष्टि करते हैं। इसको दो खण्डों में बाँटा गया है। प्रथम खण्ड में मूल पाठ है तथा द्वितीय खण्ड में हिन्दी अनुवाद है। प्रथम एकांकी 'सोमप्रभा' है जिसमें समाज के लोभी सास-ससुर द्वारा दहन जैसे कृत्यों का वर्णन किया गया है। द्वितीय एकांकी 'मेघसन्देश' नाम से प्राचीन भावभूति का स्पर्श है। इस कथा में अचानक हुई वर्षा के संयोग से बच्चे के विश्वास की जीत बतायी गई है। तृतीय एकांकी 'धीवरशाकुन्तलम्' में शकुन्तला को धीवर की प्रेमिका के रूप में चित्रित करके एक नवीन कथा की रचना की गई है। चतुर्थ एकांकी 'मुक्ति' एक प्रतीकात्मक प्रहसन है, जिसमें मनोरंजनपूर्ण शैली में यह सन्देश प्रस्तुत किया गया है कि समाज के प्रति अपना दायित्व पूर्ण करना ही वास्तविक मुक्ति है। पञ्चम एकांकी 'मशकधानी' में वर्तमान समाज में व्याप्त राजनीति स्वार्थपरता का प्रकाशन है। 'गणेशपूजनम्' एक सफल नुक्कड़ एकांकी है जिसमें धार्मिक उत्सवों के प्रति अनास्थावान् लोगों की समस्या का अंकन किया गया है। अन्तिम एकांकी 'प्रतीक्षा' में आर्थिक परिस्थिति के कारण अपनी पुत्री का नौकरी के लिए देर रात तक घर से बाहर रहना, माता-पिता को कितना विचलित कर देता है, इसका मनोवैज्ञानिक चित्रण किया गया है।

इसमें व्यंग्य के साथ-साथ सरल हास्य की निर्झरिणी भी प्रवाहित है। इसकी वार्तालाप शैली में रचना की गई है। कभी प्रतीत होता है कि डॉ. त्रिपाठी जी सामाजिक समस्याओं को उजागर कर रहे हैं तो कभी उनकी कल्पनाएँ उन्हें महाकवि कालिदास के लोक में पहुँचा देती हैं। इसमें पुत्र-पुत्री के भेद की विभीषिका भी है। बालसुलभ आकांक्षा, मूर्खों का मूर्खालाप एवं चंदा-व्यवसायियों का असत्य-सत्य भी है।

इस प्रकार प्रेक्षण-सप्तकम् सात पुष्पों का एक गुच्छ है जो अपनी सुगन्ध से नाट्य-जगत् को सुगन्धित करने में सक्षम है। संवाद की दृष्टि से यह अत्यन्त उपयुक्त है, इसमें संवाद सरल एवं सहज हैं।

अनिल कुमार
शोध-छात्र (एम. फिल)
वी.वी.बी.आई.एस. एण्ड आई.एस., साधु आश्रम, होशियारपुर।

संस्थान-समाचार

दान –

श्री अरविन्द महाजन १९००/-
यूनिरोयल ईडस्ट्रीस ३६५,
इन्डस्ट्रीयल इस्टेट, फेज-II,
पंचकूला।

श्री सी. के. आनन्द, १०००/-
दीपा एक्सपोर्ट, ४४,
कर्मशियल सैंटर,
नई दिल्ली।

श्रीमती उषा भल्ला ५०००/-
C/o श्री आर. पी. भल्ला,
३३, हिमगिरी अपार्टमैंट,
जे ब्लाक (आउटर) रिंग रोड,
विकासपुरी, नई दिल्ली।

श्री देव नारायण भारद्वाज पी.ए.एस. ११००/-
'वरेण्यम' एम आई जी भू ४५,
अवन्तिका यू डी ए कालोनी,
रामघाट मार्ग, अलीगढ़ (यू.पी.)

श्री जगदीश चन्द्र सदाना ८००/-
यूनाईटिड इन्डस्ट्रीज,
सिविल लाइन,
लुधियाना।

श्री प्यारेलाल गुप्ता ११००/-
ऐ/९०३, गार्डन इस्टेट,
लक्ष्मी नगर, लिंक रोड़,
गोरेगांव वेस्ट, मुम्बई।

डॉ. एस. एल. चावला २०००/-
चावला चिल्ड्रन हस्पताल,
शहीद उधम सिंह नगर, जालन्धर।

श्री हरीश भारती ५१६२०/९४
३२ एवेन्यू एन. डब्ल्यू,
सीटल, डब्लयू ए ९८११२ ६११६
यू.एस.ए.।

श्रीमती सरोज वाला ११०००/-
प्रिंसिपल (सेवानिवृत्त)
अमर आवास १२, प्रोफैसर कालोनी,
कपूरथला (पंजाब)

श्री वी. आर. अग्निहोत्री २०००/-
६६, इस्ट एण्ड इनकलेव,
दिल्ली।

श्री रवि प्रकाश आनन्द एण्ड कम्पनी १०००/-
आनन्द भवन, पलटन बाजार,
गोहाटी (आसाम)

डॉ. तिलक राज शर्मा २००/- २००/-] ४००/-
कृष्णा नगर, होशियारपुर।

श्री रामभज मदान ११००/-
१२६, राजा गार्डन, नई दिल्ली।

श्री प्रदीप अग्रवाल ३०००/-
सुपुत्र श्रीमती मनोरंजना अग्रवाल
१/१५०, सफदरजंग,
नई दिल्ली-११००२१

चेयरपर्सन

जाजू पब्लिक चेरिटेबल ट्रस्ट २१००/-
वसंत ऐवन्यू, अमृतसर।

डॉ. एम एल शर्मा १३३२९/-६०
१९४२,४६ ऐवन्यू,
सनफ्रांसिको, यू.एस.ए.।

श्री रवि कुमार जैन ५१००/-
फार्मा क्राफ्ट (इंडिया) प्रगति भवन,
निकट एस.डी. सिटी पब्लिक स्कूल,
चिन्तपूर्णी रोड़, होशियारपुर।

श्री एम.पी. वीर १०००/-
१८-सी, विजय नगर,
दिल्ली-११०००४९।

श्री नरेश सूद ११००/-
ए.वी.सी. हैण्डलूम,
कोतवाली बाजार,
निकट गौरां गेट, होशियारपुर।

श्री एस. के. भसीन २१००/-
६ ए आनन्द धाम,
२५, प्रभात कालोनी, सांता क्रूज,
मुम्बई।

स्वामी रामस्वरूप जी ५०१/-
योल कैंट, योल कैंप,
कांगड़ा, टिक्का लेहसर।

डॉ. कशमीर चन्द अहूजा २०००/-
४५-ए, नव निर्माण,
जनता कालोनी, जालन्धर।

सर्वश्री प्रभु दयाल बुधराम २५००/-
गुप्ता चेरिटेबल ट्रस्ट
७ नई सब्जी मण्डी,
फगवाड़ा रोड़, होशियारपुर।

श्रीमती ममता सूरी ५००/-
१५०, मास्टर तारा सिंह नगर,
जालन्धर।

हवन-यज्ञ- विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान के सत्संग-भवन में प्रत्येक सप्ताह के प्रथम दिन सभी कर्मिष्ठों तथा छात्रों की उपस्थिति में हवन-यज्ञ किया जाता है। तदनन्तर कार्य प्रारम्भ होता है।

संस्थान के सत्संग भवन में ही परमपूज्य स्वामी सत्यानन्द महाराज जी की चलाई परम्परानुसार प्रत्येक मास के द्वितीय शनिवार को नगर से उपस्थित भक्तों और अनुयायियों द्वारा अमृतवाणी का श्रद्धा और प्रेम से पाठ किया जाता है।

बधाई- यह लिखते हुए प्रसन्नता हो रही है कि संस्थान के कर्मिष्ठ **श्री शंकरदास (मास्टर जी)** की पौत्री कुमारी मृणालिनी ने श्री गुरु रविदास यूनिवर्सिटी, होशियारपुर से सम्बन्धित डी.ए.वी. आयुर्वेद कॉलेज, जालन्धर से आयुर्वेद में डाक्टर की परीक्षा अच्छे अंकों में उतीर्ण की है। इस अवसर पर मास्टर जी तथा लड़की के माता-पिता को संस्थान के कर्मिष्ठों की ओर से बहुत-बहुत बधाई।

संस्थान के कर्मिष्ठ **श्री वृजमोहन जी** के सुपुत्र आयुष्मान् चन्द्रमोहन के आयुष्मती रमनदीप कौर के साथ 17-4-2019 को संपन्न शुभ विवाह पर संस्थान के कर्मिष्ठों की ओर से बहुत-बहुत बधाई। नव-दम्पती जीवन में सानन्द, सुखी और स्वस्थ रहे, यही सबकी ओर से शुभकामना है।

संस्थान के कम्प्यूटर विभाग की शिक्षिका **कुमारी हरविन्दर कौर** की बड़ी बहिन के यहाँ पुत्र-जन्म पर बच्चे के माता-पिता तथा मासी (कु. हरविन्दर कौर) को संस्थान के कर्मिष्ठों की ओर से बहुत-बहुत बधाई। बच्चा स्वस्थ व सानन्द रहे, यही हम सब की शुभकामना है।

विविध-समाचार

डॉ. पूनम सूरी, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के पुनः निर्विरोध प्रधान निर्वाचित-

26 मई, 2019 को आर्यसमाज (अनारकली) दिल्ली के सभागार में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के 124वें वार्षिक साधारण अधिवेशन में डॉ. पूनम सूरी जी को 2019-20 के लिए सभा का निर्विरोध प्रधान चुना गया। इस अधिवेशन में विभिन्न स्थानों से आये प्रतिनिधियों ने भाग लिया। निर्वाचन के उपरान्त निर्वाचित प्रधान जी ने इसमें भाग लेने वाले प्रतिनिधियों का उनके प्रति विश्वास व्यक्त करने के लिए धन्यवाद किया। सभा ने डॉ. पूनम सूरी जी को सभा के अन्य 15 सदस्यों को नामित करने का भी अधिकार दिया। इस अवसर पर प्रधान जी ने कहा कि सोलन के पास सलोगड़ा गाँव में महात्मा हंसराज आरोग्य मन्दिर का निर्माण आरम्भ करना प्रस्तावित हुआ है।

शोक समाचार-

अत्यन्त दुःख से सूचित किया जा रहा है कि संस्थान की आजीवन सदस्या श्रीमती स्नेह जैन की सास श्रीमती त्रिलोकसुन्दरी जैन (धर्मपत्नी-संस्थान के आजीवन सदस्य स्व. लाला सूरज कुमार जैन) का 27-5-19 को होशियारपुर में देहान्त हो गया। आप होशियारपुर नगर के एक सम्पन्न परिवार से सम्बन्धित होने पर भी सरलता की प्रतिमूर्ति एवं परोपकारी स्वभाव की महिला थीं। जैन-समाज में आपका बहुत मान-सम्मान था। आपका परिवार संस्थान का सदा हितचिन्तक रहा है और संस्थान को प्रतिवर्ष दान देता रहा है। आज भी श्रीमती स्नेह जैन संस्थान की सच्चे हृदय से सेवा करती रहती हैं तथा समय-समय पर सहायता करती रहती हैं। आपके जाने से जैन समाज को महती हानि हुई है। जिसे पूरा नहीं किया जा सकता। संस्थान के सञ्चालक तथा सभी कर्मिष्ठों की ओर से इस दुःख के अवसर पर सम्बन्धित परिवार से समवेदना व्यक्त की जाती है। प्रभु से प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को शांति दे तथा दुःखी परिवार को इस दुःख को सहने की शक्ति दे।

बड़े दुःख का समाचार है कि संस्थान के कर्मिष्ठों श्री जीयालाल तथा श्री राजाराम की माताजी का 23-5-19 को अपने गाँव उत्तर प्रदेश में देहान्त हो गया। आप बड़ी साधारण और मेहनती महिला थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गई हैं। संस्थान के कर्मिष्ठों की ओर से दुःखी परिवार के प्रति समवेदना व्यक्त की गई। प्रभु से प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे तथा दुःखी परिवार को इस दुःख को सहने की शक्ति दे।

ॐ शांतिः! शांतिः!! शांतिः!!!

राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः (यजुः ९.२३)

भारत की 17वीं लोकसभा के लिए संपन्न हुए चुनाव में विभिन्न पार्टियों के नव-निर्वाचित माननीय सदस्यों को हिन्दी मासिक पत्रिका, विश्वज्योति परिवार की ओर से बधाई एवं शुभकामनाएं।

यह एक बड़ी प्रसन्नता की बात है कि नव निर्वाचित माननीय सांसदों में से कतिपय सांसदों- डॉ. हर्षवर्धन, श्रीपद येशो नाइक, श्री अश्विनी कुमार चौबे, श्री प्रतापचंद सारंगी, श्रीमती मीनाक्षी लेखी, श्री रमेशचन्द्र विधूड़ी, श्री सी. आर. पाटिल, श्री अरविन्द कुमार शर्मा, श्रीमती सुनीता दुग्गल, श्री दुबी सिंह चौहान, श्री पर्वत भाई पटेल आदि ने संस्कृत में लोकसभा सदस्यता की शपथ ग्रहण की है। यह भारतीयों के लिए गर्व की बात है तथा साथ ही आशा की जाती है, कि यह परम्परा भविष्य में भी चलती रहेगी तथा भविष्य में अधिक से अधिक निर्वाचित सांसद संस्कृत में शपथ ग्रहण करेंगे।

पुनः सभी निर्वाचित सांसदों के लिए शुभकामना तथा उन्नति की कामना के साथ-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।।

संचालक/सम्पादक

विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान,

होशियारपुर।

विश्वज्योति

श्री गुरु नानक देव जी का
५५०वां प्रकाशपर्व
विशेषांक

के

दूसरे भाग

में

वेदादि-धार्मिक ग्रन्थों से स्वाध्याय, मनन तथा जीवन में अपनाने योग्य सद्वचनों को संगृहीत किया गया है।

इस प्रकार के वचनों को निरन्तर पढ़ने, मनन करने एवं तदनुरूप जीवन को चलाने से पाठक अपने जीवन में शान्ति प्राप्त कर सकते हैं।

दानी-सज्जनों की नाम-सूची

	पृष्ठ
श्रीमती प्रेम बिन्द्रा, होशियारपुर।	६१
प्रो. सुखदेव,भावनगर	६२
RAVI KUMAR JAIN, Hoshiarpur	६३
श्री ए. के. धवन, नई दिल्ली	६४
श्रीमती सरिता वैश, मुम्बई।	६५
श्री ए. के. गुप्ता, धर्मशाला	६६
डॉ. अशोक सूद, होशियारपुर।	६७
डॉ. श्रवण कुमार रिहानी, डॉ. वसुन्दरा रिहानी, चण्डीगढ़।	६८
श्रीमती उषा भल्ला, नई दिल्ली।	६९
श्रीमती सरोज बाला, कपूरथला।	७०
डॉ. एस. एल. चावला, जालन्धर शहर।	७१
श्री बी. आर. अग्निहोत्री, दिल्ली।	७२
श्रीमती मनोरंजना अग्रवाल, नई दिल्ली।	७३
सर्वश्री जानू सार्वजनिक धर्मार्थ न्यास अमृतसर।	७४
प्रो. लखबीर सिँह, चण्डीगढ़।	७५
प्रो. नवल किशोर शर्मा, होशियारपुर।	७६

	पृष्ठ
श्री राम भज मदान, नई दिल्ली।	७७
R.N. OM PARKASH ANAND	७८
RAVI PARKASH ANAND & CO Guwahati	
Sh. Surinder Mohan Soni, Hoshiarpur.	७९
Mr. Harish K. Bharti, USA	८०
श्री प्यारेलाल गुप्ता, पश्चिम मुम्बई।	८१
श्री जगदीश चन्द्र सडाना, लुधियाना।	८२
श्री सी. के. आनन्द, नई दिल्ली।	८३
UNIROYAL INDUSTRIES LTD. PANCHKULA.	८४
श्री ओमप्रकाश सूद, होशियारपुर।	८५
श्री धनंजय कुमार रैना, नई दिल्ली।	८६
श्रीमती सुशील कौशल, दसूहा।	८७
सर्वश्री लाला नानक चन्द केसर राम नारंग धर्मार्थ न्यास लखनऊ।	८८
प्रोफैसर नरेन्द्र कुमार पाठक जालन्धर।	८९-९२
सर्वश्री शशि बजाज, इंदौर।	९३

	पृष्ठ
श्री विजय कुमार शर्मा, यू.के.।	९४
सर्वश्री दुर्गादेवी मेमोरियल न्यास, कोलकाता।	९५
Sh. P. C. P. Radhakrishnan, Pondicherry	९६
श्री संजीव सूद, होशियारपुर।	९७
प्रो. भगवती प्रसाद शर्मा, हमीरपुर।	९८
PKF Finance Ltd., Jalandhar	९९
SH. DHARM PAL KATNA, Hoshiarpur	१००
SH. GANGA BISHAN MARWAHA HOSHIARPUR	१०१
श्री डी. वी. वासुदेव, जालन्धर।	१०२
श्री सत्येन्द्र भसीन, ईस्ट मुम्बई।	१०३

	पृष्ठ
डॉ. एम. एल. शर्मा, यू.एस.ए.।	१०४
श्री एम. पी. बीर, दिल्ली।	१०५
श्री नरेशचन्द्र सूद, होशियारपुर।	१०६
श्री अरविन्द कुमार मेहता, आगरा।	१०७
पण्डिता प्रतिभा भारद्वाज वासिष्ठ, अलीगढ़।	१०८
स्वामी राम स्वरूप जी, काँगड़ा।	१०९
Dr. K.K. Sharma, Hoshiarpur	११०
Hans Raj Mahila Maha Vidyalaya, Jalandhar	१११
डॉ. कशमीर चन्द आहूजा, जालन्धर।	११२
प्रभुदयाल बुधराम गुप्ता चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि.) होशियारपुर।	११३
सर्वश्री भुवालका जनकल्याण न्यास कोलकत्ता	११४

अविसंवादनं दानं समयस्याव्यतिक्रमः।
आवर्तयन्ति भूतानि सम्यक्प्रणिहिता च वाक्।।

वि.नी./६/३६

जो व्यक्ति जीवन में किसी के साथ किसी प्रकार की वंचना नही करता, जो कुछ अर्जित करता है, उसमें से कुछ न कुछ यथाशक्ति दान देता है। समयानुसार कार्य करता है, तथा सबके साथ मीठा बोलता है। ऐसा व्यक्ति शत्रुओं को भी मित्र बनाता है तथा अपना जीवन सफल कर लेता है।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

पद्मभूषण आचार्य (डॉ.) विश्वबन्धु जी के अनन्य भक्त, संस्थान के परम शुभचिन्तक, दृढ़निश्चयी, श्रद्धावान्, दयालु, दीन-दुःखियों के सहायक, नगर की अनेक संस्थाओं के मान्य-सदस्य, परम-दानी, विश्वेश्वरानन्द-वैदिक-शोध-संस्थान की कार्यकारिणी के आजीवन सदस्य, संस्थान के आदरी प्रोफैसर एवं विश्वेश्वरानन्द-विश्वबन्धु-भारत-भारती शोध संस्थान (पंजाब विश्वविद्यालय पटल, होशियारपुर) के भूतपूर्व चेयरमैन-

स्व. डॉ. त्रिलोचनसिंह बिन्द्रा

(31-10-1942 - 30-6-2016)

की पुण्यस्मृति में सादर समर्पित

प्रयोजकः

श्रीमती प्रेम बिन्द्रा (पत्नी)

श्री अरविन्द बिन्द्रा (पुत्र), श्रीमती सुप्रिया बिन्द्रा (पुत्रवधु), चि. अभिनव बिन्द्रा व चि. नवांश बिन्द्रा (पौत्र)

बिन्द्रा निवास, सिविल लाइन्ज, होशियारपुर।

अत्येति रजनी या तु, सा न प्रतिनिवर्तते।
यात्येव यमुना पूर्णं समुद्रमुदकार्णवे।।

रामा./अयोध्या/१०५/१८

जीवन का प्रत्येक दिन बीत रहा है, जो दिन या रात बीत जाती है वह पुनः कभी लौटकर नहीं आती। जैसे यमुना नदी का जो जल जब समुद्र के जल से मिल जाता है तो वह पुनः लौटकर नहीं आता। अतः वर्तमान में मनुष्य जितने भी अच्छे कार्य कर ले, वही उत्तम है, क्योंकि जिन्दगी का कुछ पता नहीं, उसकी जिन्दगी में वह दिन कभी पुनः लौट कर नहीं आयेगा।

अपने पूज्य पिताश्री

स्व. श्री हरिचन्द जी लाला

अपनी पूज्या माताश्री

स्व. श्रीमती मायावन्ती जी

तथा

पूज्य

स्व. स्वामी कृष्णनन्दा जी

की

पुण्यस्मृति

में

प्रो. सुखदेव व परिवार

120, ISCON Mega City, भावनगर –364 001 (गुजरात)

की ओर से

एकं चक्षुर्विवेको हि द्वितीयं सत्समागमः।
तौ न स्तो यस्य स क्षिप्रं मोहकूपे पतेद् ध्रुवम्।।

चाण. नी./२/९०

परम पिता परमात्मा ने मनुष्य को जो दो आखें दी हैं, उनमें एक आँख विवेक के रूप में और दूसरी आँख अच्छे पुरुषों के साथ संगति के रूप में समझनी चाहिए। यदि व्यक्ति विवेकहीन तथा अच्छे पुरुषों की संगति से रहित है तो समझो वह आंख वाला होने पर भी अन्धा ही है। अतः मनुष्य को विवेकी तथा सत्संगी होना चाहिए।

IN EVERLASTING MEMORY OF

LATE SMT. KAMLA JAIN

(Expired on 7th July 2009)

ON HER 10TH DEATH ANNIVERSARY

DEEPLY REMEMBERED BY :

RAVI KUMAR JAIN & NEENA JAIN (Son & Daughter in Law)
VARUN JAIN & SHEENA JAIN (Grand Son & Grand Daughter in Law)
AMIT JAIN & PRERNA JAIN (Grand Son in Law & Grand Daughter)
ANANYA, VIBHAV, NAVYA, RIDIT (Great Grand Children)

PHARMA CRAFTS (INDIA)
"PUSHAV KAMAL" BUILDING,
P. W. D. Rest House,
Gagret - 177201,
Distt. Una (H. P.)
Cell No.: 98160-41475,

SURGINEEDS
N. A. C. Buildings,
Gagret-177201,
Distt. Una (H. P.)
Cell No.: 82640-98475

SHREYANS INDIA
"Pragati Bhawan",
Near S. D. City Public School,
Chintpurni Road,
Hoshiarpur - 146001 (Pb.)
Cell No.98886-91475

चतुरो मधुरस्त्यागी गम्भीरश्च कलालयः।
गुणग्राही तथा चैव एकोऽपीदृग् वरः सुतः।।

शुकसप्ततिः/पृ. ३८.

भाग्यशाली माता-पिता के घर में यदि एक भी अपने कार्य में कुशल, अच्छे स्वभाव वाला, विचारपूर्वक कार्य करने वाला, कलाओं में प्रवीण तथा दूसरों के गुणों को जानने वाला तथा गुणग्राही पुत्र हो तो वह कुल का नाम उन्नत कर देता है, अर्थात् ऐसे पुत्र हों तो यह बड़ा सौभाग्य है।

❋

विश्वेश्वरानन्द संस्थान के पुराने सदस्य तथा परम हितैषी

अपने पूज्य पिताश्री

स्व. श्री भेरीराम जी धवन

तथा

अपनी पूज्या माताश्री

स्व. श्रीमती चानण देवी जी धवन

की

पावन स्मृति में

श्री ए. के. धवन

55 ए जोरबाग, नई दिल्ली

तथा

विनीत बच्चों एवं हितचिन्तकों

की ओर से

उत्थानं संयमो दाक्ष्यमप्रमादो धृतिः स्मृतिः।
समीक्ष्य च समारम्भो विद्धि मूलं भवस्य तु।।

वि. नी./७/६८

परिश्रम, संयम, निपुणता तथा आलस्य का न होना, प्रत्येक कार्य में धैर्यशीलता, किसी भी वस्तु का स्मरण तथा किसी काम का प्रारम्भ बहुत विचारपूर्वक करना, व्यक्ति की उन्नति के कारण होते हैं, अर्थात् जीवन में उन्नति चाहने वाले व्यक्तियों में इन बातों का होना आवश्यक है।

मानवीय गुणों से परिपूर्ण सार्वजनिक सेवा-कार्यों और धार्मिक अनुष्ठानों में बड़ी तत्परता दिखाने वाली दिव्य आत्मा, जिनके निधन से समाज को एक महान् व्यक्ति से हुई कमी कभी पूरी न हो सकेगी।

स्व. विंग कमाण्डर विनय कुमार वैश

(निधन 12 अप्रैल, 1999)

[जो महान् आत्मा अभी भी हमारा पथ-प्रदर्शन कर रही है]

की पावन स्मृति में सादर समर्पित

प्रयोजिका :

श्रीमती सरिता वैश (धर्मपत्नी), श्रीमती गुञ्जन गुप्ता (पुत्री)

श्रीमती नूपुर फौजदार (पुत्री)

द्वारा कैप्टन सुधीर कुमार, 481, अमरनाथ टावर,
वरसोवा अंधेरी (पश्चिम), मुम्बई।

उपार्जितानामर्थानां त्याग एव हि रक्षणम्।
तडागोदरसंस्थानां परीवाह इवाम्भसाम्।।

पञ्च./मित्रसं./१४४

अपना कल्याण चाहने वाले व्यक्ति को चाहिए कि वह जो धन कमाता है, उसमें से कुछ न कुछ दान करता रहे। इस प्रकार करने से वह धन को उसी प्रकार से सुरक्षित रख लेता है जैसे तालाब में से कुछ जल बाहर बहाते रहने से उसके टूटने का डर नहीं रहता और वह सुरक्षित रहता है।

हार्दिक शुभ कामनाओं के सहितः

श्री ए. के. गुप्ता

263, सिवल लाईन्ज,
धर्मशाला-176215

अन्यत्र कुरुते जन्तुः यत् सुखं दुःखमेव वा।
तदुप्तबीजवत् क्षेत्रे भूयः फलवदात्मनि।।

यशस्तिलकचम्पू./पृ. २०३

मनुष्य को यह सर्वदा ध्यान में रखकर कार्य करना चाहिए कि जो व्यक्ति अपने जीवन में जैसा भी काम करता है उसको उसका वैसा ही फल प्राप्त होता है। जैसे कोई किसान खेत में जिसका बीज बोता है उसको वही पौधा प्राप्त होता है। अतः ऐसी धारणा रखकर मनुष्य सर्वदा सब के साथ अच्छा वर्ताव करता रहे तथा यथाशक्ति परोपकार, दीन-दुःखियों की सेवा तथा दान आदि पुण्य कार्य करता रहे।

❁

विश्वेश्वरानन्द संस्थान के परम भक्त व सहायक

स्व. डा. पृथ्वीनाथ जी सूद

(जन्म 28-10-1914; निधन 02-02-1976)

एवं

स्व. श्रीमती योजनबाला सूद

(जन्म 25. 10. 1927, निधन 7. 6. 2005)

की

पुण्यस्मृति

में

उनके परिवार

की

ओर से

प्रयोजकवर्ग :

डॉ. अशोक सूद, श्रीमती रजनी सूद, अक्षय (पुत्र)

होशियारपुर।

अहिंसयैव भूतानां कार्यं श्रेयोऽनुशासनम्।
वाक् चैव मधुरा श्लक्ष्णा प्रयोज्या धर्ममिच्छता।।

मनु./२/१५९.

धर्म की कामना करने वाले व्यक्ति को चाहिए कि यदि वह किसी को अपने वश में करना चाहता है तो बिना किसी हानि अर्थात् अहिंसा आदि के उसको वश में करे तथा सभी व्यक्तियों के साथ अच्छी भाषा का प्रयोग करे।

हार्दिक शुभ कामनाओं के साथ :

प्रयोजकवर्ग :

डॉ. श्रवण कुमार रिहानी
डॉ. (श्रीमती) वसुन्धरा रिहानी
कोठी नं. 1617, सैक्टर – 44 बी,
चण्डीगढ़।

अनित्यानि शरीराणि विभवो नैव शाश्वतः।
नित्यं संनिहितो मृत्युः कर्तव्यो धर्मसंग्रहः।
पञ्च./काको./९२

मनुष्य को चाहिए कि वह धन तो बडी खुशी से कमाये। दुनियाँ के सभी सुखों की कामना करे किन्तु यह सोचता रहे कि यह शरीर जिसके लिए धन-संग्रह किया जा रहा है तथा यह धन जिसका संग्रह हो रहा है ये दोनों ही चीजें हमेशा रहने वाली नहीं हैं। अतः मृत्यु सदा साथ में घूमती है। यह सोचकर धर्म के कार्य करते हुए पुण्यसंचय भी करे।

अपने पूज्य पिताश्री

स्व. श्री प्रकाश चन्द जी

जो संस्थान के हितैषी थे

(जिनका ९४ वर्ष की आयु में १२-८-९८ को देहावसान हुआ)

की

पुण्यस्मृति

में

सादर समर्पित

प्रयोजिका

श्रीमती उषा भल्ला (पुत्री)

३३ हिमगिरि अपार्टमेण्टस विकासपुरी,

नई दिल्ली - ११००१८

ज्ञानेन कर्मणा वापि जरामरणमेव च।
व्याधयश्च प्रहीयन्ते प्राप्यन्ते चोत्तमं पदम्।।

महाभा./वन./२००/१०७

संसार में व्यक्ति न केवल ज्ञान के द्वारा और न केवल कर्म के द्वारा मृत्यु एवं बिमारियों को दूर कर सकता है, अपितु ज्ञान तथा कर्म अर्थात् सद्-व्यवहार इन दोनों की सहायता से ही इनको क्षीण करता हुआ मोक्ष भी प्राप्त कर सकता है। अत: कर्मभूमि में कर्म द्वारा ही मुक्ति अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। किन्तु वे कर्म निष्काम भाव से किए जाने चाहिएं।

अपनी सास, ससुर जी की याद में

स्व. श्री सन्त राम (15-08-2015)

स्व. श्रीमती आशा रानी (01-05-2015)

पूज्य पिताश्री एवं माताश्री

स्व. श्री अयोध्या प्रशाद वर्मा (06-03-2018)

स्व. श्रीमती कौशल्या वर्मा (निधन 9-12-1999)

एवं अनुज भ्राता

स्व. श्री सुधीर कुमार (निधन 15-7-2004)

की पुण्यस्मृति में सादर समर्पित

प्रयोजिका

श्रीमती सरोज बाला

(सेवानिवृत्त प्रिंसिपल)

अमर आवास 12, प्रोफेसर कालोनी, कपूरथला।

अनसूयुः कृतप्रज्ञः शोभनान्याचरन् सदा।
न कृच्छ्रं महदाप्नोति सर्वत्र च विरोचते।।

वि. नी./३/६५.

जो व्यक्ति जीवन में किसी से ईर्ष्या तथा द्वेष आदि अहित की बात नहीं करता तथा सर्वदा अच्छा ही कार्य करता है, वह कभी भी जीवन में किसी भयंकर कष्ट को प्राप्त नहीं करता तथा सभी जगह सभी प्रकार के व्यक्ति उसको अच्छा समझते हैं तथा सर्वत्र उसकी शोभा होती है अर्थात् आदर-सन्मान होता है।

अपने पूज्य पिताश्री

स्व. श्री दयालचन्द जी चावला

तथा

पूज्या माताश्री

स्व. श्रीमती इन्द्रा जी चावला

की पुण्यस्मृति में सादर समर्पित

प्रयोजक :

डॉ. एस. एल. चावला

चावला चिल्ड्रन हास्पीटल, शहीद ऊधमसिंह नगर, जालन्धर शहर

ते धन्यास्ते विवेकज्ञास्ते सभ्या इह भूतले।
आगच्छन्ति गृहे येषां कार्यार्थं सुहृदो जनाः।।

पञ्च./मित्रभे./२८५.

संसार में वे गृहस्थी धन्य तथा पूज्य हैं, जिनके पास अर्थात् जिस घर में मित्रगण या अन्य सभ्यजन अपना कार्य सम्पन्न करने के लिए समय-समय पर आते रहते हैं। वस्तुतः गृहस्थी होते हुए भी वे तपस्वी ही माने जाते हैं।

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

श्री बी. आर. अग्निहोत्री

६६, ईस्ट एण्ड एन्क्लेव,
दिल्ली-११००९२।

त्यजन्ति सर्पवद्दोषान् गुणान् गृह्णन्ति साधवः।
दोषत्यागी गुणग्राही चालनीव दुरासदः।।

कवितामृतकूपम्./२४.

संसार में उत्तम जन दूसरों के तथा अपने दोषों को ऐसे ही छोड़ देते हैं जैसे सर्प विना मोह के अपनी केचुंली को छोड़ देता है। वस्तुतः श्रेष्ठ पुरुष छलनी के समान होते हैं, जैसे छलनी अच्छी वस्तु को ग्रहण करती है और खराब बेकार की चीज को नीचे गिरा देती है। ऐसे ही महापुरुष किसी की भी अच्छाई को ग्रहण कर बुराई को छोड़ते जाते हैं।

पूज्य पिताश्री

स्व. डॉ. दीवानचन्द जी अग्रवाल

[लाहौर व नई दिल्ली]

तथा

पूज्या माताश्री

स्व. श्रीमती देवकी देवी जी अग्रवाल

तथा

स्व. डॉ. मदनलाल जी अग्रवाल

[अमृतसर व नई दिल्ली]

की पुण्यस्मृति में

प्रयोजकवर्ग :

श्रीमती मनोरंजना अग्रवाल [धर्मपत्नी], श्री शशि अग्रवाल, डॉ. रवि अग्रवाल, श्री प्रदीप अग्रवाल [पुत्र]

ए-१/१५० सफदरजंग एनक्लेव, नई दिल्ली।

धन्यानामुत्तमं दाक्ष्यं धनानामुत्तमं श्रुतम्।
लाभानां श्रेय आरोग्यं सुखानां तुष्टिरुत्तमा।।

महाभा./वन./३१३/७४.

संसार में जो श्रेष्ठ महापुरुष होते हैं उनमें उदारता सर्वप्रथम देखी जाती है। उदारता सम्पन्न व्यक्ति सर्वत्र पूज्य माना गया है। यदि धन की बात करें तो धनों में ज्ञानरूपी धन सर्वश्रेष्ठ है। लाभकारी वस्तुओं में स्वास्थ्य तथा सुखों में सर्वश्रेष्ठ सन्तोष है। जब आवे सन्तोष धन सब धन धूरिसमान।

❋

विश्वेश्वरानन्द संस्थान के परमप्रेमी तथा आजीवन-सदस्य

स्व. श्री बृज लाल जी जाजू

एवं उनकी धर्मपत्नी

स्व. श्रीमती मनभरी देवी जाजू

(जिनका दु:खद निधन क्रमश: दिनांक 17-02-1975 तथा 29-11-1987 को हुआ)

तथा उनके सुपुत्र

स्व. श्री विश्वनाथ जाजू

(जिनका दु:खद निधन दिनांक 3-07-1979 को हुआ) तथा उनके सुपौत्र

स्व. श्री दीपक जाजू (सुपुत्र स्व: लीलाधर जाजू)

(जिनका 34 वर्ष की आयु में ही दु:खद निधन जून 1995 में हुआ) एवं

स्व. श्री लीलाधर जाजू

(जिनका दु:खद निधन 1-06-1998 को हुआ)

की पुण्यस्मृति में

उनके सभी प्रेमियों, बन्धु-बान्धवों और विनीत बच्चों की ओर से

प्रयोजकवर्ग :

सर्वश्री जाजू सार्वजनिक धर्मार्थ न्यास

184, वसन्त ऐवेन्यू, अमृतसर।

किन्नु मे स्यादिदं कृत्वा किन्नु मे स्यादकुर्वतः।
इति कर्माणि सञ्चिन्त्य कुर्याद् वा पुरुषो न वा।।

वि. नी./२/१९

व्यक्ति को सर्वदा किसी भी काम को करने से पहले यह सोच लेना चाहिए कि मैं जो काम करने जा रहा हूँ इसके करने से मुझे क्या लाभ या हानि हो सकती है। जो इस प्रकार सोच-समझ कर कार्य करता है, वह कभी विपत्ति में नहीं पड़ता।

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

प्रयोजक

प्रो. लखवीर सिँह

संस्कृत विभाग,
सरकारी कॉलेज लड़कियां,
सेक्टर-42, चण्डीगढ़।

तपः स्वधर्मवर्तित्वं मनसो दमनं दमः।
क्षमा द्वन्द्वसहिष्णुत्वं ह्रीरकार्यनिवर्तनम्।।

महाभा./वन./३२३/८८.

संसार में रहते हुए अपने कर्तव्यकर्म का पालन करना ही सबसे उत्तम तप है। मन को वश में रखना ही दम है अर्थात् इन्द्रिय वशीकरण ही दम है। सर्दी,गर्मी, भूख, प्यास इत्यादि को सहन करना ही क्षमा तथा बुरे- बुरे कर्मों से बचना ही लज्जा है।

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

प्रो. नवल किशोर शर्मा

ऊना रोड, होशियारपुर

देवपूजा दया दानं दाक्षिण्यं दमदक्षते।
यस्यैते षड् दकाराः स्युः देवांशी नर उच्यते।।

उपदेश-प्रकरणम्./३७

जो व्यक्ति मनुष्य शरीर धारण कर परमात्मा की उपासना तथा विद्वानों का आदर करता है, दयालु है, यथाशक्ति आदरपूर्वक दान देता है, आत्मसंयमी तथा उदारहृदय है तथा अपने कार्य में कुशल है। इन छः गुणों से सम्पन्न व्यक्ति एक प्रकार से देवता का अंश ही होता है।

अपने पूज्य पिताश्री

स्व. श्री जिवन्दाराम मदान

तथा

अपनी पूज्या माताश्री

स्व. श्रीमती सतवन्ती मदान

की

पावनस्मृति

में

सादर समर्पित

प्रयोजकवर्ग :

श्री राम भज मदान

तथा परिवार

126, राजा गार्डन, नई दिल्ली।

अकृत्यं नैव कर्तव्यं प्राणत्यागेऽपि संस्थिते।
न च कृत्यं परित्याज्यमेष धर्मः सनातनः।।

पञ्च./लब्ध./३३.

व्यक्ति को चाहिए कि भले ही प्राण संकट में पड़े हुए हों, या महान् से महान् संकट भी जीवन में आ जाय, उसको बुरा कार्य अथवा अधार्मिक कार्य नहीं करना चाहिए। साथ ही कितना ही संकट क्यों न आ जाय उसको अच्छे कार्य करने का प्रयत्न करना चाहिए। यही हमारा सनातन धर्म कहा गया है।

"AMBITION WITHOUT KNOWLEDGE IS
LIKE A BOAT ON A DRY LAND"

R.N. OM PARKASH ANAND
RAVI PARKASH ANAND & CO.

'Anand Bhawan' G.S. Road, Paltan Bazar, Guwahati-781 008
Tel.: 0361-2541945/46 Fax : 0361-2739696
E-mail : rpahawkins@gmail.com

दानं वित्ताद् ऋतं वाचः कीर्तिधर्मौ तथायुषः।
परोपकरणं कायादसारात् सारमुद्धरेत्।।

प्रबन्धचिन्तामणि/पृ.२७.

मनुष्य को चाहिए कि वह जीवन में पर्याप्त धन अर्जित करे पर साथ ही दान भी करे। सर्वदा सत्य भाषण करना चाहिए। अपने जीवन में यथाशक्ति धार्मिक कार्य तथा परोपकार के कार्य करते रहना चाहिए। जीवन में चिरस्थायी (यश जैसी) वस्तु की प्राप्ति के लिए सतत प्रयत्न करते रहना ही मनुष्य का मुख्य कर्तव्य होना चाहिए।

With best compliments from

Sh. Surinder Mohan Soni

Soni Cottage, St. 3, Near Sant Farid School,
P.O. Sadhu Ashram, Hoshiarpur.

ऋणानि त्रीण्यपाकृत्य मनः मोक्षे निवेशयेत्।
अनपाकृत्य मोक्षं तु सेवमानः पतत्यधः।।

विक्रमांकचरितम्/६/११०.

व्यक्ति जब पैदा होताहै तो वह देवऋण, ऋषिऋण तथा पितृऋण लेकर ही पैदा होता है, व्यक्ति को इन ऋणों को अपने जीवन में चुका देना चाहिए यदि कोई इन ऋणों को नहीं चुकाता है, तो वह अपने जीवन को सफल नहीं कर सकता।

With best compliments from

Mr. Harish K. Bharti

6701, 37th Ave NW
Seattle WA 981176116
USA

तिष्ठन् गृहे चैव मुनिर्नित्यं शुचिरलंकृतः।
यावज्जीवं दयावांश्च सर्वपापैः विमुच्यते।।

महाभा./वन./२००/१०

जो संयमी व्यक्ति घर में रहता हुआ भी सर्वदा अच्छे गुणों से युक्त रहता है, तथा प्राणीमात्र पर दया का भाव रखता है, वह सभी पापों से मुक्त हो जाता है। ऐसे व्यक्ति ही जीवन्मुक्त कहलाते हैं।

❁

अपनी पूज्या माताश्री

स्व. श्रीमती तारावती जी अग्रवाल

[पत्नी – स्व. श्री रामकरण जी]

[जिनका निधन 15.11.1993 को हुआ]

तथा

स्व. श्रीमती पुष्पावती जी

[पत्नी – लाला प्यारेलाल गुप्ता]

[जन्म : 16-9-1933, निधन : 9-5-1972]

की

पुण्यस्मृति

में

प्रयोजक :

श्री प्यारेलाल गुप्ता,

A/903, गार्डन एस्टेट, लक्ष्मी नगर, गोरेगांव, पश्चिम मुम्बई।

किं किं नोपकृतं तेन किं न दत्तं महात्मना।
प्रिय-प्रसन्न-वक्त्रेण प्रथमं येन भाषितम्।।

चाण./रा./शा./६/५०

जो व्यक्ति किसी के साथ किसी भी स्थिति में प्रसन्नतापूर्वक बातचीत करता है, वह महान् पुरुष है और उसने अपनी महानता से उस व्यक्ति के साथ कौन-सा उपकार नहीं किया तथा कौन-सी वस्तु है जो उसको नहीं दी अर्थात् उसने बड़ा उपकार करते हुए मानो उसको सब कुछ प्रदान कर दिया। तात्पर्य है कि प्रेमपूर्वक बातचीत करना सबसे बड़ा कार्य है। व्यक्ति को सभी के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करना चाहिए।

अपने पूज्य पिताश्री

स्व. श्री शिवलाल सडाना

[निधन-२५-७-१९९६]

की

पुण्यस्मृति

में

सादर समर्पित

प्रयोजक :

श्री जगदीश चन्द्र सडाना

यूनाईटिड इञ्जिनियर्ज़ [रजिस्टर्ड]

६, मन्दिर मार्किट, माता रानी रोड, लुधियाना।

अनवरत-परोपकार-व्यग्रीभवद्-
अमलचेतसां महताम्।
आपातकाटवानि स्फुरन्ति
वचनानि भेषजानीव।।

भामिनीविला./१/१२०.

जो व्यक्ति निरन्तर दूसरों की भलाई में लगे रहते हैं तथा जिनका हृदय पवित्र होता है ऐसे महापुरुष यदि किसी समय किसी को कटु वचन भी कह देते हैं, तो उनमें भी भलाई ही छिपी रहती है और वचन सुनने वाले व्यक्ति के जीवन को सुधारने के लिए एक प्रकार से दवाई का ही काम करते हैं अर्थात् उत्तम पुरुषों के वचनों का भाव कभी बुरा नहीं होता।

❁

अपनी पूज्या माताश्री

स्व. श्रीमती नानकी देवी जी आनन्द

[जिनका दुःखद निधन २४-१०-९३ को हुआ]

की

पुण्यस्मृति

में

उनके बन्धु-बान्धवों और विनीत बच्चों
की ओर से

प्रयोजक:

श्री सी. के. आनन्द [पुत्र]

मै. दीपा एक्सपोर्टर्स, नई दिल्ली-११० ०६५

दाक्ष्यमेकपदं धर्म्यम्, दानमेकपदं यशः।
सत्यमेकपदं स्वर्ग्यम्, शीलमेकपदं सुखम्।।

धर्म का प्रधान साधन है, उदारता। जो व्यक्ति उदारहृदय होगा वही उदारचेता होता है। दान देने से व्यक्ति का यश बढता है। स्वर्ग प्राप्ति का मुख्य साधन सत्य बोलना एवम् सांसारिक सुख का मुख्य साधन सरल स्वभाव है। अत: जो इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए कार्य करता है, वह सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति है।

अपने पूज्य पिताश्री

स्व. श्री प्रीतमचन्द जी महाजन

(निधन 15-12-2010)

तथा

अपनी पूज्या माताश्री

स्व. श्रीमती कैलाश महाजन

(जिनका निधन दिनांक 6-3-2003 को हुआ)

की

पुण्यस्मृति

में

सादर समर्पित

प्रयोजक :

UNIROYAL INDUSTRIES LTD.

365, PHASE-II, INDUSTRIAL ESTATE,
PANCHKULA-134113.

त्यक्त्वात्मसुखभोगेच्छां सर्वसत्त्वसुखैषिणः।
भवन्ति परदुःखेन साधवोऽत्यन्तदुःखिताः।।

श्रेष्ठ व्यक्ति अपने ऐश्वर्य तथा अपने सुखों की इच्छा न करते हुए अन्य व्यक्तियों तथा प्राणियों के सुख की कामना करते हैं अर्थात् दूसरों के सुख में ही अपने को सुखी समझते हैं तथा दूसरों के दुःख से अपने को अत्यधिक दुःखी समझते हैं। इस प्रकार अच्छे व्यक्ति दूसरों के सुख-दुःख को ही अपना सुखदुःख समझते हुए दूसरों के सुख की ही कामना करते हैं।

❋

अपने पूज्य पिताश्री

स्व० श्री सीता राम सूद

अपनी पूज्या माताश्री

स्व० श्रीमती कौशल्या सूद

एवं धर्मपत्नी

स्व० श्रीमती कृष्णा सूद

(३०-१-२०१७ को प्रभुचरणों में लीन हुईं)

की

पुण्यस्मृति

में

समर्पित

प्रयोजक :

श्री ओमप्रकाश सूद एवं पारिवारिक सदस्य

1038/10, राम गली, नजदीक बहादुरपुर गेट, होशियारपुर।

एको धर्मः परं श्रेयः क्षमैका शान्तिरुत्तमा।
विद्यैका परमा तृप्तिरहिंसैका सुखावहा।।

वि. नी./१/५७.

मनुष्य के जीवन में एकमात्र उसके द्वारा किया गया धार्मिक कार्य कल्याणकारी है। उसके मन की शान्ति का साधन क्षमा है तथा जीवन में अर्जित विद्या ही वृत्ति का साधन एवम् अहिंसा ही सुख का एकमात्र साधन है। अत: जीवन में इन बातों को अवश्य अपनावो।

स्व. दीवान आनन्द कुमार जी

(भूतपूर्व उपकुलपति, पञ्जाब विश्वविद्यालय एवं भूतपूर्व सभापति, दयालसिंह पब्लिक लाईब्रेरी ट्रस्ट सोसाइटी)

एवं

स्व: दीवान गजेन्द्र कुमार

(निधन २८-२-२०१८)

की

पुण्यस्मृति

में

प्रयोजक :

श्री धनंजय कुमार रैना

ट्रस्टी, दयालसिंह पब्लिक लाईब्रेरी ट्रस्ट सोसाइटी

1, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली।

की ओर से

अक्षितास्त उपसदोऽक्षिताः सन्तु राशयः।
पृणन्तो अक्षिताः सन्त्वत्तारः सन्त्वक्षिताः।।

अथर्व./६/१४२/३.

व्यक्ति को अपनी मातृभूमि के प्रति अच्छा भाव रखते हुए प्रार्थना करनी चाहिए कि हमारी मातृभूमि की सम्पत्तियाँ कभी भी समाप्त न हों। जो सम्पत्तियों को बढाने की चेष्ठा करता है अर्थात् उनके बढने की प्रार्थना करता है वह भी कुशल रहे तथा मातृभूमि से प्राप्त पदार्थों का उपभोग करने वाले भी सुखी रहें।

अपने पूज्य पति

स्व. डॉ. सुदर्शन कौशल

[जिनका दुःखद निधन दिनांक 5-1-2008 को हुआ]

की

पुण्यस्मृति

में

सादर समर्पित

प्रयोजकवर्ग :

श्रीमती सुशील कौशल

तथा

पुत्र ललित और हिमांशु

मोहल्ला आहलूवालिया, दसूहा (होशियारपुर)

जीवने यस्य जीवन्ति मित्राणीष्टाः सबान्धवाः।
सफलं जीवितं तस्य, आत्मार्थे को न जीवति।।

चाण. राज. शास्त्र/१/३४

संसार में जिस व्यक्ति के सहारे उसके मित्र, प्रियजन, बन्धु-बान्धव तथा मित्रगण लाभ उठाते हैं, अर्थात् जिससे सहायता प्राप्त करते हैं उसका जीवन सफल है। क्योंकि ऐसे व्यक्ति अपने लिए नहीं अपितु दूसरों के लिए ही जीते हैं। ऐसे व्यक्तियों का जीना ही सार्थक है और ऐसे व्यक्ति धन्य हैं।

विश्वेश्वरानन्द संस्थान

के

परम भक्त

स्व. लाला केसर राम जी नारंग

की

पुण्यस्मृति

में

प्रयोजक :

सर्वश्री लाला नानक चन्द

केसर राम नारंग धर्मार्थ न्यास

I-नवल किशोर रोड़,

लखनऊ

गुरूणां नाममात्रेऽपि गृहीते स्वामिसम्भवे।
दुष्टानां पुरतः क्षेमं तत्क्षणादेव जायते।।

पञ्च./काको./८०.

लोक में गुरुजनों अर्थात् महापुरुषों, पूज्य पुरुषों तथा शक्तिसम्पन्न लोगों के नाम से दुष्ट व्यक्तियों की शक्ति क्षीण हो जाया करती है और यदि उनका नाम ले लिया जाय तो, नाम लेने वाले का कल्याण तत्काल हो जाता है। अतः गुरुजनों का स्मरण सदा करते रहना चाहिए।

अपनी पूज्या माताश्री

स्व. श्रीमती सीता देवी पाठक

(धर्मपत्नी स्व. श्री देवदत्त पाठक)

(जिनका दुःखद निधन दिनांक 5-1-2012 को हुआ)

गांव एवं डाकघर बजवाड़ा, जिला होश्यारपुर

की

पुण्य स्मृति

में

सादर समर्पित

प्रयोजक वर्गः

प्रोफैसर नरेन्द्र कुमार पाठक (पुत्र)

एवं

श्री पुनीत पाठक (पौत्र)

बी-31, न्यू गुरु तेगबहादुर नगर, जालन्धर

दमस्तेजो वर्धयति पवित्रं च दमः परम्।
जितात्मा तेजसा युक्तः पुरुषः विन्दते महत्।।

महाभा./शान्ति./१६०/९

संसार में व्यक्ति आत्मसंयम से अपना तेज बढाते हैं। आत्मसंयम सबसे श्रेष्ठ तथा पवित्र माना गया है। जो आत्मसंयमी होता है वह परमपवित्र, पापरहित तेजस्वी होने के साथ-साथ परमपद का अधिकारी भी होता है।

अपने पूज्य पिताश्री

स्व. श्री देवदत्त पाठक

(जिनका दुःखद निधन दिनांक 9-3-1997 को हुआ)

गांव एवं डाकघर बजवाड़ा, जिला होश्यारपुर

की

पुण्य स्मृति

में

सादर समर्पित

प्रयोजक वर्गः

प्रोफैसर नरेन्द्र कुमार पाठक (पुत्र)

एवं

श्री पुनीत पाठक (पौत्र)

बी-31, न्यू गुरु तेगबहादुर नगर, जालन्धर

अभिमतसिद्धिरशेषा भवति हि
पुरुषस्य पुरुषकारेण।
दैवमिति यदपि कथयसि
पुरुषगुणः सोऽप्यदृष्टाख्यः।।

पञ्च, अपरीक्षित. २८

यह ठीक है कि संसार में सभी भाग्य का सहारा लेकर आगे बढ़ते हैं; किन्तु शास्त्र कहते हैं कि पुरुष अपने पुरुषार्थ से बहुत कुछ प्राप्त करता है; जो भाग्य द्वारा किसी वस्तु की प्राप्ति मानते हैं; उनको यह भी ध्यान रखना चाहिए कि भाग्य भी पुरुषार्थ से ही बढ़ता है। दोनों का अन्योन्य सम्बन्ध है। अतः व्यक्ति को जीवन में पुरुषार्थ करते रहना चाहिए।

अपनी प्रिया धर्मपत्नी

स्व. प्रोफैसर (श्रीमती) दिनेश पाठक

(जिनका दुःखद निधन दिनांक 13. 5. 2009 को हुआ)

गाँव एवं डाकघर बजवाड़ा,
जिला होश्यारपुर
की
पुण्य स्मृति
में
समर्पित

प्रयोजकवर्ग

प्रोफैसर नरेन्द्र कुमार पाठक (पति)
एवं
श्री पुनीत पाठक (सुपुत्र)

बी–31, न्यू गुरु तेगबहादुर नगर, जालन्धर

उदितेऽनुदिते वाऽपि श्रद्दधानो जितेन्द्रियः।
वह्निः जुहोति धर्मेण श्रद्धा वै कारणं महत्।।

महाभा./शान्ति./६०/४९.

श्रद्धावान् व्यक्ति जब यज्ञ करता है तो यह नहीं देखता है कि सूर्य उदय हो गया या नहीं। वह तो अपना यज्ञ आदि शुभ कर्म करता ही रहता है। तात्पर्य है कि श्रद्धापूर्वक किए जाने वाले अच्छे कार्य के लिए समय इत्यादि का कोई बन्धन नहीं होता, उसमें तो भावना प्रधान होती है।

अपने पूज्य दादा जी और पूज्या दादी जी

स्व. श्री संसार चन्द पाठक

एवं

स्व. श्रीमती मनसा देवी पाठक

की

पुण्य स्मृति

में

सादर समर्पित

प्रयोजक वर्ग:

प्रोफैसर नरेन्द्र कुमार पाठक (पोता)

एवं

श्री पुनीत पाठक (प्रपौत्र)

बी-31, न्यू गुरु तेगबहादुर नगर, जालन्धर

अपि मन्दत्वमापन्नो नष्टो वापीष्टदर्शनात्।
प्रायेण प्राणिनां भूयो दुःखावेगोऽधिको भवेत्।।

पञ्च./मित्रसं./१७४.

यदि कोई व्यक्ति अनजानें में किसी प्रकार का अपराध करले तो वह क्षमा के योग्य होता है अर्थात् ऐसे व्यक्ति को क्षमा कर देना चाहिए। क्योंकि संसार में कोई भी व्यक्ति सर्वदा एक जैसी सोच नहीं रखता, हो सकता है वह उस समय किसी प्रकार दुःखी हो या उसकी बुद्धि की सोच कुछ और हो।

हमारे प्रिय

स्व. विजय बजाज

[17.2.1955 – 30.12.2011]

की पुण्यस्मृति में

परिवारजन

सर्वश्री शशि बजाज, ओमप्रकाश बजाज, कृष्णा बजाज

विजय विला, 166–कालिंदी कुंज, पिपलिहाना, रिंग रोड,

पो. बा. 595, इंदौर–452001 (म. प्र.)

फोन: 0731–2593443 मोबाईल : 98264–96975

कर्मणां तु प्रशस्तानामनुष्ठानं सुखावहम्।
तेषामेवाननुष्ठानं पश्चात्तापकरं मतम्।।

वि. नी./६/२३.

जीवन में अच्छे कार्य करने से हमेशा सुख मिलता है। जो व्यक्ति अपने जीवन में अच्छे कर्म नहीं करता उसको बाद में पछताना पड़ता है। अतः व्यक्ति को सर्वदा अच्छे कर्म के प्रति लगाव रखना चाहिए, यही एकमात्र सुख तथा कल्याण का मार्ग है।

स्वर्गीय श्री केवल कृष्ण शर्मा (इंग्लैण्ड)

(4-11-1930 - 6-12-2016)

की पुण्यस्मृति में सादर समर्पित

प्रयोजक वर्ग:

श्री विजय कुमार शर्मा (दामाद) श्रीमती इन्दुशर्मा (पुत्री)
श्री अश्विन शर्मा (पुत्र) श्री राजेश शर्मा (पुत्र) डॉ० अजय शर्मा (पुत्र)

29, PAXTON AVENUE, SLOUGH BERKS, SLI 25X U.K.

अर्थं महान्तमासाद्य विद्यामैश्वर्यमेव वा।
विचरत्यसमुन्नद्धो यः स पण्डित उच्यते।।

वि. नी./१/४५.

संसार में सद्भावपूर्वक कार्य करते हुए जो व्यक्ति पर्याप्त धन एकत्रित कर लेते हैं या परिश्रम द्वारा सम्पत्ति प्राप्त करने पर एवं विद्वान् होने पर भी किसी वस्तु का अभिमान न करते हुए नम्र होकर लोक-भलाई में लगे रहते हैं अर्थात् लोक-कल्याण का कार्य करते रहते हैं, वे ही व्यक्ति पूज्य तथा विद्वान् समझे जाते हैं।

हार्दिक शुभ कामनाओं के साथ :

सर्वश्री दुर्गादेवी मेमोरियल न्यास

9/1, आर. एन. मुखर्जी रोड,

कोलकाता

तेजस्विनो वितन्वन्ति प्रारम्भेषु न डम्बरम्।
स्फुरत्प्रतापाश्चरमं क्रममाणाश्चकासति।।

अभिनव-रामचरितम्/२१/१०२.

जो महापुरुष होते हैं, वे प्रारम्भ में अपनी शक्ति का प्रदर्शन नहीं करते, किन्तु समय पड़ने पर वे पीछे भी नहीं हटते हैं और समयानुसार अपने प्रभाव को प्रकट करते हुए शोभा के पात्र बनते हैं।

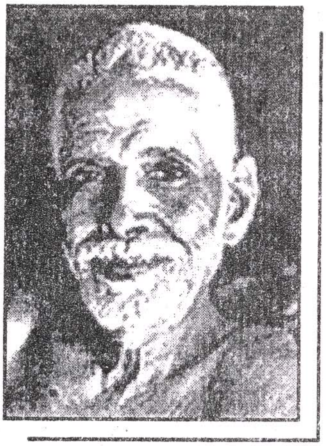

भगवान् रमन तिरुवन्नमलाई

तमिलनाडू

की

पुण्य स्मृति में सादर समर्पित

प्रयोजक:

Sh. P. C. P. Radhakrishnan

Prop., Progress Transport, 120, Rue Lal Bahadur,
Pondicherry – 605 001

अनृणा अस्मिन्ननृणाः परस्मिन्
तृतीये लोके अनृणाः स्याम।
ये देवयानाः पितृयाणाश्च लोकाः
सर्वान् पथो अनृणा आक्षियेम।।

अथर्व./६/११७/३.

भगवान् वेद का वचन है कि व्यक्ति सर्वदा जीवन में यह सोचता रहे कि हे प्रभो मैं इस जीवन में, अगले जीवन में यहाँ तक कि मृत्यु के बाद जो स्थान मुझे मिले उसमें भी मैं ऋण रहित रहूँ। जो देवयान और पितृयान लोक हैं वे भी अगर भाग्यवश प्राप्त हो जायें तो उनमें भी मैं किसी का ऋणी न रहूँ। अर्थात् मनुष्य के ऊपर के देव ऋण, पितृ ऋण और ऋषि ऋण हैं उनको यहीं चुका देना चाहिए।

अपने पूज्य पिताश्री तथा माताश्री

स्व. श्री मनोहर लाल सूद
(25-12-1926 - 23-3-2014)

स्व. श्रीमती श्यामा सूद
(निधन 27-10-2017)

की पुण्यस्मृति में सादर समर्पित

प्रयोजकवर्ग:

श्री संजीव सूद (पुत्र), श्री अनुज सूद (पुत्र)
विद्या निकेतन, जोधामल रोड, होशियारपुर।

आनृशंस्यं परो धर्मः त्रयीधर्मः सदाफलः।
मनो यम्य न शोचन्ति सन्धिः सद्भिर्न जीर्यते।।

महाभा./वन./३१३/७६

जो व्यक्ति संसार में रहते हुए निम्नलिखित बातों को मन में धारण करते हुए अपने कार्य में दत्तावधान रहता है वह कभी भी दुःखी नहीं होता। अतः उसको मन में यह रखना चाहिए कि अहिंसा ही सबसे बड़ा धर्म है। वेदानुसार कार्य करना चाहिए, मन का संयम करे, ऐसा करने से शोक नहीं होता। जीवन में सर्वदा सज्जनों से मेलमिलाप रखे क्योंकि उनका मैत्रीभाव सर्वदा लाभदायक रहता है तथा कभी भी उनकी मैत्री टूटती नहीं है।

पूज्य पिताश्री

स्व. श्री पं. जगत राम शर्मा (जगदीश शर्मा-उपनाम)
(जन्म-1944 निधन- 21-02-2019)

की

पुण्य स्मृति में सादर समर्पित

प्रयोजकः

प्रो. भगवती प्रसाद शर्मा (सुपुत्र)

एन. एस. सी. बी. एम. राजकीय महाविद्यालय,

हमीरपुर (हि. प्र.)

कुलीनैः सह संपर्कं पण्डितैः सह मित्रताम्।
ज्ञातिभिश्य समं मेलं कुर्वाणो न विनश्यति।।

चाणक्यनीति, २९२.

जीवन में अच्छे व्यक्तियों के साथ मेलजोल रखने वाला तथा विद्वान् व्यक्तियों के साथ मित्रता रखने वाला एवं अपने संबंधियों के साथ संबंध बनाये रखने वाला व्यक्ति नाश को प्राप्त नहीं होता अर्थात् मृत्यु के पश्चात् भी सभी उसका स्मरण करते रहते हैं, अतः मृत्यु होने पर भी वह अमर ही है।

Sh.Balbir Raj Sondhi

(1926-1993)

Who had lived well, laughed often and loved much,
Who had gained the respect of intelligent women, men and love of children;
Who never locked appreciation of earth's beauty or failed to express it;
Who followed his dreams and pursued excellence in each task .

He continues to inspire us ....

Family, Directors & Staff.

PKF FINANCE LTD.

Corporate Office: 'Balbir Tower' , PKF-Namdev Chowk,
G.T. Road, Jalandhar, Ph: 0181-2238611, Fax: 2236802,
Website: www.pkffinance.com

देवतासु गुरौ गोषु राजसु ब्राह्मणेषु च।
नियन्तव्यः सदा कोपो बालवृद्धातुरेषु च।।

हितोप./विग्रह./१२०.

मनुष्य के लिए चाहे कितनी ही प्रतिकूल स्थिति पैदा हो जाय पर उसको देवता, गुरुजन, गौ, शासक वर्ग, ब्राह्मण, बालक, वृद्ध तथा दु:खियों पर कदापि क्रोध नहीं करना चाहिए। तात्पर्य है कि मान्य तथा दीन-हीन व्यक्तियों पर अच्छे व्यक्ति कदापि क्रोध न करें।

IN SWEET MEMORY OF

LATE SMT. KAILASH DEVI KATNA

[Who died on 18th March, 1999]

on her 19TH DEATH ANNIVERSARY

[Which falls on 18 March, 2019]

Inserted by/ Homage Paid by

SH. DHARM PAL KATNA [HUSBAND]

[Retd. Secretary, Red Cross, Hoshiarpur]

And

CHILDREN : ASHOK, NEELAM; SAGAR-PINKI & SURINDER-KIRAN

498/1, PRAHLAD NAGAR, HOSHIARPUR- 146 001

दमेन सदृशं धर्मं नान्यं लोकेषु शुश्रुम।
दमो हि परमो लोके प्रशस्तः सर्वधर्मिणाम्।।

महाभा./शान्ति/१६०/१०

संसार में सुखी रहने का एकमात्र उपाय है आत्मसंयम। यद्यपि व्रत–नियम आदि भी सुखी जीवन के लिए उपयोगी हैं किन्तु जो व्रत या नियमों का पालन करते हैं, उनके लिए भी आत्मसंयम परमोपयोगी है।

IN SWEET MEMORY OF
RESPECTED MOTHER

SMT. SAVITRI DEVI MARWAHA

BY

SH. GANGA BISHAN MARWAHA (SON)
SH. SUBHASH CHANDER MARWAHA (SON)
SMT. SANTOSH KUMARI MARWAHA (DAUGHTER-IN-LAW)
ISH NAGAR, GPO ROAD, HOSHIARPUR

तीक्ष्णोपायप्राप्तिगम्योऽपि योऽर्थ-
स्तस्याप्यादौ संश्रयः साधुयुक्तः।
उत्तुङ्गाग्रसारभूतो वनानां
मान्याऽभ्यर्च्य च्छिद्यते पादपेन्द्रः।।

पञ्च./काको./२४९.

नीतिज्ञ व्यक्तियों को चाहिए कि भले ही कोई कार्य दण्ड आदि के द्वारा ही साध्य हो, पर नीतिवान् पुरुष को एकदम दण्डनीति का प्रयोग न करके प्रथम सामनीति को ही ग्रहण करना चाहिए। जैसे समाज में भी देखा गया है कि जब वन में बगीचे में या अन्यत्र कहीं किसी सबसे बड़े या पूज्य पेड़ को काटना हो तो है तब पहले उसका पूजन करते हैं, तदनन्तर ही उसे काटते हैं। यही नीति वास्तविक नीति है।

❋

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

श्री डी. वी. वासुदेव
६, कूल रोड,
जालन्धर।

चिरेण मित्रं बध्नीयाच्चिरेण च कृतं त्यजेत्।
चिरेण हि कृतं मित्रं चिरं धारणमर्हति।।

महाभा./शान्ति./२६६/६९

अच्छे व्यक्तियों का कर्तव्य है कि वे किसी से मित्रता बहुत सोच समझकर करें, और जब किसी से मित्रता तोड़नी हो, तब भी बहुत सोच समझकर तोड़े। जो व्यक्ति इस प्रकार धारणा रखकर किसी से मैत्री- भाव बनाता है, वह मैत्रीभाव बहुत समय तक दोनों में बना रहता है तथा दोनों के जीवन में सुखकारी एवं लाभदायक होता है।

अपने पूज्य पिताश्री

स्व. डॉ. मुल्कराज जी भसीन, होशियारपुर

(जन्म : 17. 9. 1904, निधन : 20. 10. 69)

व अपनी पूज्या माताश्री

स्व. श्रीमती सुरेन्द्रा भसीन

(जन्म : 2. 9. 1914, निधन : 2. 5. 1999)

तथा

स्व. श्री सुरेन्द्र कुमार कपूर

(निधन : 17. 12. 1976 को शिकागो में)

स्व. डॉ. परमानंद त्रेहन

(निधन : 13. 8. 08 को पंचकुला में)

उनकी धर्मपत्नी

स्व. श्रीमती चन्द्रप्रभा त्रेहन

(निधन : 4. 7. 12 को पंचकुला में)

व उनके सुपुत्र

स्व. श्री ललित त्रेहन

(जिनका निधन अत्यंत अल्पआयु में 22. 10. 07 को पंचकुला में)

की पुण्य स्मृति में

प्रयोजक वर्ग-:

श्री सत्येन्द्र भसीन (पुत्र), श्रीमती अरुणा कपूर (स्व. श्री सुरेन्द्र कुमार की धर्मपत्नी)

कनिका त्रेहन व परिवार के सभी सदस्य

6-ए आनन्दधाम, 25, प्रभात कालोनी, शान्ताक्रुज, ईस्ट, मुम्बई-55

उपदेशप्रदातॄणां नराणां हितमिच्छताम्।
परस्मिन्निह लोके च व्यसनं नोपपद्यते।।

पञ्च./ल. प्र./७५.

जो व्यक्ति अपने जीवन में दूसरों की भलाई चाहता है तथा उनके हित की बात करता है, वह इस लोक तथा परलोक में दुःखों का सामना नहीं करता।

❋

अपने पूजनीय पिताश्री

स्व. पंडित बाबूराम जी शर्मा

तथा

पूजनीया माताश्री

स्व. श्रीमती रामप्यारी जी शर्मा

की

पुण्यस्मृति में

प्रयोजक :

डॉ. एम. एल. शर्मा

1942, 46 एविन्यू, सैन फ्रान्सिस्को,

CA- 94116, यू. एस. ए.

उत्तरादुत्तरं वाक्यं वदतां सम्प्रजायते।
सुवृष्टिगुणसम्पन्नाद् बीजाद् बीजमिवापरम्।।

पञ्च./मित्रभेद/६४.

अच्छे व्यक्ति जब बोलते हैं तो उनके पहले कहे हुए वचनों से आगे की बात में भी अच्छे ही शब्द निकलते हैं, जैसे किसी वस्तु का पहला बीज अच्छा होता है तो उसके बाद में उत्पन्न होने वाले बीज भी अच्छे ही होते हैं अर्थात् व्यक्ति को सर्वदा अच्छी भाषा का ही प्रयोग करना चाहिए।

अपने पूज्य पिताश्री

स्व. श्री गंगाराम जी बीर

(जिनका निधन 20-10-1977 को हुआ)

तथा

पूज्या माताश्री

स्व. श्रीमती सुशीला देवी जी बीर

(जिनका निधन 14-5-1989 को हुआ)

की

पुण्यस्मृति में सादर समर्पित

प्रयोजक :

श्री एम. पी. बीर (पुत्र)

18-सी, विजय नगर, दिल्ली-110 009

अतीतलाभस्य सुरक्षणार्थम्,
भविष्यलाभस्य च सङ्गमार्थम्।
आपत्प्रपन्नस्य च मोक्षणार्थम्
यन्मन्त्र्यतेऽसौ परमो हि मन्त्रः ।। पञ्च./मित्रसं./१८४.

जीवन में सबसे अच्छा उपदेश अथवा परामर्श यही है कि जिसे जीवन में धारण किया जा सके, जो जीवन में प्राप्त किए जाने वाले लाभ में सहायता प्रदान कर सके तथा विपत्ति के आ जाने पर उस विपत्ति अर्थात् संकट को दूर करने में सहायक हो, यही सर्वश्रेष्ठ मन्त्र है।

❋

स्वर्गीया श्रीमती श्यामा जी सूद

(14. 7. 1952 – 25. 12. 2011)

की पुण्य स्मृति में सादर समर्पित

प्रयोजक वर्ग :

श्री नरेशचन्द्र सूद (पति), श्री शरत सूद एवं श्री मनु सूद (पुत्र)

ए. बी. सी. हैण्डलूम

कोतवाली बाजार, होशियारपुर।

॥ ऋग्वेद ॥ ओ३म् ॥ यजुर्वेद ॥

क्या खूब लिखा है किसी ने........

1. दो अक्षर की 'मौत' और तीन अक्षर के 'जीवन में' ढाई अक्षर का 'दोस्त' हमेशा बाजी मार जाता है।
2. 'बक्श देता है 'खुदा उनको, जिनकी 'किस्मत' खराब होती है। वो हरगिज नहीं बक्शे जाते है जिनकी 'नियत' खराब होती है।
3. न मेरा 'एंक' होगा, न तेरा 'लाख' होगा, न 'तारीफ' तेरी होगी, न 'मजाक' मेरा होगा।
4. गुरुर न कर 'शाह-ए-शरीर' का, मेरा भी 'खाक' होगा, तेरा भी 'खाक' होगा।
5. जिन्दगी भर 'ब्राण्डेड-ब्राण्डेड' करने वालो, याद रखना, 'कफन' का कोई ब्राण्ड नहीं होता।
6. कोई रोकर 'दिल बहलाता है' है, और कोई हँस कर 'दर्द' छुपाता है।
7. क्या करामात है 'कुदरत' की 'जिंदा इंसान' पानी में डूब जाता है और 'मुर्दा' तैर के दिखाता है।
8. 'मौत को देखा तो नहीं, पर शायद 'वो' बहुत 'खूबसूरत' होगी,
'कम्बखत' जो भी 'उस' से मिलता है,
'जीना' छोड़ देता है।
9. 'गजब' की 'एकता' देखी 'लोगों की जमाने में,' 'जिन्दों' को 'गिराने में' और 'मुर्दो' को 'उठाने में'।
10. 'जिन्दंगी' में न जाने कौनसी बात 'आखरी' होगी, न जाने कौनसी रात 'आखरी' होगी।
11. मिलते, जुलते, बातें करते रहो यार एक दूसरे से, न जानें कौनसी 'मुलाकात' 'आखरी होगी।'

WATCH (घड़ी)

1.	W:-	WATCH Your Words.	(शब्द)
2.	A:-	WATCH Your Action.	(कार्य)
3.	T:-	WATCH Your Thought.	(विचार)
4.	C:-	WATCH Your Character.	(चरित्र)
5.	H:-	WATCH Your Health.	(सेहत)

सौजन्य से :- श्री अरविन्द कुमार मेहता
आर्य भवन ट्रस्ट,
60/4, विभवनगर, आगरा-282001 (उ. प्र.), फोन : 9837362000

॥ सामवेद ॥ ॥ अथर्ववेद ॥

ओ३म्

'वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहितः' (यजु. 9.23)

हे मातृभूमि के राष्ट्रनायको!

प्रहरी पुरोहित दमदार बनो ।। 'देवातिथि'

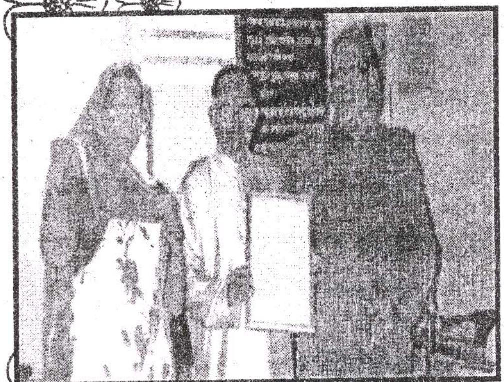

(क) वेद मन्त्राधारित हिन्दी गीतरचना एवं लेखमाला से प्रभावित महात्मा गोपाल स्वामी सरस्वती (दिवं) मातृ पितृ श्रीमती दर्शन-देव नारायण भारद्वाज को सम्मान समारोहपूर्वक आशीर्वाद देने अलीगढ़ पधारे।

(ख) जनपद आर्यसभा आजमगढ़ (उ. प्र.) प्रधान श्री गोविन्ददास अग्रवाल ने बृहद् ऋग्वेद भेंट कर कृतार्थ किया।

(ग) योग-समाधि प्रेरक पूज्य स्वामी सत्यपति से आशीर्वाद लब्ध लेखिका

श्रद्धानवत

ठा. विक्रमसिंह ट्रस्ट दिल्ली से सम्मानित

पण्डिता प्रतिभा भारद्वाज वासिष्ठ

पूर्व सदस्य वेद प्रचार विभाग दिल्ली प्रदेश एवं धर्म शिक्षिका डी.ए.वी. साहिबाबाद

सम्प्रति शिक्षिका पूर्वमाध्यामिक बेसिक शिक्षा विभाग (उ. प्र.)

पताः 'वरेण्यम्' एम.आई.जी. 45 प्लाट, अवन्तिका (प्रथम) रामघाट मार्ग, अलीगढ़ 202001 (उ.प्र.) दूरभाष- 0571-2742061

ईश्वरा भूरिदानेन यल्लभन्ते फलं किल।
दरिद्रस्तत्तु काकिण्या प्राप्नुयादिति नः श्रुतिः।।

पञ्च./मित्रसं./३३

संसार में धनिक तथा निर्धन अपनी अपनी शक्ति के अनुसार दान करके पुण्य प्राप्त करते हैं, किन्तु निर्धन व्यक्ति उसकी तुलना में बहुत कम दान करते हैं पर जब तुलना की जाती है तो निर्धन का कौड़ी भर किया हुआ दान भी फलदायक होता है।

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

प्रयोजकः

स्वामी राम स्वरूप जी

टिक्का लेहसर,
डा. यौल कैन्ट,
यौल कैम्प, (काँगड़ा, हि. प्र.)

दुरधिगमः परभागो यावत्
पुरुषेण पौरुषं न कृतम्।
जयति तुलामधिरूढो
भास्वानपि जलदपटलानि।।

पञ्च.मित्रभेद, २४

जीवन में व्यक्ति को पुरुषार्थी होना चाहिए जब तक वह पुरुषार्थ नहीं करेगा तब तक उसको दूर स्थित वस्तु की प्राप्ति संभव नहीं। सूर्य भी पूर्ण प्रकाश प्राप्त करने पर ही बादलों के समूह को जीत सकता है। तात्पर्य है कि पुरुषार्थ से ही व्यक्ति जीवन में मनचाही वस्तु को प्राप्त कर सकता है।

*

With best compliments from

Dr. K.K. Sharma

38-L, Model Town,
Hoshiarpur-146001

Empowering Women Since 1927

THE PREMIER MOST WOMEN INSTITUTION OF NORTH INDIA

HANS RAJ MAHILA MAHA VIDYALAYA, JALANDHAR

Kaushal Kendra by UGC | A Grade by UGC | College of Excellence by UGC | Flagship College

COURSES OFFERED

POST - GRADUATE

M.A.- English, Hindi, Punjabi, Pol. Science, Music Vocal, Music(I), Journalism and mass communication, M. Com., M.Sc. (Chemistry), M. Sc. (Mathematics), M.Sc. (Fashion Designing), M.Sc. (Botany), M.Sc. (Bioinformatics), M.Sc. (IT), M.Sc. (Comp. Sc.)

PG DIPLOMAS

Cosmetology, Garment Construction & Fashion Dsg., Computer Application, Business Management, Cyber Law and Information Security, Counselling

PG DIPLOMAS

Bachelor in Physical Education and Sports (BPES), B. Design (Multimedia), B.F.A. (Bachelor of Fine Arts), B.D. (Bechelor of Design), B.Sc. (Fashion Designing), B.Sc. (Biotechnology), B.Sc. (Med/Non Med. With Bioinformatics), B.Sc. (Med./Non-Med. with Biotech), B.Sc. (Non-Medical), B.Sc. (Economics), B.Sc. (Computer Science), B.Sc. (I.T.), B.C.A., B.Com., B.Com. (with Hons.), B.B.A., B.A. (with Hons.), B.A., Diploma in Cosmetology, Diploma in Computer Applications

VOCATIONAL SUBJECTS B.A./B.Sc.

Computer Application, Journalism & Mass Communication, Fashion Designing & Garment Construction, Cosmetology, Mass Communication & Video Production, Bioinformatics, Biotechnology

VOCATIONAL SUBJECTS B.A./B.Sc.

* ENGLISH
* HINDI
* PSYCHOLOGY
* COMMERCE
* ECONOMICS
* POLitical SCIENCE

Courses under KAUSHAL KENDRA Scheme by UGC

* M.Voc. (Web technology & Multimedia)
* B. Voc. (Journalism & Media)
* B. Voc. (Fashion & Technology)
* B. Voc. (Mental Health Counseling)
* B. Voc. (Cosmetology & Wellness)
* B. Voc. (Web Technology & Multimedia)
* B. Voc. (Banking and Financial Service)

Courses under Community College

* Diploma in Tourism and Hospitality
* Diploma in Organic Farming
* Diploma in Medical Lab technician
* Advance Diploma in Fashion Designing
* Diploma in Journalism and Media

Courses in Pipeline (2019-20)

* M.Sc. Physics
* M.A. Economics
* M.A. Cosmetology
* B.Com. (Financial Services)
* PGD in Financial Service (Banking & Insurance)
* Diploma in Library Science
* Women Empowerment (as an additional elective subject)

HIGHLIGHTS

- Top University Positions
- Top Positions in Sports
- Top Positions in Youth Festivals
- Placement Assistance
- Incentives to Top Players
- State of Art Infrastructure
- Smart Class Rooms
- Hi-Tech Library
- Inflibnet Facility
- Well Equipped Labs
- Sports Grounds & Latest Sports Facilities
- MOU with International Bodies
- Finishing School

H M V

BADMINTON ACADEMY

SWIMMING ACADEMY

DRONACHARYA ARCHERY ACADEMY

WRESTLING ACADEMY

CRICKET ACADEMY

INTERNATIONAL STANDARD SWIMMING POOL

HOSTELS WITH MODERN AMENITIES

LIBERAL FEE CONCESSIONS AND SCHOLARSHIPS FOR MERITORIOUS AND DESERVING STUDENTS

Adopted villages as its KARMABHOOMI Under Unnat Bharat Abhiyan of MHRD, Govt. of India

DAPO and Buddy 2 Programme of Punjab Govt. to prevent drug abuse

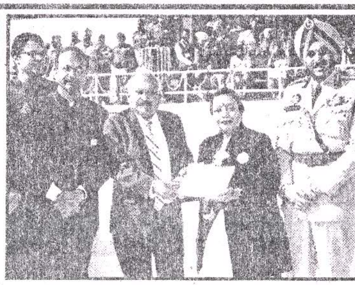

Justice (Retd.) Sh. N.K. Sud
Chairman, Local Committee

Ph. 0181-2253710, 2204198 Fax : 0181-2252436 E-mail: hmv_jal@yahoo.co.in Web: www.hrmmv.org

Download 'HMV News' Mobile app from Playstore

Prof. Dr. (Mrs.) Ajay Sareen
Principal

पुराभूत्वाद्यभूता च भूयश्चेन्न भविष्यसि।
तथापि क्षीणसंसारः किमर्थमनुशोचसि।।

योगवा. उप. प्र ५ श्लो.४०.

संसार में जो वस्तु पहले होकर पुनः वर्तमान में भी है, तथा भविष्य में भी इसी प्रकार होगी। प्रत्येक वस्तु के इस प्रकार क्षीण होने के कारण क्षणभंगुर संसार के विषय में किसी को भी दुःखी नहीं होना चाहिए।

विश्वेश्वरानन्द संस्थान के भूतपूर्व सदस्य तथा हितैषी

अपने पूज्य पिताश्री

स्व. श्री कर्मचन्द जी आहूजा

(जिनका निधन १८-५-२००१ को हुआ)

एवम्

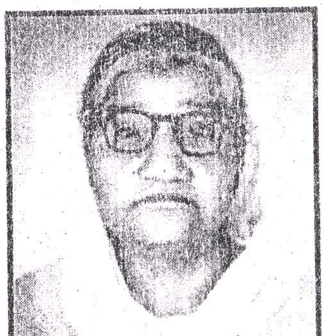

अपनी पूज्या माताश्री

स्व. श्रीमती बुद्धवन्ती जी आहूजा

(जिनका निधन १४-१-१९९७ को हुआ) की

पुण्यस्मृति

में

सादर समर्पित।

प्रयोजकवर्ग :

डॉ. कशमीर चन्द आहूजा एवं श्रीमती निर्मल आहूजा

४५-ए, नव निर्माण, जनता कालोनी, जालन्धर।

जयेदात्मानमेवादौ विजयायान्यविद्विषाम्।
अजितात्मा हि विवशो वशी कुर्यात् कथं परम्।।

सोमदेव–कथासरित्सागर/६/८/१९२

संसार में रहते हुए व्यक्ति यदि सचमुच सुखी रहना चाहता है और अपने शत्रुओं पर विजय चाहता है। वह सर्वप्रथम इन्द्रियों और मन को जीते क्योंकि जो अपने पर ही विजय प्राप्त नहीं कर सकता वह दूसरों पर कैसे विजय प्राप्त करेगा।

पूज्य दादा जी

श्री प्रभुदयाल जी अग्रवाल

(स्वर्गवास 13 अप्रैल, 1975)

एवं

पूज्य पिताजी

श्री बुधराम गुप्ता

(स्वर्गवास 9 मार्च, 2001)

की

पावन स्मृति

में

समर्पित

प्रयोजक :

प्रभुदयाल बुधराम गुप्ता चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि.)

7, न्यू सब्जी मण्डी, फगवाड़ा रोड, होशियारपुर।

आढ्यो वापि दरिद्रो वा
दुःखितः सुखितोऽपि वा।
निर्दोषश्च सदोषश्च
वयस्यः परमा गतिः।।

रामा./किष्किन्धा./८/८

मित्र चाहे धनिक हो या निर्धन हो सुखी हो या दुःखी हो चाहे वह दोषी हो किवां निर्दोष हो अन्त में विपत्ति के समय वही एकमात्र सहायक होता है। अर्थात् मित्र ही विपत्ति के समय में एकमात्र सहायक होता है, चाहे वह कैसा भी हो।

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

प्रयोजकः

सर्वश्री भुवालका जनकल्याण न्यास

'तोश हाऊस' पी-३२/३३,
इण्डिया एक्सचेंज प्लेस,
कोलकत्ता-७००००१